उत्तर प्रदेश शासन

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

वर्ष 2019-20

का

कार्यपूर्ति दिग्दर्शक आय-व्ययक

(परफार्मेन्स बजट)

प्राक्कथन

विभागीय योजनाओं के वित्तीय एवं भौतिक पक्षों में पारस्परिक सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से कार्यक्रमों/कार्यकलापों का वर्गीकरण करते हुये संस्कृति विभाग का कार्यपूर्ति दिग्दर्शक आय-व्ययक 2019-20 प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है कि आय-व्ययक में प्राविधानित धनराशि के उपयोग पर सूक्ष्म नियंत्रण रखने तथा उसके समतुल्य उपलब्धियॉ प्राप्त करने में यह सहायक होगा।

जितेन्द्र कुमार
प्रमुख सचिव
संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

भूमिका

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश की गौरवमयी धरोहर एवं परम्पराओं, पुरावशेषों एवं स्मारकों तथा लोक एवं शास्त्रीय कलाओं के विकास में अपने तीन निदेशालयों यथाः उ0प्र0 संस्कृति निदेशालय, उ0प्र0 पुरातत्व निदेशालय एवं उ0प्र0 संग्रहालय निदेशालय तथा अपनी अशासकीय संस्थाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रदेश की लोक संस्कृति की लुप्त होती विधाओं को गाँव-गाँव पहुँचाना, मंच प्रदान करना एवं इनसे संबंधित सर्वेक्षण/दस्तावेजीकरण आदि का कार्य भी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के माध्यम से विभाग द्वारा किया जा रहा है।

कला एवं संस्कृति के संवर्धन हेतु विभाग के अधीन स्वायत्तशासी संस्थाएं कार्यरत हैं जिनके माध्यम से प्रदेश में कला और संस्कृति को जनमानस से जोड़ने के लिए लोक एवं शास्त्रीय कलाओं के साथ साथ ललित कलाओं के विकास का कार्य एवं सांस्कृतिक उत्सव सम्पन्न कराये जाते हैं।

प्रदेश के विभिन्न भागों व अंचलों में बिखरी पड़ी प्राचीन संस्कृति व सम्पदा के अवशेषों को प्रकाश में लाने एवं भावी पीढ़ियों के लिये उन्हें संरक्षित करने, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व के स्थलों/स्मारकों/पुरावशेषों का सर्वेक्षण प्राचीन स्मारकों के जीर्णोद्धार एवं परिरक्षण, पुरातात्विक महत्व के स्थलों का उत्खनन, डाक्यूमेन्टेशन एवं प्रकाशन आदि का कार्य उ0प्र0राज्य पुरातत्व निदेशालय द्वारा किया जा रहा है।

उ0प्र0 सरकार के विभिन्न विभागों एवं अर्द्धशासकीय एवं व्यक्तिगत अधिकारों व स्रोतो से प्राप्त अप्रचलित अभिलेखों के स्थानान्तरण एवं समुचित संरक्षण का कार्य उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ एवं उसकी इकाइयों द्वारा आधुनिक उपकरणों के माध्यम से वैज्ञानिक ढंग से दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं प्रपत्रों का अभिलेखीकरण संबंधी कार्य सम्पादित करती है।

विभाग के अधीन प्रदेश में 14 संग्रहालय कार्यरत है जिनमें सांस्कृतिक सम्पदा पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक धरोहरों को सुरक्षित रखा जाता है। जनपद लखनऊ एवं मथुरा संग्रहालय को अपने संग्रह के लिये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति प्राप्त है। इन संग्रहालयों में प्रस्तर कलाकृतियां, मृणमूर्तिया, लघुचित्र, सिक्के, हस्तलिखित अभिलेख, पाण्डुलिपियां, धातु, चर्म, कास्ट तथा हाथी दाँत आदि की कलावस्तुएं भी उपलब्ध है।

प्रदेश के विभिन्न अंचलों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें देश के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ-साथ युवा नवोदित कलाकारों को भी अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का समुचित अवसर प्राप्त होता है।

प्रदेश के ऐसे 60 वर्ष से अधिक आयु के वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों को जिन्होनें अपना पूरा जीवन कला एवं संस्कृति की आराधना में लगा दिया परन्तु वृद्धावस्था एवं खराब स्वास्थ्य के कारण अपनी जीविका-उपार्जन में असमर्थ हो गये हैं, उन्हें रू0 2000/-प्रतिमाह की दर से मासिक पेंशन दी जा रही है जिसे बढ़ाकर रू0 4,000/- प्रतिमाह करने की कार्यवाही की जा रही है।

देश की महान विभूतियों की स्मृति को जनमानस में बनाये रखने तथा उजागर करने के उद्देश्य से विभाग द्वारा मूर्तियों का निर्माण कार्य कराया जाता है।

मा0 अटल बिहारी बाजपेयी की स्मृति में सांस्कृतिक समारोह आदि के आयोजन हेतु लखनऊ मुख्यालय में स्मृति संकुल का निर्माण कराया जा रहा है।

रामलीला की पौराणिकता, अध्यात्मिकता एवं विरासत को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने के दृष्टिगत प्रदेश के रामलीला मैदानों की चाहरदीवारी का निर्माण कराये जाने की योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

लखनऊ के कैसरबाग हैरिटेज जोन में स्थित राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह के भवन की सांस्कृतिक एवं गरिमामय विरासत को संरक्षित एवं संवर्द्धित रखने के दृष्टिगत उक्त प्रेक्षागृह का जीर्णोद्धार कराया जा रहा है।

पं0 दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में गुरू गोरक्षनाथ शोध पीठ संस्थान की स्थापना का कार्य कराय जा रहा है।

पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी की जन्मस्थली गढ़कोला उन्नाव में विशाल स्मृति भवन, पुस्तकालय एवं अन्य संरचना का निर्माण कार्य कराया जा रहा है।

———————————————

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	वित्तीय आवश्यकताएं	
	क - कार्यक्रम तथा कार्य-कलापों का वर्गीकरण	6
	ख - उद्देश्यवार वर्गीकरण	7-16
	ग - वित्तीय स्रोत	17
	घ - राजस्व प्राप्तियाँ	18
	भाग-1	
2.	संस्कृति निदेशालय	
	वित्तीय आवश्यकताओं की व्यवस्था	
	1. निदेशन एवं प्रशासन-संस्कृति निदेशालय	20-21
	2. उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ	22-28
	3. पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति योजना एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र	28
	4. भातखण्डे संगीत संस्थान, लखनऊ	28-29
	5. उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ	29-31
	6. उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ	32-35
	7. भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ	36-41
	8. अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, फैजाबाद	41-46
	9. जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ	46-55
	10. लोक एवं जन-जातीय कला तथा संस्कृति संस्थान, लखनऊ	55-56
	11. राष्ट्रीय कथक संस्थान, लखनऊ	56-60
	12. कला एवं कलाकारों का सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण एवं वृद्ध कलाकारों को सहायता योजना	60
	13. तहसील स्तर के कस्बों में प्रेक्षागृहों/खुले मंचो का निर्माण	60
	14. फिल्मों का विकास (डाक्यूमेंट्री आडियो विजुअल)	60
	15. लोक कलाकारों को वाद्ययंत्रों के क्रय हेतु आर्थिक सहायता	60
	16. कल्चरल क्लब की स्थापना	60
	17. मा0 अटल बिहारी बाजपेयी जी की स्मृति संकुल की स्थापना	60
	18. सार्वजनिक रामलीला स्थलों में चाहरदीवारी का निर्माण	60
	19. राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह का जीर्णोद्धार	61
	20. गुरू गोरक्षनाथ शोध पीठ संस्थान, गोरखपुर की स्थापना	61
	22. पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी की स्मृति भवन की स्थापना	61
	भाग - 2	
3.	उ0 प्र0 पुरातत्व निदेशालय	62-70
	भाग - 3	
4.	उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय	71-99

वित्तीय आवश्यकतायें

भाग - 1
संस्कृति निदेशालय

निदेशन एवं प्रशासन
संस्कृति निदेशालय

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश से संबंधित कार्यों का सम्पादन विभागाध्यक्ष के स्तर पर संस्कृति निदेशालय द्वारा किया जाता है। निदेशालय विभाग के अधीनस्थ शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं की देखरेख करता है और निर्देश देता है।

प्रदेश के विभिन्न अंचलों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिनमें देश के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ-साथ युवा नवोदित कलाकारेां को भी अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का समुचित अवसर प्रदान किया जाता है।

निदेशालय द्वारा महापुरूषों की मूर्तियों का निर्माण, क्षेत्रीय सांस्कृतिक कलाओं के कलारूपों के अभिलेखीकरण के साथ-साथ छोटे एवं नवोदित कलाकारों को सांस्कृतिक मंच प्रदान करने एवं स्थापित करने का प्रयास भी किया जाता है। विभिन्न सांस्कृतिक महोत्सवों में जिला स्तर एवं अन्य स्वायत्तशासी संगठनों के सहयोग से सांस्कृतिक आयोजन किये जाते हैं।

प्रदेश की लोक संस्कृति की लुप्त होती विधाओं को गॉव-गॉव तक पहुँचाना, मंच प्रदान करना एवं इनसे संबंधित सर्वेक्षण/दस्तावेजीकरण आदि का महत्वपूर्ण कार्य भी निदेशालय द्वारा किया जाता है।

ऐसे उत्कृष्ट कलाकारों/महानुभावों जिन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरव प्राप्त किया हो, को यश भारती सम्मान पुरूस्कार से सम्मानित भी किया जायेगा।

कल्याणकारी योजनाओं के अन्तर्गत प्रदेश के 60 वर्ष के वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों को जिन्होनें अपना पूरा जीवन कला एवं संस्कृति तथा साहित्य की आराधना में लगा दिया परन्तु वृद्धावस्था एवं खराब स्वास्थ्य के कारण अपनी जीविकापार्जन में असमर्थ हो गये है। उन्हें रू0 2,000/- मासिक पेंशन दी जा रही है, जिसे बढ़ाकर रू0 4000/- किये जाने का प्रस्ताव है।

विभाग द्वारा देश के महान विभूतियों की स्मृति को जनमानस में बनाये रखने तथा उजागर करने के उद्देश्य से विभाग द्वारा मूर्तियों का निर्माण कराया जाना, मा0 अटल बिहारी बाजपेयी जी की स्मृति में सांस्कृतिक समारोह आदि के आयोजन हेतु लखनऊ मुख्यालय में स्मृति संकुल का निर्माण, रामलीला की पौराणिक, आध्यात्मिक एवं विरासत को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने के दृष्टिगत प्रदेश के रामलीला मैदानों की चाहरदीवारी का निर्माण, पं0 दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वद्यिालय, गोरखुपर में गोरक्षनाथ शोध पीठ संस्थान की स्थापना का कार्य, पं0 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की जन्मस्थली गढ़कोला, उन्नाव में विशाल स्मृति भवन पुस्तकालय एवं अन्य संरचना का निर्माण कार्य कराया जा रहा है।

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार

बिन्दु-1

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार का संक्षिप्त परिचय, उद्देश्य

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार की स्थापना सन् 1949 में इलाहाबाद में सेन्ट्रल रिकार्ड आफिस के रूप में हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों, मण्डलीय एवं जिला स्तर के कार्यालयों एवं अर्द्धशासकीय संस्थाओं में उपलब्ध ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण अभिलेखों का स्थानान्तरण तथा स्थानान्तरित अभिलेखों का वर्गीकरण, पैकिंग एवं लेबलिंग तथा समुचित वैज्ञानिक संरक्षण करके सुव्यवस्थित ढंग से कार्टन बाक्स में रखना, शोध-छात्रों को सुविधा देना, शासन को आवश्यक सूचनायें उपलब्ध कराना, अभिलेखों की माइक्रोफिल्मिंग एवं फोटोकापी से सम्बन्धित सुविधायें और व्यक्तिगत अधिकारों से दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं प्रपत्रों को प्राप्त करना है। उक्त कार्यो की सम्पूर्ति हेतु समय-समय पर विभिन्न सरकारी कार्यालयों के अभिलेखों का सर्वेक्षण किया जाता है। उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, शासकीय कार्यालयों, स्वायतशासी संस्थाओं एवं व्यक्तिगत अधिकार में रखे गये अभिलेखों को सुव्यवस्थित ढंग से रखने एवं उनके वैज्ञानिक संरक्षण के लिए परामर्श भी देता है। उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार में अभिलेखों का आधुनिकतम् वैज्ञानिक विधियों से संरक्षण हेतु सभी प्रकार के आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं।

मौखिक इतिहास योजना के अन्तर्गत विशिष्ट व्यक्तियों के संस्मरण टेप कराकर संरक्षित किये जाते हैं। राज्य के विभिन्न कार्यालयों के अभिलेख कक्षों में कार्यरत कर्मचारियों को दो सप्ताह का अभिलेख प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इस अभिलेखागार द्वारा समय-समय पर संरक्षित अभिलेखों पर आधारित महत्वपूर्ण प्रकाशन भी किये जाते हैं। उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार में सन् 1803 से अभिलेख संरक्षित हैं तथा व्यक्तिगत अधिकार से प्राप्त सन् 1540 से अभिलेख संरक्षित हैं।

प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के एक महत्वपूर्ण अंग-अभिलेखीय धरोहर के प्रति जन-सामान्य एवं छात्र-छात्राओं में जागरूकता उत्पन्न करने के निमित्त समय-समय पर प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर अभिलेख प्रदर्शनियों एवं संगोष्ठियों आदि का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं हेतु अभिलेख अभिरूचि कार्यक्रम के अन्तर्गत अभिलेखागार भ्रमण एवं अभिलेखों पर आधारित प्रश्नोत्तर कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

इस अभिलेखागार के अन्तर्गत तीन क्षेत्रीय अभिलेखागार - क्रमशः इलाहाबाद, वाराणसी, आगरा में स्थित हैं तथा एक पाण्डुलिपि पुस्तकालय भी इलाहाबाद में है।

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार की गतिविधियाँ

- उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों, मण्डलीय एवं जिला स्तर के कार्यालयों एवं अर्द्धशासकीय संस्थाओं में उपलब्ध ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक दृष्टिकोण से **महत्वपूर्ण अभिलेखों का स्थानान्तरण** तथा स्थानान्तरित अभिलेखों का वर्गीकरण, पैकिंग एवं लेबलिंग तथा समुचित वैज्ञानिक संरक्षण करके सुव्यवस्थित ढंग से कार्टन बाक्स में रखना, **शोध-छात्रों को सुविधा देना,** शासन को आवश्यक सूचनायें उपलब्ध कराना, अभिलेखों की माइक्रोफिल्मिंग एवं फोटोकापी से सम्बन्धित सुविधायें और व्यक्तिगत अधिकारों से दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं प्रपत्रों को प्राप्त कराना।
- उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, शासकीय कार्यालयों, स्वायतशासी संस्थाओं एवं व्यक्तिगत अधिकार में रखे गये अभिलेखों को सुव्यवस्थित ढंग से रखने एवं उनके **वैज्ञानिक संरक्षण के लिए परामर्श** देना।
- मौखिक इतिहास योजना के अन्तर्गत **विशिष्ट व्यक्तियों के संस्मरण टेप कराकर** संरक्षित करना।
- राज्य के विभिन्न कार्यालयों के **अभिलेख कक्षों में कार्यरत कर्मचारियों को दो सप्ताह का अभिलेख प्रशिक्षण** दिया जाना।
- अभिलेखागार द्वारा समय-समय पर **संरक्षित अभिलेखों पर आधारित महत्वपूर्ण प्रकाशन** करना।
- प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के एक महत्वपूर्ण अंग-अभिलेखीय धरोहर के प्रति जन-सामान्य एवं छात्र-छात्राओं में जागरूकता उत्पन्न करने के निमित्त समय-समय पर प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर **अभिलेख प्रदर्शनियों एवं संगोष्ठियों आदि का आयोजन** करना।

बिन्दु-2

वित्तीय वर्ष 2018-19में उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार लखनऊ एवं उसकी अधीनस्थ इकाइयों के कार्यो का विस्तृत विवरण

1. अभिलेखीय प्रबन्ध

अभिलेखों की मांग :- 1212 पत्रावलियां, 47 अंग्रेजी पत्रावलियां, 06 सूची, 118 पुस्तकें, 190 वाल्यूम्स, 33 गजेटियर्स।

सत्यापन - 100 अंग्रेजी पत्रावलियां, 7137 पत्रावलियां, 159 वाल्यूम्स, 170 व्यक्तिगत अभिलेख, 227 पाण्डुलिपियॉ, 719 गजट, 213 पुस्तकें, 85 अभिलेखीय बॅक्से।

सुव्यवस्था - 676 अंग्रेजी पत्रावलियां, 2185 पत्रावलियां, 159 वाल्यूम्स, 57 पुस्तकें, 50 पाण्डुलिपियॉ, 469 गजट, 60 बस्ता रामपुर सीरीज, 340 व्यक्तिगत अभिलेख, 2185 अभिलेखीय बक्से, 542 कैटलॉग।

2. अभिलेखों का सन्दर्भ साधन :- अभिलेख कक्ष के विभिन्न विभागों की 645 पत्रावलियाँ, 751 दुलर्भ पुस्तकें, 475 अंग्रेजी पत्रावलियाँ (फैजाबाद मण्डल)।

3. शोध छात्र - देश विदेश के 122 शोध छात्रों ने अभिलेखागार में उपलब्ध अभिलेखों का अध्ययन किया।

4. खोज कार्य - इस अवधि में अभिलेखों से सम्बन्धित 283 खोज कार्य किए गये।

5. अभिलेखों का संरक्षण/मरम्मत :-

1.	पृष्ठीकरण	-	20070 शीट्स
2.	शीट्स अलग करना	-	20597 शीट्स
3.	सिलाई	-	25553 शीट्स
4.	निशान	-	5781 शीट्स
5.	कटिंग	-	8640 शीट्स
6.	हैण्ड लामीनेशन	-	453 शीट्स
7.	फुल पेस्टिंग	-	4727 शीट्स
8.	सफाई	-	30513 शीट्स
9.	साधारण मरम्मत	-	4399 शीट्स
10.	फ्यूमीगेशन	-	241 पत्रावलियॉ/वाल्यूम
11.	अमोनिया विअम्लीकरण	-	45 वॉल्यूम
12.	बाइडिंग	-	139 पुस्तकें/पाण्डुलिपियाँ/रजिस्टर
13.	गार्डिग	-	3419 पुस्तकें/शीट्स
14.	टिशू रिपेयरिंग	-	683 मैप
15.	जिल्दसाजी	-	138 शीट्स/वॉल्यूम्स/रजिस्टर
16.	नत्थीकरण	-	856 पत्रावलियाँ
17.	वाष्पीकरण	-	2267 शीट्स/पत्रावलियाँ/पुस्तकें
18.	सैंडविच	-	120 शीट्स
19.	जीरोक्स/स्कैनिंग	-	61 शीट्स

6. पुस्तकालय :-

1.	शोध छात्रो को निर्गत	-	586	पुस्तकें
2.	पुस्तकालय के शोध छात्र	-	63	छात्र

7. अभिलेख प्रदर्शनी :-

- उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ द्वारा दिनांक 14 अप्रैल, 2018 को डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती के अवसर पर कार्यालय में चित्र एवं अभिलेख प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

- क्षेत्रीय अभिलेखागार, प्रयागराज द्वारा डॉ0 भीमराव रामजी अम्बेडकर जयन्ती के अवसर पर दिनांक 14 अप्रैल, 2018 को 'डॉ0 भीमराव रामजी अम्बेडकर - एक व्यक्ति अनेक आयाम' विषयक चित्र प्रदर्शनी एवं परिचर्चा का आयोजन कार्यालय में किया गया।
- उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ के 69वें स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 10 व 11 मई, 2018 को लखनऊ स्थित कार्यालय में प्रदर्शनी, व्याख्यान व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- अगस्त क्रांति दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय अभिलेखागार, वाराणसी द्वारा दिनांक 09 अगस्त, 2018 को राजकीय महिला महाविद्यालय, डी0एल0डब्लू0, वाराणसी में अभिलेख प्रदर्शनी एवं व्याख्यान का आयोजन किया गया।
- 09 अगस्त, 2018 से 20 अगस्त, 2018 तक उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार कार्यालय परिसर में आयोजित स्वतंत्रता आन्दोलन में उत्तर प्रदेश की भूमिका विषयक अभिलेख प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- क्षेत्रीय अभिलेखागार, वाराणसी द्वारा दिनांक 02 अक्टूबर, 2018 को महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती के अवसर पर लाल बहादुर शास्त्री भवन स्मृति संग्रहालय रामनगर वाराणसी में अभिलेख प्रदर्शनी, भजन गायन एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया।
- क्षेत्रीय अभिलेखागार, वाराणसी में दिनांक 19-11-2018 से 25-11-2018 तक विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर ''हमारी धरोहर'' विषयक अभिलेख प्रदर्शनी का आयोजन गुरूधाम मन्दिर परिसर, वाराणसी में किया गया।
- उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार द्वारा दिनांक 19 दिसम्बर, 2018 को आयोजित काकोरी के शहीद विषयक अभिलेख प्रदर्शनी स्मारक, बाजनगर, हरदोई रोड, लखनऊ में लगायी गयी जिसका उद्घाटन मा0 राज्यपाल, उत्तर प्रदेश द्वारा किया गया।
- कुम्भ मेला प्रयागराज-2019 में कला ग्राम अरैल क्षेत्र में उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार द्वारा कुम्भ पर आधारित अभिलेख प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 10 जनवरी, 2019 से किया गया जिसका उद्घाटन मा0 मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश द्वारा किया गया।

8. रिप्रोग्राफी :-

- पूर्व में तैयार 156 रोल माइक्रोफिल्म की भौतिक एवं रासायनिक जाँच की गयी।

9. डिजिटाईजेशन :-

- उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ कार्यालय में चल रहे डिजिटाइजेशन कार्य के अन्तर्गत विभिन्न विभागों की पत्रावलियों के लगभग 89783 पृष्ठों की पी0डी0एफ0 तथा 9844 पत्रावलियों के मेटा डाटा की जाँच की गयी।

10. महिलाओं के लैंगिक उत्पीड़न की रोकथाम के निमित्त ''आन्तरिक शिकायत समिति'' की रिपोर्ट :- शून्य

11. अन्य कार्य :-

- उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ द्वारा उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार ''एक परिचय पुस्तिका'' का प्रकाशन भी किया गया।
- क्षेत्रीय अभिलेखागार, आगरा एवं न्यू एरा रिसर्च फाउण्डेशन, आगरा के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 19 व 20 मई, 2018 को ''अभिलेख एवं पाण्डुलिपियों के प्रारम्भिक संरक्षण'' विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ द्वारा वित्तीय वर्ष 2017-18 में कार्यालय तथा अधीनस्थ इकाईयों की महत्वपूर्ण गतिविधियों सम्बन्धी सूचना तैयार करने का कार्य किया गया।
- केन्द्रीय वित्तीय सहायता योजना के अन्तर्गत श्री राम सिंह बौद्ध (गजरौला) तथा नटरंग प्रतिष्ठान, कौशाम्बी (गाजियाबाद) के व्यक्तिगत आवेदन की जाँच की गयी तथा तत्सम्बन्धी रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी।
- 29 जून, 2018 को सूचना आयुक्त द्वारा आहूत बैठक में प्रतिभाग।

- क्षेत्रीय अभिलेखागार, आगरा द्वारा 03 से 14 जुलाई, 2018 तक लोकनृत्य एवं गायन कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- काकोरी शहीद स्थल पर अभिलेख प्रदर्शनी आयोजन के सम्बन्ध में जिलाधिकारी, लखनऊ द्वारा आहूत बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- महात्मा गांधी के 150वीं जयन्ती के आयोजन के सम्बन्ध में मा0 राज्यपाल, उत्तर प्रदेश द्वारा आहूत बैठक में दिये गये निर्देशानुसार कार्य किया गया।
- श्रीमती ऋतु द्विवेदी से दानस्वरूप पाण्डुलिपियाँ प्राप्त की गयी।
- राजकीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय, प्रयागराज में दिनांक 19-11-2018 को विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत ईश्वरशरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज के लगभग 60 विद्यार्थियों को कार्यालय के महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के बारे में जानकारी प्रदान की गयी।
- विश्व विरासत सप्ताह के अवसर पर ईश्वरशरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज के विद्यार्थियों हेतु क्षेत्रीय अभिलेखागार, प्रयागराज में शैक्षणिक भ्रमण एवं तत्पश्चात् मौलिक शोध में पाण्डुलिपियों एवं अभिलेखों के महत्व विषयक व्याख्यान का आयोजन 19-11-2018 को कार्यालय में किया गया।
- दिनांक 18-12-2018 को महामहिम राष्ट्रपेति मालदीव के आगरा आगमन पर उनके स्वागत के अवसर पर एयरपोर्ट आगरा में क्षेत्रीय अभिलेखागार, आगरा द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कराया गया।

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ तथा इसकी इकाईयों के लिए स्वीकृत पदों का विवरण निम्नानुसार है :-

<u>उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ के अन्तर्गत वर्तमान में निम्नलिखित पद स्वीकृत है</u>

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	ग्रेड वेतन/लेवल	स्वीकृत पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1	निदेशक	15600-39100	7600/12	1	1
2	उपनिदेशक	15600-39100	6600/11	1	-
3	सहायक निदेशक एवं प्रशासकीय अधिकारी	9300-34800	4800/8	1	-
4	सहायक निदेशक (संरक्षण)	9300-34800	4800/8	1	1
5	फोटो अधिकारी	9300-34800	4600/7	1	-
6	प्राविधिक सहायक (इतिहास)	9300-34800	4200/6	6	-
7	प्राविधिक सहायक (फारसी)	9300-34800	4200/6	1	1
8	प्राविधिक सहायक (संरक्षण)	9300-34800	4200/6	1	-
9	प्रकाशन सहायक	9300-34800	4200/6	1	-
10	लेखाकार	9300-34800	4200/6	2	1
11	फोटोग्राफर	9300-34800	4200/6	1	1
12	कनिष्ठ प्राविधिक सहायक	5200-20200	2800/5	3	2
13	क्षेत्रीय सहायक	5200-20200	2800/5	1	-
14	पुस्तकालयाध्यक्ष	5200-20200	2800/5	1	1
15	फोरमैन	5200-20200	2800/5	1	-
16	प्रधान सहायक	5200-20200	2800/5	1	-
17	आशुलिपिक	5200-20200	2800/5	2	2
18	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2800/5	2	-
19	उर्दू अनुवादक सह वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2800/5	1	-
20	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000/3	6	<u>4</u>
21	सहायक लेखाकार	5200-20200	2800/5	1	1
22	सूक्ष्म फिल्म प्रचालक	5200-20200	2800/5	1	-
23	वाहन चालक	5200-20200	2000/3	1	1
24	ज्येष्ठ मेण्डर	5200-20200	1900/2	1	-

25	मेण्डर	5200-20200	1800/1	12	5
26	बिजली मिस्त्री	5200-20200	1800/1	1	1
27	बण्डल लिफ्टर	5200-20200	1800/1	1	-
28	बुक लिफ्टर	5200-20200	1800/1	1	1
29	प्रयोगशाला परिचर	5200-20200	1800/1	1	1
30	कारपेन्टर	5200-20200	1800/1	1	1
31	फर्राश	5200-20200	1800/1	1	-
32	चपरासी	5200-20200	1800/1	6	-
33	माली	5200-20200	1800/1	2	1
34	चौकीदार	5200-20200	1800/1	3	-
35	चौकीदार-कम-माली	5200-20200	1800/1	1	-
36	सफाई कर्मी	5200-20200	1800/1	2	1
37	वाटरमैन-कम-साइकिल स्टैण्ड परिचर	5200-20200	1800/1	1	-
				72	27

क्षेत्रीय अभिलेखागार, आगरा

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	ग्रेड वेतन/लेवल	स्वीकृत पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1	क्षेत्रीय अभिलेख अधिकारी	9300-34800	4800/8	1	-
2	कनिष्ठ प्राविधिक सहायक	5200-20200	2800/5	1	1
3	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000/3	1	1
4	मेण्डर	5200-20200	1800/1	2	1
5	चपरासी	5200-20200	1800/1	1	1
6	चौकीदार	5200-20200	1800/1	1	-
7	सफाई कर्मी	5200-20200	1800/1	1	-
				08	04

क्षेत्रीय अभिलेखागार, प्रयागराज

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	ग्रेड वेतन	स्वीकृत पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1	क्षेत्रीय अभिलेख अधिकारी	9300-34800	4800/8	1	-
2	प्राविधिक सहायक (इतिहास)	9300-34800	4200/6	1	-
3	प्राविधिक सहायक (फारसी)	9300-34800	4200/6	1	-
4	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2800/5	1	-
5	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000/3	2	2
6	मेण्डर	5200-20200	1800/1	3	2
7	बण्डल लिफ्टर	5200-20200	1800/1	1	-
8	चपरासी	5200-20200	1800/1	1	-
9	चौकीदार	5200-20200	1800/1	1	-
10	सफाई कर्मी	5200-20200	1800/1	1	-
				13	04

क्षेत्रीय अभिलेखागार, वाराणसी

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	ग्रेड वेतन/लेवल	स्वीकृत पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1	क्षेत्रीय अभिलेख अधिकारी	9300-34800	4800/8	1	-
2	प्राविधिक सहायक (इतिहास)	9300-34800	4200/6	1	-
3	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2800/5	1	-
4	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000/3	1	1
5	मेण्डर	5200-20200	1800/1	2	1
6	चपरासी कम बण्डल लिफ्टर	5200-20200	1800/1	1	-
7	सफाई कर्मी कम चौकीदार	5200-20200	1800/1	1	1
				08	03

राजकीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय, प्रयागराज

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	ग्रेड वेतन	स्वीकृत पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1	पाण्डुलिपि अधिकारी	9300-34800	4800/8	1	-
2	प्राविधिक सहायक (संस्कृत)	9300-34800	4200/6	1	-
3	प्राविधिक सहायक (फारसी)	9300-34800	4200/6	1	-
4	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2800/5	1	-
5	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000/3	1	-
6	मेण्डर	5200-20200	1800/1	2	1
7	चपरासी	5200-20200	1800/1	1	-
8	चौकीदार	5200-20200	1800/1	1	1
9	सफाई कर्मी	5200-20200	1800/1	1	-
				10	02

बिन्दु-3

वर्ष 2019-20 में कराये जाने वाले कार्यो का विवरण

अभिलेख कक्ष निरीक्षण

उ0प्र0 अभिलेख नीति सन्-1990 के अनुपालन में विभिन्न जिलाधिकारी कार्यालयों के अभिलेख कक्षों एवं अन्य शासकीय कार्यालयों के अभिलेख कक्षों का निरीक्षण किया जाना प्रस्तावित है।

अभिलेख स्थानान्तरण

प्रशासनिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण विभिन्न शासकीय कार्यालयों के अभिलेख कक्षों से स्थायी संरक्षण के निमित्त अभिलेख स्थानान्तरित किया जाना प्रस्तावित है।

अभिलेख प्रदर्शनी

वर्ष 2019-20 में अभिलेखीय जनजागरूकता उत्पन्न करने के लिए 1857 की विरांगनाएं, प्रथम विश्व युद्ध विषयक एवं काकोरी के शहीद आदि विषयों पर अभिलेख प्रदर्शनी का आयोजन प्रस्तावित है।

अभिलेख अभिरूचि कार्यक्रम

वर्ष 2019-20 में लखनऊ जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं में प्रदेश की समृद्ध अभिलेखीय धरोहर के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने के लिए अभिलेखागार के भ्रमण एवं प्रश्नोत्तर कार्यक्रम का आयोजन प्रस्तावित है।

सेमिनार/संगोष्ठी

अभिलेखों के महत्व एंव उनके सम्यक् संरक्षण विषय पर सेमिनार एवं संगोष्ठी का आयोजन प्रस्तावित है।

अभिलेख संरक्षण

व्यक्तिगत अधिकार में संरक्षित ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ अभिलेख/पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण कर उनका सूचीकरण किया जाना प्रस्तावित है।

मौखिक इतिहास योजना

प्रदेश के जीवित स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का संस्मरण टेप कर संरक्षित किया जाना प्रस्तावित है।

डिजिटाइजेशन

कार्यालय में संरक्षित विभिन्न विभागों के अभिलेखों का डिजिटाइजेशन प्रस्तावित है।

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति योजना एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली द्वारा पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति योजना क्रियान्वयन हेतु अनुदान समाप्त कर दिया गया है। इस प्रकार मात्र प्रदेश सरकार द्वारा स्वीकृत 04 रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, 05 अवर लिपिक तथा 10 परिचर के पद शेष रह गये है। जिसमें वर्तमान समय में मात्र 01 रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, फैजाबाद, 02 अवर लिपिक तथा 04 परिचर कार्यरत है। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के संचालन हेतु 08 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के माध्यम से सांस्कृतिक गतिविधियॉं संचालित हैं।

भातखण्डे संगीत संस्थान अभिमत विश्वविद्यालय, लखनऊ।

शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं में अपनी शिक्षण पद्धति एवं विशिष्ट पाठ्यक्रम के लिए सुविख्यात इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1926 में मैरिस कालेज के नाम से हुई। बाद में इसका नाम बदलकर भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय कर दिया गया। राज्य सरकार द्वारा दिनांक 26 मार्च, 1966 को इसे अपने नियंत्रण में लिया गया और विश्वविद्यालय घोषित होने तक एक शासकीय संस्था के रूप में गतिशील रहा।

भारत सरकार द्वारा दिनांक 24 अक्टूबर, 2000 को अपनी अधिसूचना में इसे समविश्वविद्यालय घोषित कर देश में इस संस्थान को संगीत शिक्षा के क्षेत्र में अपनी तरह का पहला विश्वविद्यालय होने का गौरव प्रदान किया गया है। संगीत शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित करने वाले इस महाविद्यालय को विश्वविद्यालय का स्तर प्रदान कर दिये जाने से संगीत के विद्यार्थियों को प्रदेश में ही मान्यता प्राप्त उच्च स्तरीय शिक्षा ग्रहण करने का अवसर उपलब्ध हो गया है।

संगीत जैसी प्रदर्शन प्रधान कलाओं को सीखने के लिए कम आयु वर्ग के विद्यार्थियों की उपयुक्तता को ध्यान में रखकर महाविद्यालय में पहले संचालित पाठ्यक्रमों की कक्षाओं को संस्थान में भी यथावत बनाये रखे जाने का निर्णय लिया गया है। ताकि जो विद्यार्थी बी0पी0ए0 व एम0पी0ए0 के लिए निर्धारित अर्हताएं पूर्ण न करते हो, उन्हें भी संगीत शिक्षा प्राप्त करने मे कोई कठिनाई उत्पन्न न हो।

संस्थान द्वारा शास्त्रीय (गायन,ताल-वाद्य,स्वर-वाद्य,नृत्य) संगीत की चारो विद्याओं में बी0पी0ए0, एम0पी0ए0 एवं पी0 एच0 डी0 की डिग्री/उपाधि तथा प्रवेशिका, परिचय, प्रबुद्ध, पारंगत एवं उपशास्त्रीय गायन (ध्रपद-धमार, होरी, ठुमरी, दादरा, संवादिनी, की-बोर्ड, सुगम संगीत) में सार्टिफिकेट डिप्लोमा तथा लोकनृत्य में तीन वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है। संगीत के शिक्षण कार्य के साथ-साथ पूर्व में संचालित वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम संगीत अभिरूचि की विशिष्ट कार्यशाला एवं संगीत सध्या का आयोजन कर रहा है।

संस्थान द्वारा सत्र 2001-02 से विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों के साथ-साथ महाविद्यालय के सार्टिफिकेट/डिप्लोमा की वार्षिक परीक्षाओं का स्वतन्त्र रूप से संचालन किया गया जा रहा है।

शिक्षण सत्र 2018-19 में संस्थान में प्रवेशिका से पारंगत कक्षा तक सार्टिफिकेट/डिप्लोमा पाठ्यक्रम में कुल 1671 तथा विश्वविद्यालय अनुभाग में कुल 249 अर्थात् शास्त्रीय संगीत की चारों विद्याओं (गायन, ताल-वाद्य, स्वर-वाद्य, नृत्य एवं संगीत शास्त्र) में कुल 1920 विद्यार्थी अध्ययनरत है।

भातखण्डे संगीत संस्थान समविश्वविद्यालय, लखनऊ
2019-20 के सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यक्रम का नाम	प्रस्तुति का माह	प्रस्तुति स्थल
1. स्थापना दिवस	18 अप्रैल, 2019	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
2. कार्यशाला(गायन,वादन व नृत्य)	16 मई, 2019 से 15 जून, 2019 तक	आचार्य रातनजनक सभागार
3. जन्माष्टमी	अगस्त, 2019	आचार्य रातनजनकर सभागार
4. भातखण्डे जयंन्ती समारोह, 2017	सितम्बर, 2019 तीन दिवसीय कार्यक्रम	श्री संत गाडगे, प्रेक्षागृह
5. विश्व संगीत दिवस	अक्टूबर, 2019	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
6. कार्यशाला	01.12.2019 से 20.12.2019 तक	आचार्य रातनजनक सभागार
8. सप्तम् दीक्षांत समारोह-2017	अक्टूबर, 2019	श्री संत गाडगे, प्रेक्षागृह
9. तीन दिवसीय सेमिनार	जनवरी, 2020	श्री संत गाडगे, प्रेक्षागृह
9. सरस्वती पूजा	फरवरी,2020	आचार्य रातनजनक सभागार
10. संगीत प्रतियोगिता	फरवरी,2020	आचार्य रातनजनक सभागार
11. होलिकोत्सव	मार्च, 2020	श्री संत गाडगे, प्रेक्षागृह

उक्त कार्यक्रमो का आयोजन वित्तीय वर्ष 2019-20 के लिये प्रस्तावित ळें

राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0

राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0 की स्थापना 08 फरवरी, 1962 को उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग की पूर्णतः वित्त पोषित स्वायत्तशासी इकाई के रूप में हुई थी। अकादमी कला एवं कलाकारों की प्रोन्नति एवं प्रोत्साहन के ध्येय की ओर निरन्तर अग्रसर होती हुई कला जगत में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। अकादमी छत्तरमंजिल और हाईकोर्ट (लखनऊ बेंच) के मध्य ललित कला अकादमी मार्ग पर लाल बारादरी भवन में स्थित है। यह भवन उ0प्र0 राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित एक पुरातात्विक इमारत है। इसका निर्माण 1778-1814 के बीच हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात सर्वप्रथम इस भवन में राज्य संग्रहालय स्थापित हुआ। राज्य संग्रहालय का अपने भवन में स्थानान्तरण होने के पश्चात वर्ष 1962 में राज्य ललित कला अकादमी की स्थापना हुई।

अकादमी द्वारा दृश्य कला से सम्बन्धित विभिन्न प्रदेश/अखिल भारतीय/अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों, कला व्याख्यान मालाओं, कला शिविरों तथा युवा कलाकारों के लिये छात्रवृत्ति एवं आर्थिक सहायता के माध्यम से गतिविधियों का आयोजन कर रही है तथा युवाओं का उत्साहवर्धन पिछले 56 वर्षों से अपने सीमित संसाधनों से कर रही है।

वित्तीय वर्ष 2018-19 में माहवार आयोजित गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण

अप्रैल-2018

1. बाबा साहेब डॉ0 भीमराव आम्बेडकर जयन्ती के अवसर पर अकादमी के संग्रह से चयनित कृतियों की कला प्रदर्शनी, दिनांक 14 से 16 अप्रैल, 2018 तक अकादमी परिसर में।
2. क्षेत्रीय कला प्रदर्शनी 2017-18 के अंतर्गत अलीगढ़ क्षेत्र की प्रदर्शनी का आयोजन फाइन आर्ट डिपार्टमेन्ट, ए.एम.यू., अलीगढ़ में दिनांक 23 से 26 अप्रैल, 2018 तक।
3. क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, वाराणसी एवं अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता, पुरस्कार वितरण एवं प्रदर्शनी दिनांक 28.4.2018 को वाराणसी में तथा दिनांक 30.4.2018 को सारनाथ में।

मई/जून, 2018

1. स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत अकादमी परिसर सहित प्रदेश के 27 जिलों में दिनांक 15 मई से 30 जून, 2018 तक ग्रीष्मकालीन कार्यशालाओं का दो आयु वर्गों में आयोजन तथा उसमें सृजित कृतियों की प्रदर्शनी।

जुलाई, 2018

1. स्ववित्तपोषित योजना के अंतर्गत अकादमी द्वारा संचालित रचनात्मक केन्द्र के षट्मासिक सत्र (जुलाई से दिसम्बर-2018) का शुभारम्भ दिनांक 01.07.2018 को।

अगस्त, 2017

1. क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, वाराणसी एवं अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में जश्न-ए-आजादी शीर्षक से चित्रकला प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 14 व 15 अगस्त, 2018 को वाराणसी में।
2. कुम्भ पर आधारित अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी के लिए देश के कलाकारों से कलाकृतियों के छायाचित्रों का आमंत्रण 20 अगस्त से 30 सितम्बर, 2018 तक।
3. अखिल भारतीय कुम्भ (फोटोग्राफी) प्रदर्शनी के लिए देश के छायाकारों से प्रविष्टियां आमंत्रण 20 अगस्त से 30 सितम्बर, 2018 तक।
4. 15वीं अखिल भारतीय छायाचित्र कला प्रदर्शनी हेतु देश के छायाकारों से प्रविष्टियों का आमंत्रण 20 अगस्त से 30 सितम्बर, 2018 तक।
5. रचनात्मक कला केन्द्र के षट्मासिक सत्र (जनवरी से जून-2018) में प्रशिक्षार्थियों द्वारा सृजित कृतियों की प्रदर्शनी कला स्रोत वीथिका, अलीगंज, लखनऊ में दिनांक 30 व 31 अगस्त, 2018 तक।

सितम्बर, 2018

1. शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रदेश के 8 स्थानों गोरखपुर, वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर, अलीगढ़, बरेली, मेरठ व लखनऊ में 'कला आचार्य' शीर्षक से लगभग 450 कला गुरूओं की कृतियों की प्रदर्शनियों का आयोजन।
2. अकादमी के स्थायी कला संग्रह से चयनित कृतियों की संग्रह कला प्रदर्शनी का आयोजन रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट में दि0 18 से 20 सितम्बर, 2018 तक
3. व्याख्यान, सम्मान एवं कला प्रदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत ललित कला विभाग, इस्माइल नेशनल कालेज, मेरठ में वरिष्ठ चित्रकार डॉ0 शिवेन्द्र सिंह-आगरा का सम्मान, व्याख्यान एवं कला प्रदर्शन दिनांक 11.9. 2018 को।
4. फाइन आर्ट डिपार्टमेन्ट, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर एवं अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय चित्रकार शिविर कम कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर, कानपुर में दिनांक 23 से 29 सितम्बर, 2018 तक।

अक्टूबर, 2018

1. महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती के स्मरणोत्सव के उपलक्ष्य में अवध शिल्पग्राम, लखनऊ में दिनांक 02 अक्टूबर, 2018 को प्रदेश से आमंत्रित दिव्यांग कलाकारों का कला प्रदर्शन, चित्रकला प्रतियोगिता एवं कला प्रदर्शनी तथा गाँधी जी पर सृजित हस्तशिल्प चित्र प्रदर्शनी।
2. व्याख्यान, सम्मान एवं कला प्रदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत ललित कला विभाग, आगरा कालेज, आगरा में वरिष्ठ चित्रकार प्रो0 शिवनाथ राम-वाराणसी का सम्मान, व्याख्यान एवं कला प्रदर्शन दिनांक 5.10.2018 को।
3. 'राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती के स्मरणोत्सव के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व' शीर्षक से प्रदेश के 59 जिलों में स्पाट चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन, पुरस्कार वितरण व प्रदर्शनी की गयी जिसमें लगभग 3500 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
4. अयोध्या शोध संस्थान-फैजाबाद एवं अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में भारत-श्रीलंका रामायण चित्रकला रचनाकार शिविर एवं कार्यशाला का शुभारम्भ अकादमी परिसर, लखनऊ में प्रमुख सचिव, उ0प्र0 शासन, संस्कृति विभाग के कर कमलों से दिनांक 31.10.2018 को प्रातः 11:00 बजे किया गया। उक्त शिविर एवं कार्यशाला दिनांक 04 नवम्बर, 2018 तक नित्य प्रातः 10:30 बजे से सायं 05:00 बजे तक संचालित हुई जिसमें भारत के 5 तथा श्रीलंका के 5 कलाकार शामिल हुए। शिविर/कार्यशाला का समापन महापौर, लखनऊ के द्वारा किया गया।

नवम्बर, 2018

1. अयोध्या शोध संस्थान-फैजाबाद एवं अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में भारत-श्रीलंका रामायण चित्रकला रचनाकार शिविर एवं कार्यशाला में सृजित कलाकृतियों की प्रदर्शनी दिनांक 06 नवम्बर, 2018 को रामकथा संग्रहालय, अयोध्या में।
2. डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित डॉ0 राधाकमल मुखर्जी स्मृति कला व्याख्यानमाला के अंतर्गत प्रो0 एस. पी. वर्मा-अलीगढ़ एवं डॉ0 शशिबाला राठी-बरेली का व्याख्यान दिनांक 17 नवम्बर-2018 को एवं डॉ0 राधाकमल मुखर्जी द्वारा अकादमी संग्रह के लिए प्रदान की गई कृतियों से चयनित कृतियों की प्रदर्शनी दिनांक 17 से 19 नवम्बर, 2018 तक विश्वविद्यालय परिसर में।
3. कुम्भ मेला, प्रयागराज-2019 के अवसर पर विश्वविद्यालय स्तर पर 'कला के रंग कुम्भ के संग' सजीव चित्रण कला प्रतियोगिता का आयोजन मेरठ, कानपुर, झांसी, बरेली, गोरखपुर, प्रयागराज, लखनऊ, अयोध्या, अलीगढ़, आगरा एवं वाराणसी में 15 से 25 नवम्बर, 2018 के मध्य किया गया। जिसमें लगभग 600 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

दिसम्बर, 2018

1. कुम्भ मेला, प्रयागराज-2019 के अंतर्गत अकादमी एवं डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में कुम्भ पर आधरित 45 युवा चित्रकारों के शिविर का आयोजन दिनांक 01 से 03 दिसम्बर, 2018 तक विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। जिसका शुभारम्भ कलाविद् पद्मश्री मा0 श्री योगेन्द्र जी के कर कमलों से किया गया। शिविर का समापन मा0 वित्त मंत्री उ0प्र0 सरकार के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।
2. भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की 95वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित प्रदेश स्तरीय एकदिवसीय चित्रकार शिविर का आयोजन 24 दिसम्बर, 2018 को अकादमी परिसर, लाल बारादरी भवन, ललित कला अकादमी मार्ग, लखनऊ में।
3. भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की 95वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में अटलजी कविताओं एवं व्यक्तित्व कृतित्व पर आधारित प्रदेश स्तरीय एकदिवसीय चित्रकार शिविर में सृजित कृतियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष एवं माननीय श्री राज्यपाल, उ0प्र0 के कर-कमलों से 25 दिसम्बर, 2018 को सायं 7.00 बजे अटल बिहारी वाजपेयी सांइटिफिक कन्वेन्शन सेन्टर, लखनऊ में 24 दिसम्बर, 2018 को। शिविर में सृजित कृतियों की प्रदर्शनी 26 दिसम्बर, 2018 को पूर्वाह्न 11 बजे से सायं तक अटल बिहारी वाजपेयी सांइटिफिक कन्वेन्शन सेन्टर, लखनऊ में।

वित्तीय वर्ष 2018-19 में प्रस्तावित गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण

जनवरी, 2019

1. स्ववित्तपोषित योजना के अंतर्गत अकादमी द्वारा संचालित रचनात्मक केन्द्र के षट्मासिक सत्र (जनवरी से जून-2019) का शुभारम्भ दिनांक 01.01.2019 को।
2. कुम्भ मेला, प्रयागराज-2019 के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी एवं अखिल भारतीय फोटोग्राफी प्रदर्शनी का आयोजन सेक्टर-19, कुम्भ मेला परिसर, अरैल क्षेत्र में 10 जनवरी से 15 फरवरी, 2019 तक।

फरवरी, 2019

1. कुम्भ मेला, प्रयागराज-2019 के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय युवा चित्रकार शिविर एवं विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता से चयनित कृतियों की प्रदर्शनी कुम्भ परिसर में दिनांक 16 फरवरी से 04 मार्च, 2019 तक।
2. 33वीं राज्य स्तरीय वार्षिक कला प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं पुरस्कार वितरण।
3. कुम्भ मेला, प्रयागराज-2019 के उपलक्ष्य में जलरंग माध्यम में चित्रकला कार्यशाला 12 से 16 फरवरी, 2019 तक।
4. राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता कुम्भ मेला, प्रयागराज-2019 के उपलक्ष्य में मेला परिसर में दिनांक 17 फरवरी, 2019 को।
5. मूर्तिकला (क्ले माडलिंग) कार्यशाला कुम्भ मेला, प्रयागराज-2019 के उपलक्ष्य में मेला परिसर में दिनांक 26 फरवरी से 02 मार्च, 2019 तक।

उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी, गोमतीनगर, लखनऊ

अकादमी का परिचयः

अकादमी की स्थापना 13 नवम्बर, 1963 को हुई थी। पिछले 54 वर्षों से अकादमी संगीत, नृत्य, नाटक, लोकसंगीत, लोकनाट्य की परम्पराओं के प्रचार-प्रसार, संवर्द्धन एवं परिरक्षण का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। उत्तर प्रदेश एक विशाल सांस्कृतिक क्षेत्र है, जिसकी विविध समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के परिरक्षण एवं संवर्द्धन की दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना है। अकादमी के अत्यधिक सीमित संसाधन हैं, जबकि इतने वृहद् प्रदेश के लिये अधिक आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता है, जिससे प्रदेश की सांस्कृतिक गतिविधियों को और अधिक गतिशील व क्रियाशील बनाया जा सके।

प्रदेश में संगीत, नृत्य, नाटक, लोक विधाओं सम्बन्धी परम्पराओं के विषय में अधिक जागरूकता एवं जानकारी, नवोदित प्रतिभाशाली युवा कलाकारों को प्रोत्साहन, नवीन प्रतिभाओं का विकास एवं उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण, सांस्कृतिक कार्यकलापों का विकेन्द्रीकरण, प्रदेश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत् स्वैच्छिक संस्थानों से सम्पर्क एवं उनके कार्यकलापों में सहायता, लुप्त हो रही विधाओं के परिरक्षण एवं प्रदर्शन की योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर सम्पन्न कराना साथ ही सर्वेक्षण एवं सर्वेक्षण के आधार पर कार्यक्रम तैयार कर उन्हें जनता के समक्ष लाना, अकादमी की गतिविधियों में शामिल है।

वित्तीय वर्ष 2018-2019 में अकादमी के कार्यकलापों का विवरण निम्नवत है :-

1. अकादमी सम्मान- प्रदेश में संगीत, नृत्य एवं नाटक के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु विद्वान एवं समर्पित कलाकारों को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा वर्ष 1970 से सम्मानित करने की योजना प्रारम्भ की गयी थी जिसके अन्तर्गत अकादमी द्वारा चयनित विद्वानों को अकादमी सम्मान (1970 से), सफदर हाशमी पुरस्कार (1991 से), बी.एम.शाह पुरस्कार (1998 से) तथा अकादमी के सर्वोच्च सम्मान 'रत्न सदस्यता' (1970 से) अलंकृत किया जाता है। वर्ष 2009 से अद्यतन पुरस्कारों की चयन प्रक्रिया चल रही है।

2. प्रदेश के नवोदित, बाल, किशोर एवं युवा कलाकारों को प्रोत्साहन- अकादमी द्वारा वर्ष 1975 से प्रतिवर्ष संगीत प्रतियोगिता का आयोजन दो चरणों में किया जाता है। प्रथम चरण में सम्भागीय स्तर पर तथा दूसरे चरण में इन केन्द्रों से प्रथम स्थान प्राप्त कलाकारों को प्रादेशिक प्रतियोगिता में आमंत्रित किया जाता है। इस प्रतियोगिता को आयोजित करने का उद्देश्य प्रदेश में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उभरती नवोदित प्रतिभाओं की खोजकर उन्हें व्यावसायिक कला के क्षेत्र में पदार्पण करने हेतु प्रोत्साहित करना है। विगत वर्षों में इस प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता कलाकारों ने प्रदेश, देश तथा विदेश में अपनी कला का प्रदर्शन कर ख्याति अर्जित की है और निरंतर अपनी कला के माध्यम से प्रदेश को गौरवान्वित कर रहे हैं।

वित्तीय वर्ष 2018-2019 में सम्भागीय संगीत प्रतियोगिता का आयोजन प्रदेश के 18 मण्डलों क्रमशः **गोरखपुर, बस्ती, मीरजापुर, झांसी, मेरठ, कानपुर, चित्रकूट, फैजाबाद, मुरादाबाद, इलाहाबाद, वाराणसी, आजमगढ़, सहारनपुर, बरेली, गोण्डा, आगरा, अलीगढ़ और लखनऊ** में किया गया। प्रादेशिक शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता दिनांक 28 से 31 जनवरी, 2019 तक लखनऊ में करायी गई तथा दिनांक 1 फरवरी, 2019 को सन्त गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, अकादमी परिसर, लखनऊ में विजेता कलाकारों की प्रस्तुति एवं पुरस्कार वितरण समारोह 'उल्लास उत्सव' का आयोजन किया गया।

3. प्रकाशन- अकादमी द्वारा संगीत एवं रंगमंच पर आधारित त्रैमासिक पत्रिका 'छायानट' तथा संगीत से जुड़ी पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। समय-समय पर संगीत, नृत्य एव नाट्य से संबंधित विशेषांकों का भी प्रकाशन कराया जाता रहा है। वित्तीय वर्ष 2018-2019 में ब्रज की रास परम्परा पर केन्द्रित 'रास विशेषांक' सहित अद्यतन छायानट के 155वें अंक का प्रकाशन किया जा चुका है।

4. (क) अभिलेखागार- अकादमी अभिलेखागार के अन्तर्गत इस वर्ष अकादमी द्वारा आयोजित समस्त संगीत, नृत्य एवं नाट्य-कार्यक्रमों की आडियो-वीडियो रिकार्डिंग एवं फोटोग्राफ संग्रहित किये गये है। अब तक अकादमी द्वारा आडियो कैसेट 1973, वीडियो कैसेट 1177, डी0वी0डी0 50, सी0डी0 125 एवं स्पूल टेप्स 1008 तथा लगभग कुल 5040 घंटे की रिकॉर्डिंग संग्रहित हैं।

(ख) सर्वेक्षण- अकादमी की एक महत्वपूर्ण योजना सर्वेक्षण जिसके अन्तर्गत राज्य की लुप्तप्राय विधाओं यथा-शास्त्रीय, उपशास्त्रीय एवं लोक गीत, संगीत एवं वादन विधाओं का सर्वेक्षण किया जाता है।

(ग) स्टूडियो रिकार्डिंग- अकादमी की एक महत्वपूर्ण योजना स्टूडियो रिकार्डिग भी है जिसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश की लुप्त प्रायः विधाओं यथा शास्त्रीय, उपशास्त्रीय एव लोक गीत, संगीत एवं वादन विधाओं के कलाकारों की स्टूडियो रिकार्डिंग शोधार्थियों एवं भविष्य के सन्दर्भ हेतु की जाती है।

5. पुस्तकालय- अकादमी पुस्तकालय संकलन की दृष्टि एवं सेवा की प्रकृति के अनुसार विशिष्ट पुस्तकालय की श्रेणी में आता है। संकलन की लगभग 80 प्रतिशत पुस्तकें संगीत व नाटक विषय से सम्बन्धित हैं। अकादमी पुस्तकालय मौलिक स्थापना मूल्यों के प्रति निरन्तरता का प्रयास करता है। देश-विदेश के वे सभी शोधार्थी जो संगीत तथा नाटक विषयों में शोध कार्य कर रहे हैं, यहां उपयोगी सामग्री प्राप्त करते हैं। किसी भी प्रकार की सर्वेक्षण पूर्व योजना के लिये अकादमी ग्रंथागार में विविध संदर्भों से युक्त साहित्य का विशाल भण्डार है। अकादमी पुस्तकालय की सेवाओं का लाभ अकादमी तथा कथक केन्द्र परिवार के अतिरिक्त शोध छात्र-छात्रायें, कलाकार एवं कलामित्र तथा पुस्तकालय-सदस्य निरन्तर प्राप्त कर रहे हैं। वर्तमान में अकादमी में लगभग 15,000 से अधिक पुस्तकें एवं पत्रिकाएं संग्रहित की गयी हैं।

6. नाट्य समारोह- अपने नियमित कार्यक्रमों के अन्तर्गत अकादमी द्वारा प्रत्येक वर्ष सम्भागीय नाट्य समारोह एवं राज्य नाट्य समारोह का आयोजन प्रदेश के विभिन्न जनपदों मे सम्पन्न किया जाता है।

7. लोक नाट्य समारोह- अपने नियमित कार्यक्रमों के अन्तर्गत अकादमी द्वारा प्रत्येक वर्ष लोक नाट्य समारोह का आयोजन प्रदेश के विभिन्न जनपदों में किया जाता है। वर्ष 2018-2019 में सम्पन्न लोक नाट्य समारोह का विवरण का विवरण निम्नवत है :-

दिनांक	कार्यक्रम/कलाकार	स्थान
28 जून, 2018	रासलीला, महावीर सिंह एण्ड पार्टी, मथुरा आल्हा, धर्मवीर सिंह एवं साथी, महोबा	रसखान प्रेक्षागृह, हरदोई
29 जून, 2018	रामलीला, मनीष तिवारी एवं साथी, अयोध्या कठपुतली, प्रदीप नाथ त्रिपाठी एवं साथी, लखनऊ	रसखान प्रेक्षागृह, हरदोई
30 जून, 2018	नौटंकी, हरिश्चन्द्र एण्ड पार्टी, कानपुर	रसखान प्रेक्षागृह, हरदोई

8. अंशदान योजना- नवीन सांस्कृतिक एवं नाट्य संस्थाओं को प्रोत्साहन स्वरुप आर्थिक सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से बनी इस योजना के अन्तर्गत संस्थाओं को प्रदर्शन हेतु अंशदान के रूप में प्रेक्षागृह आरक्षण एवं दैनिक समाचार पत्र में विज्ञापन द्वारा अकादमी से निश्चित धनराशि के रूप में सहयोग प्रदान किया जाता है।

9. रसमंच योजना- सांस्कृतिक एवं नाट्य संस्थाओं को सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से इस योजना के अन्तर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रदर्शन के लिए एक दिवस निःशुल्क प्रेक्षागृह उपलब्ध कराया जाता है।

10. अवध संध्या- अकादमी द्वारा प्रत्येक माह के चौथे शुक्रवार को अवध संध्या का आयोजन किया जाता है। इसके अन्तर्गत शास्त्रीय, उप-शास्त्रीय, सुगम संगीत एवं नृत्य तथा नाटक आदि कार्यक्रमों होते हैं।

वित्तीय वर्ष 2018-2019 में अद्यतन आयोजित 'अवध संध्या' कार्यक्रम का विवरण निम्नवत है :-

दिनांक	कार्यक्रम/कलाकार	स्थान
25 मई, 2018	रंग-ए-सूफी, श्री राहुल श्रीवास्तव, दीपशिखा, पुणे	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ
22 जून 2018	नाट्य प्रस्तुति : मैकबेथ आलेख-शेक्सपियर, निर्देशन-श्री धरमश्री सिंह	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, लखनऊ
27 जुलाई 2018	बरखा आई रे.. कजरी गायन-अनीता श्रीवास्तव, मिर्जापुर सितार वादन-डा. हंस प्रभाकर रविदास	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, लखनऊ
28 सितम्बर, 2018	नाट्य प्रस्तुति : मेरा वजूद निर्देशन-श्री अतुल सागर नाथ	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ
25 नवम्बर, 2018	स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधारित संगीत रुपक 'प्रकाश पुंज' की प्रस्तुति निर्देशन-देवेश चतुर्वेदी एवं गोपाल सिन्हा	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ
25 जनवरी, 2018	संगीत संध्या ताल तरंग-शेख इब्राहिम, गायन-आस्था गोस्वामी, बांसुरी वादन-चेतन जोशी	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ
25 जनवरी, 2018	अवधी-भोजपुरी गीतों की लोक धारा, सुश्री ऋचा जोशी व सुश्री वन्दना शुक्ला	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ

11. कथक केन्द्र- लखनऊ घराने की कथक परम्परा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से वर्ष 1972 में लखनऊ घराने के सुविख्यात कथकाचार्य स्व. पं. लच्छू महाराज (पं. वैजनाथ मिश्र) के निर्देशन में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के अन्तर्गत कथक केन्द्र की स्थापना शासन द्वारा की गयी। कथक केन्द्र द्वारा नियमित नौ वर्षीय पाठयक्रम के अर्न्तगत छात्र-छात्राओं को कथक नृत्य का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। विशेष रूप से निर्मित इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रारम्भिक पाठ्यक्रम, जूनियर डिप्लोमा, सीनियर डिप्लोमा तथा पोस्ट डिप्लोमा की कक्षाएं संचालित की जाती हैं। कथक केन्द्र द्वारा कथक नृत्य प्रशिक्षण के साथ-साथ कथक केन्द्र के सीनियर छात्र-छात्राओं को सम्मिलित करते हुये नृत्य-नाटिकाओं का निर्माण भी किया जाता है, जिनका प्रस्तुतिकरण नगर में तथा नगर के बाहर समय-समय पर अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी आयोजनों में किया जाता है। पं. लच्छू महाराज जी की जयन्ती के अवसर पर प्रत्येक वर्ष 31 अगस्त एवं 01 सितम्बर को **'नमन'** कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। कथक केन्द्र द्वारा किये गये कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत् है:-

दिनांक	कार्यक्रम	कलाकार	स्थान
01 जून, से 29 जून, 2018	ग्रीष्मकालीन कथक कार्यशाला	सम्मिलित होने वाले प्रशिक्षणार्थी	अकादमी परिसर, गोमतीनगर, लखनऊ
30 जून, 2018	कथक पल्लव	कथक केन्द्र के विद्यार्थी	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, लखनऊ
31 अगस्त एवं 01 सितम्बर, 2018	**'नमन'** पं0 लच्छू महाराज जयन्ती समारोह	कथक केन्द्र के विद्यार्थी व अन्य ख्यातिलब्ध कलाकार	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, लखनऊ

12. ध्रुवपद समारोह – विलुप्त होती शास्त्रीय ध्रुवपद गायन एवं वादन परम्परा को जनमानस से परिचित कराने एवं कलाकारों को प्रोत्साहित एवं मंच प्रदान करने के उद्देश्य से अकादमी द्वारा प्रत्येक वर्ष मृदंगाचार्य स्वामी भगवान दास की स्मृति में ध्रुवपद समारोह का आयोजन प्रदेश के विभिन्न जनपदों में किया जाता है।

13. नवांकुर संगीत समारोह – अकादमी की संगीत प्रतियोगिता के विजेता कलाकारों कों मंच प्रदान करने तथा उनकी कला प्रदर्शन के साथ-साथ उनको प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नवांकुर संगीत समारोह को प्रदेश के विभिन्न शहरों में आयोजित किया जाता रहा है।

वर्ष 2018-2019 में आयोजित नवांकुर संगीत समारोह का विवरण निम्नवत है :-

तिथि	प्रस्तुति/कलाकार	स्थान
24 जुलाई, 2018	• स्वास्तिक भारद्वाज-गायन • कन्हैया पाण्डेय-गायन • सौरभ उपाध्याय-पखावज वादन • अदिति भारद्वाज-कथक	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, लखनऊ
15 नवम्बर, 2018	• रंजना घोष-गायन • अमनजीत जैन-वायलिन वादन • अशेष नारायण-तबला वादन • ऋतिका दास-कथक	सनबीम स्कूल, लहरतारा, वाराणसी

14. अन्य कार्यक्रम- अकादमी द्वारा वित्तीय वर्ष 2018-2019 में उपरोक्त के अतिरिक्त निम्नलिखित अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :-

दिनांक	कार्यक्रम	कलाकार	स्थान
14 मई, 2018 से 02 जुलाई, 2018	प्रस्तुतिपरक नाट्य कार्यशाला	प्रशिक्षणार्थी	अकादमी परिसर, लखनऊ
03 जुलाई 2018	कार्यशाला प्रस्तुति 'बाबा का ख्वाब'	निर्देशक-शैलेन्द्र तिवारी	संत गाडगे जी महा. प्रेक्षागृह, लखनऊ
जुलाई एवं अगस्त, 2018	जब्तशुदा गीतों की गायन कार्यशाला	निर्देशक-कमलाकान्त	अकादमी परिसर, लखनऊ
14 अगस्त, 2018	कार्यशाला प्रस्तुति 'ऐ मेरे वतन के लोगों'	प्रशिक्षणार्थी	संत गाडगे जी महा. प्रेक्षागृह, लखनऊ
30 अक्टूबर, 2017	**यादें** (बेगम अख्तर स्मृति समारोह)	गजल एवं ठुमरी गायन पीउ मुखर्जी, कोलकाता एवं अमजद अली खान, दिल्ली	संत गाडगे जी महा. प्रेक्षागृह, लखनऊ
13 नवम्बर, 2017	**धरोहर** (अकादमी स्थापना दिवस)	स्टेम डांस कमपनी, बंगलौर की कथक संरचनायें 'संजोग'	संत गाडगे जी महा. प्रेक्षागृह, लखनऊ
28 दिसम्बर से 30 दिसम्बर, 2018	भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी जयन्ती पर 'आओ फिर से दिया जलायें'	• अटल जी की कविताओं की सांगीतिक प्रस्तुति • अटल जी की कविताओं पर भाव नृत्य, दुर्गा आर्या-जर्मनी, अनुराधा चतुर्वेदी-यू.के. व अन्य • 'कला, संस्कृति, साहित्य और अटल जी' विषय पर संगोष्ठी • पद्मविभूषण डा. सोनल मान सिंह जी का संवाद व नृत्य • नृत्य नाटिका 'अटल मर्म'	अकादमी परिसर, लखनऊ

भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ

स्थापना व परिचय

हिन्दी भाषी प्रान्तों में प्रतिभावान व महत्वाकांक्षी युवक युवतियों को नाट्यकला में प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से भारतेन्दु नाट्य अकादमी की स्थापना अगस्त 1975 में हुई थी। संस्थापक निदेशक पद्मश्री राज बिसारिया के कुशल निर्देशन में अकादमी का प्रशिक्षण कार्य, अंशकालिक प्रशिक्षण के रूप में प्रारम्भ होकर 1978 में एक वर्षीय पूर्णकालिक सर्टीफिकेट कोर्स तथा 1981 में द्विवर्षीय डिप्लोमा के रूप में स्थापित हुआ, जिसके अन्तर्गत नाट्यकला के विभिन्न पक्षों अभिनय, निर्देशन, रंग-तकनीक एवं नाट्य साहित्य विषयों में गहन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त छात्र-छात्राओं का पलायन रोकने के दृष्टिकोण से वर्ष 1988 में रंगमण्डल की स्थापना की गई।

भारतेन्दु नाट्य अकादमी उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के अन्तर्गत स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है।

उद्देश्य

अकादमी का उद्देश्य रंगमंच के विभिन्न पहलुओं में सैद्धान्तिक व व्यावहारिक गहन प्रशिक्षण प्रदान करना है ताकि इसे व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिये सशक्त पृष्ठभूमि तैयार हो सके। सैद्धान्तिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण के द्वारा छात्र छात्राओं की सृजनात्मकता का विकास करना उसकी कल्पना शक्ति लोक सौन्दर्यबोध के साथ रचनात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करना है। इस प्रशिक्षण को प्रदान करने में अकादमी के नियमित प्रवक्ताओं के अतिरिक्त देश विदेश के ख्याति प्राप्त कलाकारों व कलाविदों की सेवायें समय-समय पर प्राप्त की जाती हैं।

द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण किये जाने के पश्चात् सफल छात्रों को अकादमी द्वारा नाट्य विधा में डिप्लोमा प्रदान किया जाता है। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को अकादमी के भूतपूर्व छात्र की स्मृति में स्वर्गीय मृगांक शर्मा मेडल भी दिया जाता है।

भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ।

छात्रों के विशिष्ट प्रशिक्षण हेतु (01 अप्रैल, 2018 से 20 जनवरी 2019) तक आमंत्रित अतिथि विशेषज्ञ

क्र. सं.	नाम व स्थान	विषय
1	श्री रमापति द्विविद, शाहजहांपुर	बॉडीमूवमेन्ट
2	श्री सत्यब्रत राउत, मुम्बई	अभिनय
3	सुश्री रोबीजिता गोगई, गुवाहाटी	अभिनय
4	श्री विक्रम मोहन, दिल्ली	कोरियोग्राफी
5	श्री विनोद काडगल, त्रिवेन्द्रम	कल्लरी पट्टू
6	श्री सत्यव्रत राउत, हैदराबाद	मॉस्क मेकिंग
7	श्री ललित सिंह पोखरिया, लखनऊ	वेशभूषा
8	श्री अशरफ हुसैन, लखनऊ	अभिनेता हेतु सिनेमा माध्यम की जानकारी
9	श्री आत्मजीत सिंह, लखनऊ	लोक नाट्य नौटंकी
10	श्री आलोक पाडेकर, लखनऊ	प्रिंट मिडिया में नाट्यकीय समीक्षा का स्वरूप

11	सुश्री चार्वी मोहन, लखनऊ	थेरेप्टिक थियेटर एण्ड स्किल फॉर एक्टर
12	श्री डिम्पी मिश्रा, आगरा	रंग संगीत
13	श्री मनोज शर्मा, लखनऊ	टू क्रिएट ड्रेमेटिक मॉड्यूलेशन इन स्पीच परफार्मेंस
14	श्री सज्जाद हुसैन, मुम्बई	वॉइस एण्ड स्पीच
15	श्री अशोक भन्तिया, मुम्बई	स्पीच एण्ड बॉडी लैंग्वेज
16	श्री आमोद भट्ट, मुम्बई	रंग-संगीत
17	श्री सुग्रीव विश्वकर्मा, आजमगढ़	मॉस्क मेकिंग
18	श्री पुनीत अस्थाना, लखनऊ	निर्देशन
19	श्री सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ, लखनऊ	निर्देशन
20	गुरू एस0विश्वजीत सिंह, मणिपुर	मार्शल आर्ट
21	डा0 साबिरा हबीब, लखनऊ	रशियन ड्रामा
22	श्री निरंजन गोस्वामी, कोलकाता	माइम
23	सुश्री शिखा खरे, दिल्ली	नृत्य एवं मूवमेन्ट
24	श्री रोहित त्रिपाठी, दिल्ली	आशुअभिनय
25	श्री जॉय मिताई, मुम्बई	अभिनय
26	श्री के0मोहन, पूणे	मेकअप
27	श्री जफ़र संजरी, दिल्ली	अभिनय
28	श्री भरत गुप्ता, दिल्ली	इण्डियन ड्रामा

अकादमी तथा रंगमण्डल की नाट्य प्रस्तुतियां

तिथि	कार्यक्रम	निर्देशक	स्थान
06, 07 मई, 2018	रंगमण्डल प्रस्तुति जाति ही पूछो साधु की	सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ	थ्रस्ट थियेटर, लखनऊ
10, 11 मई, 2018	छात्र प्रस्तुति एडिंग मशीन	सत्यब्रत राउत	थ्रस्ट थियेटर, लखनऊ
भारतेन्दु नाट्य समारोह, नई दिल्ली (15 से 17 मई, 2018)			
15 मई, 2018	छात्र प्रस्तुति एडिंग मशीन	सत्यब्रत राउत	एल0टी0जी0 प्रेक्षागृह,नई दिल्ली
16 मई, 2018	छात्र प्रस्तुति एडिंग मशीन	सत्यब्रत राउत	एल0टी0जी0 प्रेक्षागृह,नई दिल्ली
17 मई, 2018	रंगमण्डल प्रस्तुति जाति ही पूछो साधु की	सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ	एल0टी0जी0 प्रेक्षागृह,नई दिल्ली

14 अगस्त, 2018	रंगमण्डल प्रस्तुति किस्सा अधनारीसुर उर्फ़ मारे गये गुलफ़ाम	उर्मिल कुमार थपलियाल	थ्रस्ट थियेटर, लखनऊ
02 अक्टूबर, 2018	गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में संध्या काले प्रभात फेरी	मनोज शर्मा	थ्रस्ट थियेटर, लखनऊ।
28,29,30 व 31 अक्टूबर, 2018	छात्र प्रस्तुति मेटामॉर्फोसिस	पार्था बंद्योपाध्याय	छात्र प्रस्तुति एडिंग मशीन
23 व 24 नवम्बर, 2018	रंगमण्डल प्रस्तुति रिफ्लेक्शन्स अननोन	चित्रा मोहन	बी0एम0शाह प्रेक्षागृह लखनऊ।
07,08 व 09 जनवरी, 2018	रंगमण्डल प्रस्तुति मच मच गाड़ी	चित्रा मोहन	थ्रस्ट थियेटर, लखनऊ।

विशेष

अकादमी के द्वितीय वर्ष के सत्र 2016-18 के 19 छात्रों को 56 दिवसीय फिल्म एवं टेलीविजन प्रशिक्षण हेतु सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता भेजा गया।

ग्रीष्मकालीन रंगमंच कार्यशालायें-

1. अकादमी रंगमण्डल द्वारा वित्तीय वर्ष 2018-19 में 01 बाल एवं 02 युवा नाट्य कार्यशालाओं का आयोजन अकादमी परिसर में किया गया। बाल नाट्य कार्यशाला की प्रस्तुति **'जैसे को तैसा'** का मंचन सुशील शुक्ला के निर्देशन में दिनांक 29 जून, 2018 को बी0एम0शाह प्रेक्षागृह में किया गया तथा युवा नाट्य कार्यशाला की प्रथम प्रस्तुति **'जांच पड़ताल'** का मंचन मनोज मिश्रा के निर्देशन में दिनांक 28 जून, 2018 को एवं द्वितीय प्रस्तुति **'भ्रम'** का मंचन प्रिवेन्द्र कुमार सिंह के निर्देशन में दिनांक 30 जून, 2018 को थ्रस्ट थियेटर में किया गया।

प्रस्तुतिपरक रंगमंच कार्यशालाओं का आयोजन

भारतेन्दु नाट्य अकादमी द्वारा अकादमी से उत्तीर्ण भूतपूर्व छात्रों के निर्देशन में प्रदेश तथा देश के विभिन्न जनपदों में प्रस्तुतिपरक रंगमंच कार्यशालाओं का आयोजन तथा कार्यशालाओं में तैयार नाट्य प्रस्तुतियों का मंचन किया गया। विवरण निम्नवत् है:-

14 अप्रैल, 2018	उजबक राजा तीन डकैत	गौरव सिंह	चेरापुर, भदोही
16 अप्रैल, 2018	ईदगाह	राजीव पाण्डेय	रामलीला मैदान, झूलाघाट, पिथौरागढ (उत्तराखण्ड)
22 अप्रैल, 2018	मृच्छकटिकम् व अंधेर नगरी	अमित कुमार	कला भवन, पूर्णिया (बिहार)
24 अप्रैल, 2018	पंच लाइट	प्रवीन्द्र कुमार	सर्वोदय पी0जी0कालेज घोसी, मऊ
25 अप्रैल, 2018	बेस्ट ऑफ लक	एकलव्य चौधरी	बाल भवन, हिसार (हरियाणा)
30 अप्रैल, 2018	जाति ही पूछो साधु की	धर्मेन्द्र भारती	रंगाश्रम मंच, गोरखपुर
03 मई, 2018	उजबक राजा तीन डकैत	गौरव अम्बारे	साईं सभागार, नागपुर (महाराष्ट्र)
13 मई, 2018	दूरियां	सतीश कुमार	सूर्या संस्थान परिसर, नोयडा

19 मई, 2018	रेहन पर रघु	चन्दन कुमार साहनी	टॉउन हाल, बलिया
26 मई, 2018	गज-फुट-इंच	प्रमोद यादव	सरस्वती मैरिज लॉन, गोला

कक्षा अभ्यास प्रस्तुति

तिथि	कार्यक्रम	निर्देशक	स्थान
14 अगस्त, 2018	अभिनय सीन वर्क	सज्जाद हुसैन	अकादमी परिसर
24 अगस्त, 2018	मॉशल आर्ट	गुरू एस0विश्वजीत	थ्रस्ट थियेटर, लखनऊ
13 सितम्बर, 2018	मॉस्क एण्ड मॉडल मेकिंग डिमास्ट्रेशन	सुग्रीव विश्वकर्मा	क्लासरूम
22 सितम्बर, 2018	रंग-संगीत	डिम्पी मिश्रा	थ्रस्ट थियेटर, लखनऊ
23 सितम्बर, 2018	रंग-संगीत	आमोघ भट्ट	थ्रस्ट थियेटर, लखनऊ
28 नवम्बर, 2018	मूकाभिनय	निरंजन गोस्वामी	बी0एम0शाह प्रेक्षागृह, लखनऊ
08 दिसम्बर, 2018	नृत्य एवं मूवमेन्ट	शिखा खरे	बी0एम0शाह प्रेक्षागृह, लखनऊ

अन्य कार्यक्रम

तिथि	कार्यक्रम	निर्देशक	स्थान
03 अप्रैल, 2018	हिन्दी रंगमंच दिवस के अवसर पर गज फुट इंच	विवेक मिश्रा	थ्रस्ट प्रेक्षागृह, लखनऊ
14 अप्रैल, 2018	डा0 भीमराव रामजी आम्बेडकर जी की जयन्ती के अवसर पर लहरों के राजहंस	विवेक मिश्रा	थ्रस्ट प्रेक्षागृह, लखनऊ
25 दिसम्बर, 2018	भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी जी की 95वीं जयन्ती के अवसर पर नाट्य प्रस्तुत अटल-वाक्य	प्रिवेन्द्र कुमार सिंह	थ्रस्ट थियेटर, लखनऊ।

संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम

तिथि	कार्यक्रम	निर्देशक	स्थान
26 जुलाई, 2018	भारतेन्दु नाट्य अकादमी एवं लोकयात्री संस्था के संयुक्त तत्वाधान में अंशु मालवीय की कविता नारको टेस्ट के नाट्य रूपान्तरण पर आधारित प्रस्तुति	राघवेन्द्र प्रताप सिंह	थ्रस्ट प्रेक्षागृह, लखनऊ

	सदानीरा		
12 अगस्त, 2018	भारतेन्दु नाट्य अकादमी एवं रंगपाखी के संयुक्त तत्वाधान में प्रस्तुति मुसाफिर किस्सों वाला	प्रिवेन्द्र कुमार सिंह	थ्रस्ट प्रेक्षागृह, लखनऊ
03 अक्टूबर, 2018	भारतीय नाट्य लेखक शंकर शेष के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रस्तुति 'फंदी'	अभिनव पाराशर	थ्रस्ट प्रेक्षागृह, लखनऊ
26 अक्टूबर, 2018	भारतेन्दु नाट्य अकादमी एवं संस्कार भारती उ0प्र0 के संयुक्त तत्वाधान प्रस्तुति सम्राट अशोक	चितरंजन त्रिपाठी	थ्रस्ट प्रेक्षागृह, लखनऊ

भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ।

वित्तीय वर्ष 2018-19 की प्रस्तावित योजनाऐं।

माह/तिथि	कार्यक्रम	निर्देशक	स्थान
अप्रैल, 2018			
03 अप्रैल, 2018	हिन्दी रंगमंच दिवस के अवसर पर छात्र प्रस्तुति	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
अप्रैल, 2018	छात्र प्रस्तुति पूर्वाभ्यास प्रारम्भ	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
अप्रैल, 2018	रंगमण्डल प्रस्तुति का पूर्वाभ्यास	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
मई, 2018			
मई, 2018	भारतेन्दु नाट्य समारोह नई दिल्ली	–	श्रीराम सेन्टर मण्डी हाउस,नई दिल्ली
मई, 2018	रंगमण्डल की प्रस्तुति का मंचन	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
जून, 2018			
01 जून, 2018	बाल रंगमंच कार्यशाला का प्रारम्भ	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
01 जून, 2018	वयस्कों हेतु अभिनय कार्यशाला का प्रारम्भ	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
29 जून, 2018	बाल रंगमंच कार्यशाला की प्रस्तुति का मंचन	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
30 जून, 2018	वयस्कों हेतु अभिनय कार्यशाला की प्रस्तुति का मंचन	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
जुलाई, 2018			
जुलाई, 2018	प्रवेश परीक्षा व साक्षात्कार	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
जुलाई, 2018	नये प्रतिभागियों हेतु दो द्विवसीय कार्यशाला	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
16 जुलाई, 2018	नवीन सत्र का आरम्भ	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
अगस्त, 2018			
अगस्त, 2018	रंगमण्डल प्रस्तुति	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
सितम्बर, 2018			
09 सितम्बर, 2018	भारतेन्दु जयंती के अवसर पर अकादमी के छात्रों की नाट्य प्रस्तुति	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
सितम्बर, 2018	रंगमण्डल की नाट्य प्रस्तुति	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
अक्टूबर, 2018			
अक्टूबर, 2018	रंगमण्डल की नाट्य प्रस्तुति	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
नवम्बर, 2018			
नवम्बर, 2018	छात्र प्रस्तुति पूर्वाभ्यास प्रारम्भ	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
दिसम्बर, 2018			
दिसम्बर, 2018	छात्र प्रस्तुति	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी

फरवरी, 2019			
07 फरवरी, 2019	स्व0 कृष्ण नारायण कक्कड़ व्याख्यान सेमिनार	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
फरवरी, 2019	छात्र प्रस्तुति पूर्वाभ्यास प्रारम्भ	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
मार्च, 2019			
मार्च, 2019	छात्र प्रस्तुति	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी
27 मार्च, 2019	विश्व रंगमंच दिवस पर सेमिनार/छात्र प्रस्तुति/रंगमण्डल प्रस्तुति	–	भारतेन्दु नाट्य अकादमी

नोट– उपरोक्तानुसार प्रस्तावित कार्यक्रम वित्तीय वर्ष 2018-19 के बजट की उपलब्धता के अनुरूप सम्पन्न कराये जायेंगे।

अयोध्या शोध संस्थान

तुलसी स्मारक भवन, अयोध्या-फैजाबाद

भूमिका व स्थापना का उद्देश्य

अयोध्या शोध संस्थान की स्थापना संस्कृति विभाग उ.प्र. शासन द्वारा अयोध्या के ऐतिहासिक तुलसी स्मारक भवन, में 18 अगस्त, 1986 को की गयी। यह संस्कृति विभाग की स्वायत्तशाषी संस्था है।

अयोध्या के प्रमुख संतों की विशेष मांग पर जहां गोस्वामी तुलसी दास जी ने मानस की रचना प्रारम्भ की थी, उस स्थान पर गोस्वामी तुलसीदास जी की स्मृति में तुलसी स्मारक भवन के निर्माण की मांग शासन से की गई। अयोध्या के संतों की मांग का सम्मान करते हुए उ0 प्र0 सरकार ने अयोध्या में तुलसी स्मारक भवन का निर्माण वर्ष 1969 में करवाया गया। इस भवन में गोस्वामी तुलसीदास की स्मृति को संजोये रखने हेतु उनकी रामायण लेखन मुद्रा में सांगो-पांग प्रतिमा स्थापित है अयोध्या शोध संस्थान की स्थापना के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् है।

प्रमुख उददेश्य

1. सामान्य रूप से अवध और विशिष्ट रूप से अयोध्या की कला संस्कृति, साहित्य, लोकसाहित्य, इतिहास और परम्पराओं की पाण्डुलिपियों तथा वस्तुओं और शिल्प तथ्यों का संग्रह, संरक्षण और अध्ययन करना है।
2. अवध की सांस्कृतिक विरासत से सम्बंधित नष्ट और विलुप्त हो रही पुरालेखीय सामग्री को सुरक्षित रखना।
3. अवध की भारतीय विद्या, कला, संस्कृति और इतिहास में विशेष रूप से अयोध्या, रामायण और तुलसीदास के साहित्य और दर्शन से सम्बंधित शोध कार्य को प्रोत्साहन देना और पूरा करना।
4. सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, कलात्मक और ऐतिहासिक महत्व पाण्डुलिपियों, पुरालेखीय सामग्री और अन्य वस्तुओं का उनके उन्नयन, संरक्षण और अध्ययन हेतु एक संग्रहालय स्थापित करना।
5. वैष्णव भक्ति, भक्ति आन्दोलन, कला, संस्कृति और सम्बद्ध भाषाई और भारतीय विद्या से सम्बंधित अन्य विषयों में विशेष रूप से अवध और राम की दन्त कथा के संदर्भ में शोध कार्य करना और स्नातकोत्तर अध्ययन संचालित कराना।
6. महत्वपूर्ण मूल पाठों की सूचियों, आलोचनात्मक संस्करणों और अनुवादों तथा शोध कार्यों के परिणामों को प्रकाशित कराना तथा अन्य उपयोगी प्रकाशनों को प्रकाशित कराना।
7. उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने और आगे बढ़ाने के लिये भारत और विदेशों के विश्वविद्यालयों संग्रहालयों, पुस्तकालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं से सहयोग करके कार्य करना।
8. व्याख्यानों, संगोष्ठियों, उत्सवों, सम्मेलनों और अन्य शैक्षिक तथा सांस्कृतिक क्रिया-कलापों का आयोजन कराना तथा इस सोसाइटी के उददेश्यों से सम्बंधित क्रिया-कलापों में लगे हुये शोध छात्रों और लेखकों को छात्रवृत्तियाँ, वृत्तिकाएं और पुरस्कार प्रदान करना।
9. धन, वस्तु या सम्प्रति के रूप में अनुदानों, चन्दों, उपहारों अंशदानों को स्वीकार करना। अयोध्या शोध संस्थान का अपना संविधान है। संस्थान के पदेन अध्यक्ष, प्रमुख सचिव, संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 शासन

है। संस्थान के संचालन हेतु सामान्य सभा, कार्यकारिणी परिषद्, शोध एवं विकास समिति तथा वित्त समिति गठित है।

10. रोजगार परक योजनाओं का संचालन, वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार तथा राज्य सरकार के विभिन्न शिल्प और विकास योजनाओं का संचालन।

अयोध्या शोध संस्थान प्रमुख रूप से शोध छात्रों के लिये पुस्तकालय का संचालन महत्वपूर्ण शोध कार्य तथा शोध के परिणामों को प्रकाशित करने हेतु प्रकाशन सहायता शोध पत्रिका का प्रकाशन, महापुरूषों की जयन्ती का आयोजन, प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन व प्रस्तुति करवाना तथा हस्तशिल्प में देश के विभिन्न कोने से रामकथा का संकलन टेराकोटा के माध्यम से विभिन्न शैलियों में रामकथा अंकन तथा विभिन्न चित्र शैलियों में रामकथा का चित्रांकन राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीयों का आयोजन करवाया जाना है। इसी के क्रम में नित्य परम्परिक राम लीला का मंचन तथा मैदानी रामलीला का दस्तावेजीकरण शोध कार्य हेतु करवाया जा रहा है।

एक वर्ष के कार्यक्रमों की
<u>संक्षेपिका</u>
(वित्तीय वर्ष 2018-19)

अयोध्या शोध संस्थान की स्थापना अवध, अवधी, रामकथा, तुलसी तथा भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर शोध एवं प्रदर्शन आदि के उददेश्यों के निमित्त की गयी थी। इस वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण आयोजन किये गये जिसमें माह अप्रैल के प्रथम दिवस उड़िया दिवस के रूप में ओड़िशा की रामायण आधारित संस्कृति को प्रदर्शित किया गया। ओड़िशी पट्टशैली में प्राचीन काल से रामकथा के चित्र बनाये जाते हैं जिनके पेपर मैसी के मुखौटे, वस्त्रों एवं ताड़ पत्र पर चित्रकारी संग्रहीत की गयी। तुलसी जयन्ती के रूप में अवधी दिवस का आयोजन किया गया जो एक साथ लखनऊ एवं अयोध्या में किया गया। लखनऊ में जहॉ अवधी कवि सम्मेलन किया गया वहीं अयोध्या में 24 घण्टे का अखण्ड रामचरित मानस पाठ व कवि सम्मेलन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

माह सितम्बर में काशी में फादर कामिल बुल्के की जयन्ती समारोहपूर्वक आयोजित की गयी। इस अवसर पर वाणी प्रकाशन से पुस्तक एवं 'साक्षी' का भी प्रकाशन व विमोचन कराया गया। बाल कार्यशालाओं के रूप में अयोध्या तथा फैजाबाद में पारम्परिक लोकगीतों का प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया गया जिसमें विद्यालय एवं महाविद्यालय के बच्चों ने प्रतिभाग किया।

शोध एवं प्रकाशनों के क्षेत्र में यह वर्ष अत्यन्त उल्लेखनीय रहा है। अयोध्या की विविध छवियां, अयोध्या के राजा एवं स्थापत्य सहित साक्षी के 53 अंकों का प्रकाशन किया जा चुका है। अयोध्या शोध संस्थान द्वारा लगभग 135 पुस्तकों/शोध कार्यों का प्रकाशन किया जा चुका है। इस वर्ष वाणी प्रकाशन के सहयोग से देश के विभिन्न पुस्तक मेलों में इन पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया जिससे संस्थान के बहुमूल्य प्रकाशन आमजन के अवलोकनार्थ प्रस्तुत हो सके और यह शोध कार्यों को आमजन तक पहुँचाने के प्रयास के रूप में सफल आयोजन रहा है।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार का आयोजन किया जाता है। भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से कम्बोडिया, श्रीलंका तथा इण्डोनेशिया की अन्तर्राष्ट्रीय रामलीला का अयोध्या में मंचन किया गया।

अयोध्या-कोरिया सम्बंधों में अयोध्या शोध संस्थान की महती भूमिका रही है। संस्थान द्वारा कोरिया के महानुभावों से सतत् सम्पर्क बनाये रखा गया जिसके फलस्वरूप बहुत अधिक पूँजी निवेश की सम्भावना भी अयोध्या में है। अयोध्या-कोरिया सम्बंधों पर आधारित पुस्तक का प्रकाशन किया गया। मुख्य सचिव महोदय द्वारा निदेशक, अयोध्या शोध संस्थान को अयोध्या-कोरिया सम्बंधों हेतु गठित राज्य स्तरीय समिति का सदस्य-सचिव भी नामित किया गया है।

''अयोध्या दीपोत्सव' के आयोजन के रूप में अयोध्या शोध संस्थान, संस्कृति विभाग द्वारा दिनांक 06नवम्बर, 2018 को पाईडण्डा, राईसैरा, कालबेलिया, बुन्देली, नन्दादेवी राजजात, हरियाणवी, डफला, फरूवाही, गुडुम्ब बाजा, धोबिया, छाऊ इत्यादि लोक नृत्यों पर आधारित 25 लोक विधाओं एवं रामलीला के विभिन्न प्रसंगों पर आधारित 11 रामलीला दलों एवं विदेशी रामलीला दलों में लाओस, रूस, ट्रिनीडाड तथा कोरिया के दलों की झांकी का आयोजन।

वित्तीय वर्ष 2018-19

1.पुस्तकालय का संचालन-

संस्थान द्वारा पुस्तकालय एवं वाचनालय का संचालन किया गया जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों में पंजीकृत शोध छात्र एवं अध्ययनकर्ताओं ने पुस्तकालय एवं वाचनालय में अध्ययन किया।

माह अप्रैल, 2018 से माह जनवरी, 2019 तक

1.	शोध छात्र	-	34
2.	सामान्य अध्ययनार्थी	-	354
3.	पत्रिका अध्ययनार्थी	-	1444
4.	रोजगार समाचार अध्ययनार्थी	-	143
5.	समाचार पत्र अध्ययनार्थी	-	3809

2. शिल्प संग्रहालय-

शिल्प संग्रहालय में देश-विदेश की विभिन्न विधाओं में उपलब्ध हस्तशिल्प में निर्मित रामकथा सामग्रियों का संकलन प्रदर्शन की व्यवस्था तथा क्षेत्र की कला का विस्तृत परिचय हेतु प्रदर्शक की व्यवस्था।

3. शोध कार्य-

संस्थान की वित्तीय सहायता से संचालित शोध कार्यों का विवरण-

	चल रहे शोध कार्यः-	**शोधकर्ता**
1.	लखनऊ की रामलीला पर आधारित साक्षी	आलोक पराड़कर
2.	कानपुर की परशुरामी पर शोध	डॉ0 दीप कुमार शुक्ल
3.	कानपुर का धनुषयज्ञ एवं लक्ष्मण-परशुराम संवाद	डॉ0 दीप कुमार शुक्ल
4.	तेलगु लोक साहित्य में राम तत्व	प्रो0 आई0 एन0 चन्द्रशेखर रेड्डी
5.	अवध की रामलीला में मुसलमानों का योगदान	श्री अखिलेश दीक्षित
6.	ऐनथ्रोपोलाजिकल एनसाइकलोपीडिया आफ अवध	प्रो0 नदीम हसनैन
7.	प्रतापगढ़ जनपद का सांस्कृतिक विरासत	डॉ नीतू सिंह
8.	भारत व श्रीलंका की रामलीला	सुश्री अमिला दमयन्ती
9.	भारतीय भाषाओं में रामकथा- उड़िया, हरियाणवी, मलयालम, असमिया, उर्दू, फारसी, भोजपुरी, ब्रज, मराठी।	डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह
10.	सांस्कृतिक विरासत (साक्षी-1 का द्वितीय संस्करण)	सुश्री शोभा गुप्ता

4. संस्थान की सहायता से प्रकाशित ग्रन्थ-

क्र.सं.	**पुस्तक का नाम**	**लेखक/संपादक/संकलनकर्ता**
1.	श्री रामचरितमानस	महाराज करुणासिंधु
2.	अवध की थारू जनजाति : संस्कार एवं कला	दीपा सिंह रघुवंशी
3.	मइहर के अँगना	दीपा सिंह रघुवंशी
4.	राम लीलाज इन नार्थ इण्डिया एण्ड मारिशस	इन्द्राणी रामप्रसाद

5. संस्थान द्वारा साक्षी पत्रिका का प्रकाशन-

क्र.सं.	**पुस्तक का नाम**	**लेखक/संपादक/संकलनकर्ता**
1.	साक्षी- 49	दीपा सिंह रघुवंशी
2.	साक्षी- 50	दीपा सिंह रघुवंशी
3.	साक्षी-53	इन्द्राणी रामप्रसाद

6. <u>नित्य पारम्परिक रामलीला</u>-

1. दिनांक 03 मई, 2017 से प्रतिदिन सायं 06.00 बजे से रात्रि 09.00 बजे तक नित्य पारम्परिक रामलीला का मंचन। अप्रैल, 2018 से मार्च, 2019 तक 15 दिवसीय पखवाड़ा का 24 दलों द्वारा रामलीला का मंचन।
   - 1 से 15 अप्रैल, 2018 श्री मारूति नन्दन आदर्श रामलीला मण्डल, टिकैत नगर बाराबंकी उ0प्र0
   - 16 से 30 अप्रैल, 2018 श्री हनुमत आदर्श रामलीला मण्डल, अयोध्या फैजाबाद।
   - 01 से 15 मई, 2018 श्री संकट मोचन आदर्श रामलीला मण्डल, मलौना, उन्नाव।
   - 16 से 31 मई, 2018 श्री संकटमोचन आदर्श रामलीला मंडल, होलीपुर, झिरिया मंदिर, बैरसिया, भोपाल म0प्र0।
   - 01 से 15 जून, 2018 जनक दुलारी आदर्श रामलीला मण्डल, अयोध्या।
   - 16 से 30 जून, 2018 दोस्ताना रामलीला कमेटी, करेहदा, इलाहाबाद।
   - 01 से 15 जुलाई, 2018 जय बजरंग आदर्श रामलीला मण्डल, ग्राम- साहरघाट, जिला- मधुबनी, बिहार।
   - 16 से 31 जुलाई, 2018 श्री हनुमन्त रामलीला मण्डल, ग्राम- खानपुर, बन्थरी कौशाम्बी, उ0प्र0।
   - 01 से 15 अगस्त, 2018 आदर्श सेवा संस्थान, बाराबंकी।
   - 16 से 31 अगस्त, 2018 जय रामलीला संस्थान, भवानीपुर, बिहार।
   - 01 से 15 सितम्बर, 2018 जय हनुमान मानस उत्थान आदर्श रामलीला मण्डल, नवाबगंज, गोण्डा (उ0प्र0)।
   - 16 से 30 सितम्बर, 2018 रामश्याम आदर्श रामलीला मण्डल, सीतामढ़ी, बिहार।
   - 01 से 20 अक्टूबर, 2018 जय हनुमान मानस उत्थान आदर्श रामलीला मण्डल, नवाबगंज, गोण्डा (उ0प्र0)।
   - 21 से 31 अक्टूबर, 2018 श्री ब्रह्म अवध आदर्श रामलीला मण्डल, अयोध्या।
   - 01 से 15 नवम्बर, 2018 राधारानी रासलीला एवं रामलीला मण्डल, आगरा।
   - 16 से 30 नवम्बर, 2018 रामश्याम आदर्श रामलीला मण्डल, सीतामढ़ी, बिहार।
   - 01 से 15 दिसम्बर, 2018 श्री तिरहुत आदर्श रामलीला मण्डल, सुरसण्ड बिहार।
   - 16 से 31 दिसम्बर, 2018 श्री राम जानकी आदर्श बाल रामलीला मण्डल, फुलहटटा, बिहार।
   - 01 से 15 जनवरी, 2019 जय माँ हंसवाहिनी रामलीला एवं नाट्य मण्डल, कौशाम्बी।
   - 16 से 31 जनवरी, दुल्हा दुल्हीन रामलीला मण्डल, फुलहटटा, बिहार।

7.<u>रामायण मेला</u>-

1. 11 से 14दिसम्बर, 2018 रामायण मेला में अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या द्वारा विदेशी रामलीलाओं एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

8. <u>अन्तर्राष्ट्रीय रामलीला का आयोजन</u>-

1. इण्डोनेशिया की रामलीला एवं भारत की पारम्परिक रामलीला की प्रस्तुति जकार्ता/बाली, इण्डोनेशिया।
2. 18 जुलाई, 2018 से 02 अगस्त, 2018 तक त्रिनीडाड, गुआना तथा सूरीनाम आदि कैरेबियन देशों में अयोध्या की रामलीला की प्रस्तुति।

9. उत्सवों महोत्सव में आयोजित लोक रंग सांस्कृतिक कार्यक्रम-

1. 1, 3 व 4 अप्रैल, 2018 को उड़िया दिवस के अवसर पर लखनऊ, गोरखपुर तथा अयोध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रम।
2. 13 व 14 अप्रैल, 2018 को अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद में अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार के अवसर परसांस्कृतिक संध्या एवं पॉवर प्वाइन्ट प्रेजेन्टेशन, द्रोपदी नृत्य नाटिका, राई तथा भजन के कार्यक्रम।
3. 16 से 18 अप्रैल, 2018 विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर हेरिटेज वाक एवं चित्रकला प्रतियोगित तथा पुरस्कार वितरण।
4. 12 मई, 2018 को दशहरा के अवसर पर 5 रामलीला दलों द्वारा रामलीला प्रसंगों की शोभायात्रा।
5. 26 मई, 2018 केरल में सेमिनार के समापन पर अयोध्या की रामलीला तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम।
6. 27 अगस्त, 2018 अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या के 32वाँ स्थापना दिवस के अवसर पर समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।
7. 06नवम्बर, 2018 अयोध्या दीपोत्सव के अवसर पर 25 लोक विधाओं एवं रामलीला के विभिन्न प्रसंगों पर आधारित 11 रामलीला दलों एवं विदेशी रामलीला दलों में लाओस, रूस, ट्रिनीडाड तथा कोरिया के दलों की झांकी का आयोजन।

10. जयन्ती का आयोजन-

1. 14 अप्रैल, 2018 को डॉ0 भीम राव अम्बेडकर की जयन्ती के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम।
2. 16 अगस्त, 2018 को तुलसी स्मारक भवन, अयोध्या तथा लखनऊ में तुलसी जयन्ती के उपलक्ष्य में मानस पाठ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन।
3. 01 सितम्बर, 2018 को फादर कामिल बुल्के जयन्ती का आयोजन एवं छायाचित्र प्रदर्शनी, पुरस्कार वितरण तथा अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार।
4. कबीरदास जयन्ती के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम।

11. प्रदर्शनी-

1. 13-14 अप्रैल, 2018 अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद में अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार के अवसर पर सांस्कृतिक संध्या एवं रामलीला की चित्र प्रर्दशनी।
2. 15 सितम्बर, 2018 पर फादर कामिल बुल्के के जन्म दिवस के स्मृति समारोह में रामनगर , वाराणसी की विश्व प्रसिद्ध रामलीला पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
3. 05 नवम्बर, 2018 अयोध्या दीपोत्सव के अवसर पर रामलीला आधारित पुस्तकों एवं हस्तशिल्प प्रदर्शनी।

12.राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

	संगोष्ठी विषय
1. 19 व 20 अप्रैल,2018 नई दिल्ली	वैश्विक कला में राम
2. 23-24 अप्रैल, 2018 सागर(म0प्र0)	वैश्विक जीवनः मूल्य और रामकथा
3. 9-17 मई, 2018 कजान एवं मास्को विश्वविद्यालय	राम संस्कृति की विश्व यात्रा
4. 24-26 मई, 2018 कोच्चि विश्वविद्यालय, केरल	केरल की संस्कृति में राम
5. हिन्दू विश्वविद्यालय, इण्डोनेशिया	इण्डोनेशिया की रामलीला
6. 18 जुलाई से 02 अगस्त त्रिनीडाड, गयाना, सूरीनाम नीदरलैण्ड	-रामलीला की वैश्विक यात्रा
7. 07 व 08 सितम्बर, 2018	वैश्विक संस्कृति में हनुमान एवं आध्यात्मिक संचार
8. 23 से 26 अक्टूबर, 2018 अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, फैजाबाद	तकनीकी सत्र एवं सांस्कृतिक संध्या स्वामी विवेकानन्द प्रेक्षागृह

13. भावी योजनाएं

1. फेलोशिप योजना-

देश और विदेशों में अध्ययनरत शोध छात्र जो पी0एच0डी0 हेतु अनुमन्य हों उनमें इस योजना संचालन किया जायेगा जिसके माध्यम से रामकथा, रामायण, रामलीला, तुलसी, अयोध्या, अवध आदि से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर शोध छात्रों को फेलोशिप प्रदान की जायेगी।

विश्वविद्यालय में आर0डी0सी0 के माध्यम से संस्थान के उद्देश्यों के आधार पर फेलोशिप स्वीकृत होगी। नियम एवं शर्तें सम्बंधित विश्वविद्यालय की होंगी। संस्थान मात्र आर्थिक सहयोग प्रदान करेगा। नियम एवं शर्तों हेतु कार्यकारिणी की अभिमति से देश और विदेश के विभिन्न विशेषज्ञों की एक समिति का गठन किया गया है जिनके माध्यम से फेलोशिप का चयन किया जायेगा।

2. अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या एण्ड नेशनल काउन्सल आफ इण्डियन कल्चर ट्रिनीदाद (डब्लू आई)के मध्य हुए एम ओ यू के अन्तर्गत सांस्कृतिक आदान-प्रदान एवं रामलीला प्रस्तुति एवं प्रशिक्षण तथा व्यासों के रामकथा विषयक लेक्चर, प्रदर्शनी एवं शोध कार्य, प्रकाशन, हस्तशिल्प संग्रहालय व पुस्तकालय में आपसी समन्वय स्थापित कर कार्यों को संपादित करवाया जाना।
3. स्कूली बच्चों में सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण कार्यशालाओं एवं प्रस्तुतियां करवाया जाना।
4. सांस्कृतिक विरासत का सर्वेक्षण संकलन एवं प्रकाशन कार्य कर विलुप्तप्राय विधाओं का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रकाशन कार्य।
5. यूनेस्कों द्वारा वर्ल्ड हेरिटेज घोषित रामलीला के प्रचार-प्रसार, प्रदर्शनी हेतु विद्यालयों में विभिन्न क्षेत्रों की रामलीला प्रस्तुति के प्रदर्शन, प्रशिक्षण एवं प्रस्तुति।
6. रामलीला विरासत के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए रामलीला प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन।
7. संस्थान में संग्रहीत सांस्कृतिक विरासतों के दस्तावेजीकरण को विद्यालय एवं महाविद्यालयों में प्रदर्शन।
8. देश के विभिन्न विश्वविद्यालय में संस्थान के उद्देश्यो की पूर्ति हेतु किये गये शोध कार्यो का सर्वेक्षण, संकलन व प्रकाशन।
9. संस्थान के उद्देश्यो की पूर्ति हेतु शोध कार्य।
10. पुस्तकालय का विकास कम्प्यूटरीकृत किये जाने का कार्य तथा विभिन्न पुस्तकालयो से संग्रहीत पुस्तको की जानकारी हेतु परस्पर समन्वय।
11. राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
12. अवधी साहित्य पर पाठ्यक्रय अनुमोदित करवाकर डिपलोमा का क्रियान्वयन।
13. मई, 2017 से नित्य पारम्परिक रामलीला का उच्च स्तरीय प्रदर्शन।

उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ

1. संस्थान की स्थापना :-

उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान की स्थापना वर्ष 1991 में संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश के अधीन स्वायत्तशासी संस्था के रूप में की गई है।

2. संस्थान के उद्देश्य :-

संस्थान का उद्देश्य भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित जैन विधाओं का राष्ट्रीय सन्दर्भ में अध्ययन तत्संबंधी शोध तथा जैन तीर्थंकरों की सांसेंतिक महत्व की परम्परा एवं आधारभूत मान्यताओं, मानवीय मूल्यों, कला अवशेषों का संरक्षण एवं विश्लेषण संबंधित निम्नलिखित कार्य करना है।

1. भारत में उपलब्ध जैन विद्या संबंधित सामग्री 1. संकलन 2. शोध कार्य 3. संबंधित ग्रन्थों का क्रियात्मक अध्ययन 4. उपलब्ध सामग्री का भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी में प्रमाणिक भाषान्तर कार्य आदि।
2. जैन विद्या सामग्री के सुसम्बद्ध अध्ययन हेतु विभिन्न सौंतिक महत्व की परम्परागत मान्यताओं की जानकारी के लिए रचनात्मक कार्य एवं शोध कार्य करना।
3. जैन विद्या संबंधी आधारभूत और मानवीय मूल्यों को जिसे सदियों से भारत में संजोये रखा गया है, इस प्रकार से सुरक्षित रखना ताकि वह नष्ट न हो।
4. जैन विद्या के भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के अध्ययन-अध्यापन की सुविधा उपलब्ध कराना जो भारत और विदेशों में प्राप्त जैन विद्या के तुलनात्मक अध्ययन में सहयोगी हो सके।
5. ऐसे अध्येता एवं शोध कार्य विद्वानों को पुरस्कार एवं उपाधि आदि प्रदान करने के लिए शासन एवं विश्वविद्यालयों की सहमति से नियम बनाना और अनुमति प्राप्त करना।
6. जैन विद्या के अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में ग्रन्थ सूची, समीक्षात्मक अध्ययन, अनुवाद शोध पत्रिका, शब्दकोश आदि ग्रन्थों का प्रकाशन।
7. छात्रवृत्ति, शोध वृत्ति, अध्ययन वृत्ति, यात्रा वृत्ति आदि उपलब्ध कराना।
8. उद्देश्यों के अनुरूप परिचर्चा, चरित्रवाद, परिगोष्ठी, व्याख्यान, सम्मेलन आदि आयोजित करना।
9. संबंधित और संदर्भित ग्रन्थों, पाण्डुलिपियों, माइक्रोफिल्मों आदि का पुस्तकालय स्थापित करना।
10. जैन तीर्थ क्षेत्रों के विभिन्न केन्द्रों में भवनों, घाटों, सरोंवरों, कुण्डों और सांसेंतिक वास्तुकला के महत्व के अन्य स्मारकों/स्थानों का पुर्नस्थापना, सुधार और अनुरक्षण करना।
11. जैन तीर्थ क्षेत्रों पर प्रदूषण की रोकथाम के लिए जिसमें नदी, जल, स्थान, तालाब, सरोवर एवं कुण्ड सम्मिलित है, कार्य करना।
12. जैन तीर्थ क्षेत्रों की मर्यादा पवित्रता और सामान्य स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कार्य करना।
13. जैन तीर्थ केन्द्रों में पर्यटको की सुविधा के लिए आवास, सड़क और जल परिवहन संबंधित सुविधाओं की व्यवस्था करना।
14. जैन तीर्थ केन्द्रों, प्रोंतिक दृश्यों का निर्माण उनकी सजावट और प्रकाश पुंज की व्यवस्था करना।
15. संस्थान की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए केन्द्रीय व राज्य सरकारों व्यक्तियों संस्थाओं से दान, अनुदान व अंशदान, भूमि तथा भवन प्राप्त करना जो संस्थान की भावना और उद्देश्यों के प्रतिकूल न हो।
16. संस्थान के आय तथा व्यय का लेखा-जोखा सुनियोजित एवं सही ढंग से रखने की प्रक्रिया निर्धारित करने के लिए नियम बनाना।
17. संस्थान के उद्देश्यों की उपलब्धि के लिये कार्यों को सुविधाजनक ढंग से रखने की प्रक्रिया के उद्देश्य से समितियों एवं उपसमितियों को गठित करना एवं उनके संचालन के लिए आवश्यक और प्रासंगिक नियम बनाना।
18. संस्थान के उद्देश्यों की उपलब्धि के लिए उन सभी कार्यों को सम्पादित करना जो आवश्यक एवं प्रमाणिक हों।

3. <u>संस्थान के क्रिया-कलाप :-</u>

2. संस्थान के क्रिया-कलापों के अर्न्तगत कवि सम्मेलन, जैन संसेंति पर आधारित व्याख्यान माला, जैन धर्म पर लघु संगोष्ठी, **"जैन विद्या के विविध आयाम"** नामक विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, अहिंसा एवं पर्यावरण पर संगोष्ठी, विश्व मैत्री दिवस तथा विश्व मैत्री सेवा सम्मान समारोह, पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, आज की समस्यायें एवं तीर्थंकर महावीर जैन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा पुरस्कार वितरण, भगवान महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में संगोष्ठी, भजन संध्या एवं डेवलेपमेन्ट आफ बुद्धिज्म एण्ड जैनिज्म इन अवध रिलीजन एवं हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ अवध नामक विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आदि का आयोजन कराया जा चुका है।

3. संस्थान द्वारा शोध योजनाओं के अर्न्तगत जैन दर्शन के ज्ञानमीमांसा सिद्धान्त का समीक्षात्मक अध्ययन नामक शोध योजना का कार्य सम्पन्न हो चुका है। जैन धर्म एवं दर्शन में प्रकाशित ग्रन्थों की सूची नामक शोध योजना का कार्य सम्पन्न हो चुका है।

4. <u>सन्दर्भ पुस्तकालय :-</u>

संस्थान का अपना एक सन्दर्भ पुस्तकालय है जिसमें लगभग 2500 दुर्लभ ग्रन्थ, पुस्तकें एवं पत्रिकायें है। पुस्तकालय में जैन विद्या से संबंधित जैन धर्म दर्शन, कला संकेति, मूर्ति कला, इतिहास एवं शब्दकोश आदि के सन्दर्भ ग्रन्थ उपलब्ध है। संस्थान का यह पुस्तकालय कार्यालय कार्य दिनों में शोधार्थियों एवं जैन विद्वानों के अध्ययनार्थ खुला रहता है।

5. <u>जैन धर्म के प्रमुख तीर्थंकर :-</u>

जैन परम्परा में तीर्थंकरों का वि-ोष महत्व है। तीर्थंकर शब्द तीर्थ से बना है। जिसका तात्पर्य "संसार सागर से पार उतारने वाला" है। जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए हैं :-

1. ऋषभ देव (आदिनाथ), 2. अजितनाथ, 3. सम्भवनाथ, 4. अभिनंदन, 5. सुमतिनाथ, 6. पद्मप्रभु, 7.सुपार्श्वनाथ, 8. चन्द्रप्रभु, 9. सुविधिनाथ, 10. शीतलनाथ, 11. श्रेयांसनाथ, 12.वासुपूज्य, 13.विमलनाथ, 14.अनन्तनाथ, 15. धर्मनाथ, 16. शान्तिनाथ, 17' कुंथुनाथ, 18. अरनाथ, 19.मल्लिनाथ, 20. मुनिसुव्रत 21.नेमिनाथ 22. अरिष्टनेमि, 23. पार्श्वनाथ, 24. महावीर।

इन तीर्थंकरों का जैन धर्म के प्रवर्तन, संस्थापना और वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान था।

1. **ऋषभ देवः-** जैन अनुश्रुति के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे। ऋषभदेव ने ही सर्वप्रथम सभ्यता का पाठ पढ़ाया तथा ेषि, असि, मसि, ि-ल्प, वाणिज्य और विद्या नामक छः जीविकाओं की व्यवस्था की थी। वैदिक परम्परा में वेदों से लेकर पुराणों तक इनके नाम का उल्लेख पाया जाता है। सिन्धु सभ्यता से भी ऋषभदेव के प्रतीकों से मिलती-जुलती मुहरें मिलती है।
2. **अजितनाथः-** अजित जैन परम्परा के दूसरे तीर्थंकर माने जाते हैं। इनका जन्म स्थान अयोध्या माना गया है। इन्होंने अपने जीवन के अन्तिम चरण में संन्यास ग्रहण कर 12 वर्ष तक कठिन तपस्या की, तत्पश्चात सर्वज्ञ (कैवल्य) बने। अजित को सम्मेद ि-खर पर निर्वाण प्राप्त हुआ था।
3. **सम्भवनाथः-** सम्भवनाथ तीसरे तीर्थंकर माने जाते हैं। इनका जन्म स्थान श्रावस्ती नगर माना जाता है। 14 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद श्रावस्ती में शालवृक्ष के नीचे इनको सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त हुआ तथा निर्वाण सम्मेद शिखर पर प्राप्त किया।
4. **अभिनन्दनः-** अभिनन्दन जैन परम्परा के चौथे तीर्थंकर माने जाते हैं। अभिनन्दन के गर्भ में आने के बाद सर्वत्र प्रसन्नता छा गई इसलिए इनका नाम अभिनन्दन रखा गया। अयोध्या में शाल वृक्ष के नीचे आपको कैवल्य प्राप्त हुआ तथा निर्वाण सम्मेद ि-खर पर प्राप्त किया।
5. **सुमतिनाथः-** सुमतिनाथ पाँचवें तीर्थंकर माने जाते हैं। 20 वर्षों की कठिन तपस्या के बाद अयोध्या में प्रियंगु वृक्ष के नीचे इनको केवल-ज्ञान प्राप्त हुआ। इनकी निर्वाण स्थली सम्मेद शिखर है।
6. **पद्मप्रभः-** पद्मप्रभ छठें तीर्थंकर हैं। इनका जन्म कौ-ाम्बी में हुआ था। कौ-ाम्बी के प्रियंगु (वट) के नीचे केवल-ज्ञान प्राप्त किया। इनकी भी निर्वाण स्थली सम्मेद शिखर है।
7. **सुपार्श्वनाथः-** सुपा-र्वनाथ सातवें तीर्थंकर माने जाते है। सुपा-र्व का लांक्षन स्वस्तिक है। मूर्तियों में सुपा-र्व की पहचान मुख्यतः एक, पाँच, नौ सर्प फणों के त्रिरस्त्राण के आधार पर की गई है। जैन ग्रन्थों में उल्लेख है कि गर्भकाल में सुपार्श्व की माता ने स्वप्न में अपने को एक, पाँच और नौ फणों वाले सर्पों की शय्या पर सोते देखा था।
8. **चन्द्रप्रभः-** आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ माने जाते हैं। जैन परम्परा के अनुसार गर्भकाल में माता की चन्द्रपान की इच्छा पूर्ण हुई थी और बालक की प्रभा चन्द्रमा की तरह थी, इसी कारण बालक का नाम चन्द्रप्रभ रखा गया। चन्द्रपुरी में नाग वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त किया। इनकी निर्वाण स्थली सम्मेद ि-खर है। चन्द्रप्रभ का लांक्षन शशि है।
9. **सुविधिनाथ या पुष्पदन्तः-** सुविधिनाथ जैन परम्परा के नवें तीर्थंकर माने जाते हैं। श्वेताम्बर परम्परा में इनके सुविधि और पुष्पदन्त दोनों नामों का उल्लेख मिलता है, परन्तु दिगम्बर परम्परा में केवल पुष्पदन्त नाम का ही उल्लेख मिलता है। सुविधि का लांक्षन मकर है।
10. **शीतलनाथः-** शीतलनाथ दसवें तीर्थकर हैं। जैन परम्परा में उल्लेख है कि गर्भकाल में नन्दा देवी के स्पर्श से दृढ़स्थ की पीड़ा शान्त हुई थी, इसी कारण बालक का नाम शीतलनाथ रखा गया। इन्हें पीपल वृक्ष के नीचे बोधि-ज्ञान प्राप्त हुआ तथा सम्मेद ि-खर पर निर्वाण प्राप्त किया। शीतल का लांक्षन श्रीवत्स है।
11. **श्रेयांसनाथः-** श्रेयांस को ग्यारहवें तीर्थंकर के रूप में माना गया है। इन्होंने दो माह कठोर तपस्या के बाद तिन्दुक (पलाष) वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त किया। श्रेयांस का लांक्षन गेंडा (खड्डी) था।

12. **वासुपूज्यः-** वासुपूज्य बारहवें तीर्थंकर माने जाते हैं। वसुपूज्य का पुत्र होने के कारण इनका नाम वासुपूज्य रखा गया। जैन परम्परा में इनके अविवाहित रूप में दीक्षा ग्रहण करने का उल्लेख है। एक माह की तपस्या के उपरान्त इन्हें चम्पा के उद्यान में पाटल वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त हुआ। वासुपूज्य का लांछन महिष है।
13. **विमलनाथः-** विमल को तेरहवॉ तीर्थंकर माना गया है। जैन परम्परा के अनुसार गर्भकाल में माता तन-मन से निर्मल रहीं, इसी कारण बालक का नाम विमलनाथ रखा गया। इन्होंने जम्बू वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया तथा सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया।

14. **अनन्तनाथः-** अनन्तनाथ जैन परम्परा में चौदहवें तीर्थंकर माने गये हैं। अनन्त के गर्भकाल में पिता ने भयंकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी, इसी कारण बालक का नाम अनन्त रखा गया। अयोध्या के सहस्राम्र वन में अ-ोक वृक्ष के नीचे इन्हें कैवल्य प्राप्त हुआ था। इन्होंने सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया। श्वेताम्बर परम्परा में अनन्त का लांक्षन श्येन पक्षी और दिगम्बर परम्परा में रीक्ष बताया गया है।
15. **धर्मनाथः-**धर्मनाथ जैन परम्परा में पन्द्रहवें तीर्थंकर माने गये हैं। गर्भकाल में माता को धर्मसाधन का दोहद उत्पन्न हुआ, इसी कारण बालक का नाम धर्मनाथ रखा गया। इन्होंने जीवन के अन्तिम समय में कठिन तपस्या कर दधिपर्ण वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त किया। सम्मेद शिखर इनकी निर्वाण-स्थली है। धर्मनाथ का लांक्षन वज्र है।
16. **शान्तिनाथः-** शान्तिनाथ जैन परम्परा में सोलहवें तीर्थंकर हैं। जैन परम्परा में उल्लेख है कि शान्तिनाथ के गर्भ में आने के पूर्व हस्तिनापुर नगर में महामारी का रोग फैला था, पर इनके गर्भ में आते ही महामारी का प्रकोप शान्त हो गया। इसी कारण इनका नाम शान्तिनाथ रखा गया। इन्हें नन्दी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ। सम्मेद शिखर इनकी निर्वाण-स्थली है। शान्तिनाथ का लांक्षन मृग है।
17. **कुन्थुनाथः-** कुन्थुनाथ को सत्रहवॉ तीर्थंकर माना गया है। जैन परम्परा के अनुसार गर्भकाल में माता ने कुन्थु नाम के रत्नों की रा-ि देखी थी, इसी कारण बालक का नाम कुंथुनाथ रखा गया। 16 वर्षों की कठिन तपस्या के बाद तिलक वृक्ष के नीचे इन्होंने केवल-ज्ञान प्राप्त किया। सम्मेद ि-खर इनकी निर्वाण-स्थली है। कुंथुनाथ का लांक्षन छाग (बकरा) है।
18. **अरनाथः-** अरनाथ अट्ठारहवें तीर्थंकर माने जाते हैं। गर्भकाल में माता ने रत्नमय चक्र के अर को देखा था, इसी कारण बालक का नाम अरनाथ रखा गया। तीन वर्षों की कठिन तपस्या के बाद गजपुरम् में आम्र वृक्ष के नीचे इनको-ज्ञान प्राप्त हुआ। सम्मेद ि-खर इनकी निर्वाण-स्थली है। श्वेताम्बर परम्परा में अर का लांक्षन नन्द्यावर्त है और दिगम्बर परम्परा में इनका लांक्षन मत्स्य है।
19. **मल्लिनाथः-** मल्लिनाथ उन्नीसवें तीर्थंकर माने जाते हैं। इनकी माता को गर्भकाल में पुष्प शय्या पर सोने का दोहद उत्पन्न हुआ था, इसी कारण बालिका का नाम मल्लि रखा गया। दिगम्बर परम्परा मल्लिनाथ को पुरूष मानती है क्योंकि पुरूष ही तीर्थंकर हो सकता है किन्तु श्वेताम्बर आगम साहित्य में यह भी उल्लेख है कि इस काल चक्र में जो वि-ेष आ-चर्यजनक दस घटनाएँ हुई उनमें मल्लि का स्त्री रूप में तीर्थंकर होना वि-ेष महत्वपूर्ण है। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार मल्लि अविवाहित स्त्री थी और दीक्षा के दिन ही उन्हें अ-ोक वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त हुआ। इनकी निर्वाण स्थली सम्मेद पर्वत थी। मल्लि का लांछन कल-ा है।
20. **मुनिसुव्रतः-** मुनिसुव्रत को बीसवॉ तीर्थंकर माना गया है। गर्भकाल में माता ने सम्यक् रीति से व्रतों का पालन किया इसी कारण बालक का नाम मुनिसुव्रत रखा गया। इन्होंने जीवन की संध्या बेला में राजगृह में चम्पक वृक्ष के नीचे कठोर तपस्या करके कैवल्य प्राप्त किया। सम्मेद शिखर इनकी निर्वाण स्थली है। जैन परम्परा के अनुसार राम (पद्म) एवं लक्ष्मण (वासुदेव) मुनि सुव्रत के समकालीन थे। मुनिसुव्रत का लांछन कूर्म है।
21. **नेमिनाथः-** नेमिनाथ इक्कीसवें तीर्थंकर माने जाते है। जब नेमि गर्भ में थे उसी समय शत्रुओं ने मिथिला नगरी को घेर लिया। वप्रा ने जब राजप्रासाद से शत्रुओं को देखा तो शत्रु शासक का विचार बदल गया और वह विजय के समक्ष नतमस्तक हो गया। इन्होंने मिथिला में कठिन तपस्या किया और कैवल्य प्राप्त किया। नमि का लांछन नीलोत्पल है। नेमि को सम्मेद ि-खर पर निर्वाण प्राप्त हुआ था।
22. **अरिष्टनेमिः-** जैन परम्परा में अरिष्टनेमि को बाइसवॉ तीर्थंकर माना गया है। शिवा के गर्भ धारण के बाद समुद्रविजय सभी प्रकार के अनिष्टों से बचे थे तथा गर्भावस्था में ि-वा ने अरिष्टनेमि का द-र्न किया था, इसी कारण बालक का नाम अरिष्टनेमि रखा गया। अरिष्टनेमि का निर्वाण स्थल उज्जयंतगिरि है। इनका लांछन शंख है।

23. **पा-र्वनाथः-** तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के समय में जैन धर्म का सुव्यवस्थित रूप सामने आता है। 30 वर्ष की आयु में पा-र्वनाथ गृहस्थ जीवन को त्यागकर तपस्या में लीन हो गये। 83 दिनों तक कठिन तपस्या के उपरान्त 84 वें दिन उन्हें सम्मेद पर्वत पर कैवल्य प्राप्त हुआ और वह तीर्थंकर हो गए, इसके पश्चात् लगभग 50 वर्षों तक श्रावस्ती, साकेत, कौशाम्बी, राजगृह, हस्तिनापुर आदि नगरों में भ्रमण करते हुए धर्मोपदे-ा करते रहे। 100 वर्ष की पूर्ण आयु में महावीर के देहावसान से लगभग 250 वर्ष पहले इनकी मृत्यु हो गयी।

24. **महावीरः-** महावीर का जन्म लगभग 599 ई0पू0 में वै-ाली के निकट स्थित कुण्डग्राम (मुजफ्फरपुर, बिहार) में हुआ था। इनका प्रारम्भिक नाम वर्द्धमान था और उनका अधिक प्रचलित नाम महावीर देवताओं द्वारा रखा गया था। माता-पिता के मृत्यु के बाद बड़े भाई नन्दिवर्धन की अनुमति प्राप्त कर 30 वर्ष की आयु में महावीर ने गृह त्याग दिया। 13 महीने तक सन्यासी जीवन व्यतीत करने के पश्चात् उनके वस्त्र जीर्ण होकर शरीर से गिर गये और नग्न घूमने लगे। वस्तुतः उन्होंने वस्त्रों का पूर्ण रूप से परित्याग कर दिया और दिगम्बर वे-ा अपना लिया। 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद 13वें वर्ष ऋजुपालिका नदी के तट पर शालवृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ, और वे जिन (अपनी इन्द्रियों और विषय वासनाओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाले), निर्ग्रन्थ (बन्धनों से रहित), केवलिन (सर्वज्ञ) तथा अर्हत (योग्य) हो गये। महावीर ने अपना 30 वर्षों का शेष सम्पूर्ण जीवन धर्म-प्रचारक के रूप में व्यतीत किया। 72 वर्ष की आयु में 527 ई0पू0 में पावा (पटना, बिहार) नामक स्थान पर उनकी मृत्यु हो गयी।

6. <u>प्रमुख जैन तीर्थ स्थल :-</u>

1. अयोध्याः- जैन परम्परा के अनुसार यहॉ सात कुलकरों तथा ऋषभदेव आदि पॉच तीर्थंकरों का जन्म हुआ इसलिए इस नगरी को जैन तीर्थ के रूप में जाना जाता है। बुद्ध और महावीर के समय अयोध्या को साकेत के रूप में जाना जाता था।

2. अहिच्छत्राः- अहिच्छत्रा की पहचान उ0प्र0 के बरेली जिले की ऑवला तहसील में स्थित रामनगर नामक स्थान से की जाती है। जिन प्रभसूरि ने यहॉ पार्श्वनाथ के प्राचीन चैत्य का वर्णन किया है।

3. काम्पिल्यः- काम्पिल्य की पहचान उ0प्र0 के फर्रूखाबाद जिले के अर्न्तगत कायमगंज रेलवे स्टेशन के समीप स्थित काम्पिल नामक स्थान से की जाती है। तेंरहवें तीर्थंकर विमलनाथ का जन्म यहीं पर हुआ था।

4. कौशाम्बीः- कौशाम्बी वत्स जनपद की राजधानी थी। इसकी पहचान उ0प्र0 के इलाहाबाद से दक्षिण-पश्चिम स्थित कोसम नामक स्थान से की जाती है। छठें तीर्थंकर पद्मप्रभु का जन्म, दीक्षा एवं केवल ज्ञान यहीं पर हुआ।

5. प्रयागः- प्रयाग उ0प्र0 के गंगा-यमुना के संगम पर स्थित है। यहॉ पर ऋषभदेव एवं शीतलनाथ के चैत्यालय है।

6. मथुराः- उ0प्र0 में स्थित मथुरा शूरसेन जनपद की राजधानी थी। यहॉ एक स्तूप एवं दो मंदिरो के खण्डहर प्राप्त हुए है।

7. वाराणसीः- यह उ0प्र0 में स्थित काशी जनपद की राजधानी थी। सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ एवं तेइसवें तीर्थकर पार्श्वनाथ का जन्म यहीं पर हुआ था।

8. श्रावस्ती :- यह उ0प्र0 के बलरामपुर बहराइच रोड पर स्थित है। यहॉ तीसरे तीर्थंकर सम्भवनाथ का जन्म हुआ था। महावीर स्वामी ने भी यहॉ पर कई यात्राऍ की थी।

9. हस्तिनापुर :- यह कुरू जनपद की राजधानी थी। यह उ0प्र0 के मेरठ जिले में स्थित है। यहॉ सोलहवें तीर्थंकर शान्तिनाथ, सत्तरहवें कुन्थुनाथ एवं अट्ठारहवें तीर्थकर अरनाथ का जन्म हुआ था।

10. कुण्डग्राम :- यह प्राचीन कालीन वैशाली का उपनगर था। इसकी पहचान बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बसाढ़ नामक स्थान से की जाती है। भगवान महावीर का जन्म यहीं पर हुआ था।

11. चम्पा :-बिहार के भागलपुर जिले में स्थित है। आज भी यह चम्पा के नाम से जानी जाती है। बारहवें तीर्थंकर वासुपूज्य का जन्म यहॉ हुआ था।

12. पाटलिपुत्र :-बिहार राज्य की राजधानी पटना प्राचीन कालीन पाटलिपुत्र ही है। यहॉ श्वेताम्बर तथा पॉच दिगम्बर जिनालय विद्यमान है। यहॉ स्थूलभद्र के स्मारक भी है।

13. पावापुरी :- यह जैनों का अत्यन्त प्रसिद्ध तीर्थ है। चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का निर्वाण पावापुरी में ही हुआ था। यह बिहार राज्य के नालन्दा जिले में स्थित है।

14. मिथिला :- उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लि एवं इक्कीसवें तीर्थंकर नेमिनाथ का जन्म यहीं पर हुआ था। मिथिला की पहचान बिहार के दरभंगा जिले के उत्तर में, नेपाल की सीमा पर स्थित आधुनिक जनकपुर नामक कस्बे से की जाती है।

15. सम्मेत शिखर :- यह बिहार के हजारीबाग जिले में स्थित है। यहॉ पर जैनियों के 24 तीर्थंकरों में से 20 को निर्वाण प्राप्त हुआ है।

16. चन्देरी :- यह मध्य प्रदेश के गुना जिले में बेतवा नदी पर स्थित है। यहॉ पर तीन जैन मंदिर है।

17. करहेटक :- यह राजस्थान के उदयपुर चित्तौड़ रेलवे मार्ग पर करेड़ा के समीप स्थित है। यहॉ पार्श्वनाथ का प्राचीन जिनालय हैं।

18. नन्दिवर्धन :- यह राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है। यहीं भगवान महावीर का एक जिनालय विद्यमान है।

19. सत्यपुर :- यह आजकल सांचोर नाम से जाना जाता है। यह राजस्थान प्रान्त के जोधपुर के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। यहॉ पॉच जिनालय है।

20. उर्जयन्तगिरि :- वर्तमान में गिरनार नाम से जाना जाता है। यह गुजरात में स्थित है। इक्कीसवें तीर्थंकर नमिनाथ के अन्तिम तीन कल्याणक दीक्षा, केवल ज्ञान एवं निर्वाण यहीं पर हुआ था।

21. काशह्रद :- इसकी पहचान गुजरात राज्य के अहमदाबाद के दक्षिण-पश्चिम में स्थित 'कासींदरा' नामक स्थान से की जाती है। यहॉ कादिनाथ का प्रसिद्ध जिनालय था।

22. तारण :- यह गुजरात के मेहसाणा जिले में स्थित है। यहॉ श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों के जिनालय है।

23. प्रभासपाटन :- इसकी पहचान गुजरात में स्थित सोमनाथ से की जाती है। यहॉ पर भगवान चन्द्रप्रभ के जिनालय स्थित है।

24. मोढेरक :- मोढेरक की पहचान गुजरात राज्य के मेहसाणा जिले में स्थित मोढेरा नामक स्थान से की जाती है। यहॉ पर महावीर स्वामी का जिनालय है।

25. वलभी :- वलभी की पहचान गुजरात राज्य के भावनगर जिले में स्थित वला नामक स्थान से की जाती है। यहॉ पार्श्वनाथ का जिनालय विद्यमान है।

26. सिंहपुर :- यहॉ अजितनाथ, कुन्थुनाथ एवं पार्श्वनाथ के जिनालय विद्यमान है। इसकी पहचान गुजरात राज्य के भावनगर जिले में स्थित सिंहोर नामक स्थान से की जाती है।

27. कोल्हापुर :- यह महाराष्ट्र का प्रमुख नगर है। यहॉ पर तीन जिनालय विद्यमान है। यहॉ के आचार्य जिनसेन भारकप्राचार्य अपने शिष्यों के साथ श्रवणबेलगोला चले गये जिसके परिणामस्वरूप इस तीर्थ का महत्व कम हो गया।

28. प्रतिष्ठान :- इसकी पहचान महाराष्ट्र प्रान्त के औरंगाबाद जिले में स्थित पैठन नामक स्थान से की जाती है। यहॉ 52 वीरों का स्थान है। जिससे यह वीर क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है।

29. श्रीपुर :- महाराष्ट्र राज्य के अकोला जिले में सिरपुर नामक स्थान पर स्थित है। यहॉ पार्श्वनाथ स्वामी का जिनालय है।

30. गोम्मटेश्वर :- कर्नाटक के श्रवणवेलगोला में स्थित गोम्मट प्रतिमा को गंग नरेश के सेनापति चामुण्ड राय द्वारा निर्मित कराया गया था। यह दिगम्बर जैनों का भी एक प्रमुख तीर्थ है।

7. <u>योजनाऍ एवं परियोजनाऍ</u> :-

1. **जैन दर्शन के ज्ञानमीमांसा सिद्वान्त का समीक्षात्मक अध्ययन नामक परियोजना के विभिन्न अंश निम्नलिखित है :-**
   1. जैन दर्शन की उत्पत्ति एवं विकास।
   2. जैन दर्शन का ज्ञानमीमांसा सिद्वान्त।
   3. प्रमाण का विश्लेषण।
   4. केवल ज्ञान।
   5. प्रत्यक्ष प्रमाण।
   6. परोक्ष प्रमाण।
   7. अनुमान।
   8. उपसंहार।

2. **जैन धर्म, दर्शन कला आदि विषयों की पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की संक्षेपिका निम्नलिखित खण्ड में विभक्त कर तैयार की गयी है:-**
   1. प्रथम खण्ड में जैन एवं दर्शन से संबंधित मूल ग्रन्थों की संक्षेपिका उनके प्रकाशक के नाम व पता, प्रकाशन का स्थान, प्रकाशन का वर्ष, आदि के विवरण के साथ है।

2. द्वितीय खण्ड में जैन धर्म एवं दर्शन से संबंधित आधुनिक ग्रन्थों की संक्षेपिका, उनके लेखक का नाम, प्रकाशक का नाम व पता, प्रकाशन का स्थान, प्रकाशन का वर्ष आदि के साथ है।
3. तृतीय खण्ड में विभिन्न शोध पत्र-पत्रिकाओं में जैन धर्म के विषयों से संबंधित लेखों की संक्षेपिका प्रस्तुत है।
4. चतुर्थ खण्ड में विभिन्न रिपोर्ट की सूची प्रस्तुत है।

8. <u>प्रकाशन</u> :-

1. संस्थान के जैन विद्या नामक जर्नल में निम्नलिखित शोध पत्र प्रकाशित किये गयेः-

1.	जैन विद्या की अध्ययन की तकनीक	सागरमल जैन
2.	सर्वोदय भाव-भूमि पर अनेकान्तवाद	फूलचन्द जैन प्रेमी
3.	भारत तथा विदेशों में जैन विद्या का अध्ययन : एक दृष्टि	गोकुल चन्द्र जैन
4.	शरीर में अतीन्द्रिय ज्ञान के स्थान	समणी नियोजिका मंगल प्रज्ञा
5.	वाङ्मय में प्रतिहार्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	धर्मचन्द्र जैन
6.	उत्तराध्ययन में रंग चिकित्सा पद्धति	समणी सन्मतिप्रज्ञा
7.	जैन संस्कृत एवं प्राकृत व्याकरण	राम सागर मिश्र
8.	जैन दर्शन का वैशिष्ट्य	विजय कुमार जैन
9.	प्राकृत के मुक्तक एवं खण्डकाव्य	सुदर्शन लाल जैन
10.	भगवान महावीर के नामों का विवेचन	हरिशंकर पाण्डेय
11.	अकलंकदेव कृत आप्तमीमांसाभाष्य एवं लघीयस्त्रय के उद्धरणों का अध्ययन	कमलेश कुमार जैन
12.	बीसवीं शताब्दी की जैन संस्कृत रचनाएँ उनका वैशिष्ट्य और प्रदेय	भागचन्द्र जैन "भागेन्दु"
13.	जैन योग और प्रदेय	शिवबहादुर सिंह
14.	काशी की जैन मूर्तियॉ	कमल गिरि
15.	द जैन स्तूप ऑफ वड्डामनु ए केस स्टडी	एम0 एल0 निगम
16.	जैन आइकोनोग्राफी इन कुषाण एज	मारूति नन्दन पी0 डी0 तिवारी
17.	जैन स्कल्पचर्स फ्राम हरियाणा	एस0 पी0 शुक्ला
18.	जैन आर्किटेक्चर एण्ड स्कल्पचरल आर्ट अण्डर द प्रतिहाराज	बृजेश शुक्ला
19.	द कलेक्टिव रिप्रेजेन्टेशन ऑफ आस्था मांगलिक मोटिफस इन इण्डियन आर्ट	ए0 एल0 श्रीवास्तव
20.	नेमिनाथ, इन सेन्ट्रल इण्डियन आर्ट	अमर सिंह
21.	ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ जैन एण्ड	रश्मि कला अग्रवाल

	नान-जैन इलस्टेसन्स ऑफ फिफ्टीन सेन्चुरी इन द वेर्स्टन इण्डियन स्टाइल	
22.	आस्पेक्ट ऑफ ट्रेड एज ग्लीनेड फ्राम जैन वर्क्स आफ टेन्थ सेन्चुरी	श्याम मनोहर मिश्र

2. जैन, बौद्ध योग दर्शन तथा योग चिकित्सा विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार कराया गया।
जैन विद्वानों द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित शोध पत्रों का प्रकाशन किया गया :-

1.	भारतीय दर्शन का साधना पक्ष योग	डा0 अशोक कुमार सिंह दर्शनशास्त्र, विभाग, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
2.	बुद्धिस्ट योग में साधना और उसका पर्यावरण संरक्षण में महत्व	डा0 संजय कुमार पाण्डेय पर्यटन विभाग, (भूगोलविभाग) दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
3.	हृदय की धमनियों के सुधार में योग क्रिया का महत्व	डा0 अमरजीत यादव प्रवक्ता, योग एवं प्रोंतिक विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
4.	बौद्ध नीति एवं उसका नैतिक प्रभाव	डा0 कंचन सक्सेना दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
5.	विज्ञप्ति मात्रता-एक मात्र सत्	डा0 रजनी श्रीवास्तव प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
6.	जैन धर्म में योगतत्व	डा0 ईश्वर भारद्वाज प्रो0 एवं अध्यक्ष, मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तरॉचल
7.	पांतजल योग सूत्र के अनुसार समाधि	प्रो0 सुरेश वर्णवाल, योग विभाग, देव संस्ंत विश्वविद्यालय, गायत्री कुंज शान्तिकुंज, हरिद्वार (उत्तरांचल)
8.	चाइनीज बुद्विस्ट योग का मानसिक एवं अध्यात्मिक प्रभाव	डॉ0 राहुल राज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
9.	बौद्ध धर्म एवं चिकित्सा विज्ञान	डॉ0 रेणु शुक्ला वरिष्ठ प्रवक्ता, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्ंति एवं पुरातत्व विभाग कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, देहरादून
10.	बौद्ध धर्म का मानव विकास में योगदान	डॉ0 मोहित टण्डन दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
11.	विपश्यनाः बौद्ध साधना की प्रक्रिया	डॉ0 सुभाष चन्द्र प्रवक्ता, दर्शन शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
12.	जैन योग में ध्यान विषयक अवधारणा	डॉ0 जय प्रकाश शाक्य

		विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, शासकीय महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर (म0प्र0)
13.	जैन दर्शन एवं अहिंसा का सम्प्रत्यय	डॉ0 राजेश्वर प्रसाद यादव प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
14.	योग-साधना का ऐतिहासिक परिदृश्य	डॉ0 अमर सिंह रीडर, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
15.	जैन योग में ध्यान साधना	डॉ0 राकेश सिंह, आचार्य नरेन्द्र देव अ0 बौद्ध विद्या शोध संस्थान, गोमतीनगर, लखनऊ
16.	योग और चिकित्सा	डॉ0 धीरेन्द्र सिंह, आचार्य नरेन्द्र देव अ0 बौद्ध विद्या शोध संस्थान, गोमतीनगर, लखनऊ
17.	बौद्ध एवं जैन धर्म में योग साधना	भिक्षु (डॉ0) जूलम्पिटिये पुन्नासार थेरो आचार्य नरेन्द्र देव अ0 बौद्ध विद्या शोध संस्थान, गोमतीनगर, लखनऊ

09. वित्तीय वर्ष 2018-19 में संस्थान के सम्पन्न एवं प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरणः-

1. 14 अप्रैल, 2018 को बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती के अवसर पर भाशण एवं पेन्टिग प्रतियोगिता सम्पन्न।
2. 29 जुलाई, 2018 कों वीर :ाासन जयन्ती के उपलक्ष्य में संगोश्ठी सम्पन्न।
3. 08 सितम्बर, 2018 को 'महावीर जीवन दर्शन' पर आधारित पेन्टिग, निबन्ध एवं भाशण प्रतियोगिता, पावानगर, महावीर इण्टर कालेज, कु-ीनगर में सम्पन्न।
4. 30 सितम्बर, 2018 को वि-व मैत्री पर्व (क्षमावाणी पर्व) पर संगोष्ठी सम्पन्न।
5. 25 दिसम्बर, 2018 को भारत रत्न श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी के 95वीं जयन्ती के अवसर पर पेन्टिग एवं भाशण प्रतियोगिता प्रस्तावित।
6. जनवरी, 2019 में लखनऊ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार प्रस्तावित।
7. 31 जनवरी, 2019 को संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर संगोष्ठी, पेन्टिग एवं सांर्सेतिक कार्यक्रम प्रस्तावित।
8. फरवरी, 2019 में राश्ट्रीय सेमिनार प्रस्तावित।
9. मार्च, 2019 में ऋशभदेव जयन्ती के अवसर पर संगोष्ठी प्रस्तावित।

10. वित्तीय वर्ष 2019-20 में संस्थान के प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरणः-

1. 14 अप्रैल, 2019 को बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती के अवसर पर भाषण एवं पेन्टिग प्रतियोगिता प्रस्तावित।
2. अप्रैल, 2019 को महावीर जयन्ती के अवसर पर संगोश्ठी एवं सांर्सेतिक कार्यक्रम प्रस्तावित।
3. जुलाई, 2019 कों वीर :ाासन जयन्ती के उपलक्ष्य में संगोश्ठी प्रस्तावित।
4. सितम्बर, 2019 को 'महावीर जीवन द-ान' पर आधारित पेन्टिग, निबन्ध एवं भाशण प्रतियोगिता, प्रस्तावित।
5. सितम्बर, 2019 को वि-व मैत्री पर्व (क्षमावाणी पर्व) पर संगोश्ठी प्रस्तावित।
6. 25 दिसम्बर, 2019 को भारत रत्न श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी के 96वीं जयन्ती के अवसर पर पेन्टिग एवं भाशण प्रतियोगिता प्रस्तावित।
7. जनवरी, 2020 में लखनऊ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राश्ट्रीय सेमिनार प्रस्तावित।

8. 31 जनवरी, 2020 को संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर संगोश्ठी, पेन्टिग एवं सांसेंतिक कार्यक्रम प्रस्तावित।
9. फरवरी, 2020 में राश्ट्रीय सेमिनार प्रस्तावित।
10. मार्च, 2020 में ऋशभदेव जयन्ती के अवसर पर संगोष्ठी प्रस्तावित।

लोक एवं जनजाति कला एवं संस्कृति संस्थान

उत्तर प्रदेश के जनजातीय एवं लोक संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रदर्शन हेतु लोक एवं जनजाति कला एवं संस्कृति संस्थान की स्थापना सन् 1986 में की गई थी जिसके द्वारा लोक संस्कृति की लुप्त होती विधाओं को मंच प्रदान करना, इनमें संबंधित सर्वेक्षण/दस्तावेजीकरण आदि का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है। संस्थान द्वारा नियमित मासिक श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है।इस वर्ष संस्थान द्वारा लुप्तप्राय कला रूपों तथा लोक रूपों तथा लोक संस्कृति के विविध पक्षो का सर्वेक्षण एवं दस्तावेजी करण प्राथमिकताओं पर रहा है:-

उद्देश्य

1. उ0प्र0 की लोक और जनजाति कलाओं एवं शिल्पों का संयोजन एवं विकास।
2. लोक कलाओं, संस्कृति एवंशिल्प के क्षेत्र में शोध का विकास एवं बढ़ावा देना, इसके लिए पुस्तकालय, अभिलेखागार, संग्रहालय, पुस्तकों, टेपरिकार्ड्स आदि स्थापित करना।
3. लोककलाओं, संस्कृति एवं शिल्प विकास हेतु भारत की अन्य संस्थाओं एवं विदेश से सहयोग।
4. विभिन्न क्षेत्रो की लोक एवं जनजाति कला, संस्कृति, शिल्प की तकनीक एवं आदर्शो का आदान-प्रदान।
5. ऐसी संस्थाओं की स्थापना को बढ़ावा जोकि लोक एवं जनजाति कला, शिल्प एवं संस्कृति के संरक्षण तथा विकास हेतु प्रशिक्षण देना।
6. लोक एवं जनजाति कला, शिल्प एवं संस्कृति के क्षेत्र में सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण एवं प्रचार को बढ़ावा देना।
7. लोक एवं जनजाति कला, शिल्प एवं संस्कृति के क्षेत्र में सेमिनार कार्यशाला का आयोजन तथा शोध एवं सर्वेक्षण हेतु अनुदान देना।
8. जनजाति एवं लोककला का कार्य संगीत, नृत्य एवं नाटक, त्योहारों तथा शिल्प में लोको राज्य तथा राज्य के बाहर प्रायोजित करना।

वर्ष 2019-20 में प्रस्तावित कार्यक्रम

क्र0	कार्यक्रम का विवरण	स्थान	माह
1	ब्रज की गोबर कला पर कार्यशाला, प्रस्तुति एवं प्रदर्शन	मथुरा, ब्रज क्षेत्र	मई, जून-2019
2	विरहा, चैती, चैता	उन्नाव, आजमगढ़, बांदा, अवध, पूर्वांचल, बुन्देलखंड क्षेत्र	जुलाई-2019
3	रागिनी कम्पटीशन	गौतमबुद्ध नगर (नोएडा), पश्चिम क्षेत्र	अगस्त-2019
4	आल्हा दंगल	लालगंज, अवध क्षेत्र	सितम्बर-2019
5	कजरी दंगल	मिर्जापुर, पूर्वांचल	अक्टूबर-2019
6	नौटंकी, कार्यशाला/प्रस्तुति	प्रतापगढ़, अवध क्षेत्र	नवम्बर-2019
7	थारू लोक सर्वेक्षण /कार्यशाला प्रस्तुति	बलरामपुर (गोण्डा), लखीमपुर, अवध क्षेत्र	दिसम्बर-2019

8	करमा प्रस्तुति एवं सर्वेक्षण	सोनभद्र, पूर्वांचल क्षेत्र	जनवरी–2020
9	लोक उत्सव	लखनऊ, अवध क्षेत्र	फरवरी–2020
10	विशेष होली उत्सव	मथुरा, वृन्दावन, बृज क्षेत्र	फरवरी, मार्च–2020
11	अन्य व्यय	–	–

राष्ट्रीय कथक संस्थान, लखनऊ

वित्तीय वर्ष 2018-2019 में सम्पन्न किये गये कार्यकलापों का विवरण

राष्ट्रीय कथक संस्थान की स्थापना संस्कृति विभाग के अर्न्तगत स्वायत्तशासी संस्थान के रुप में वर्ष 1988-89 में हुई थी। संस्थान का उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर कथक के विविध घरानों की परम्पराओं का अभिलेखीकरण, युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन, वरिष्ठ कलाकारों का संरक्षण, कथक नृत्य का संवर्द्धन एवं लुप्त हो गये व नवीन पक्षों पर शोध और कथक संग्रहालय की स्थापना है।

1. मासिक कथक संध्या

राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा वर्ष 2001 से प्रत्येक माह के तृतीय शुक्रवार को अनवरत कथक संध्या का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्रतिभावान उद्दीयमान नवोदित एवं वरिष्ठ कलाकारों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का सुनहरा अवसर प्रदान किया जाता है। चालू वित्तीय वर्ष 2018-2019 में की गई कथक संध्याओं का विवरण इस प्रकार है-

क्र0	दिनांक	कलाकारों का नाम	स्थान
1.	20.04.18	सुश्री दीप्ति शर्मा, नई दिल्ली	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
2.	18.05.18	सुश्री उर्मिला शर्मा, इलाहाबाद	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
3.	15.06.18	सुश्री रूद्रशंकर मिश्र, वाराणसी	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
4.	20.07.18	सुश्री नीलाक्षी राय, नई दिल्ली।	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
5.	28.08.18	राष्ट्रीय कथक संस्थान, लखनऊ।	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
6.	21.09.18	सुश्री अदिति थपलियाल एवं समूह, लखनऊ।	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
7.	19.10.18	पं0 माता प्रसाद मिश्र, वाराणसी।	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
8.	16.11.18	सुश्री प्रिया एवं शिवम्, नृत्य निर्देशन-श्रीमती बीना सिंह, लखनऊ।	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह

2. कथक बाल उत्सव

कथक संस्थान के अतिरिक्त कथक नृत्य का प्रशिक्षण प्रदान करने वाले प्रदेश की अन्य संस्थाओं के शिक्षार्थियों द्वारा प्रतिवर्ष एक कथक बाल उत्सव का संस्थान द्वारा आयोजन किया जाता है। इस बाल उत्सव के अन्तर्गत बाल, युवा एवं किशोर वर्ग के कथक शिक्षार्थियों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का सुनहरा अवसर दिया जाता है। जिसके अन्तर्गत दिनांक 11 नवम्बर, 2018 को 'संगीत सौन्दर्य' का आयोजन स्थानीय राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, लखनऊ में किया गया, जिसके अन्तर्गत लगभग 100 बच्चों ने अपनी प्रतिभा का सफल प्रदर्शन किया।

3. शिक्षण

चालू वित्तीय वर्ष 2018-2019 में 6 से 28 वर्ष तक की छात्र/छात्राओं को प्रवेश देकर शिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा स्नातक एवं परास्नातक स्तर की शिक्षा एवं परीक्षा दिलायी गयी।

4. प्रादेशिक कथक आयोजन

राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा लखनऊ के अतिरिक्त प्रदेश के अन्य मण्डलों में भी कथक के प्रति अभिरुचि जागृत करने का प्रयास किया जाता है। चालू वित्तीय वर्ष 2018-2019 में माह अप्रैल 2018 से अबतक तक निम्नवत् प्रादेशिक कथक कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया :-

1. दिनांक 27 अप्रैल, 2018, - उन्नाव।
2. दिनांक 27 जुलाई, 2018 - लखनऊ।
3. दिनांक 15 सितम्बर, 2018 - मथुरा।
4. दिनांक 15 नवम्बर, 2018 - सीतापुर।

5. कथक यात्रा

वित्तीय वर्ष 2018-2019 में कथक संस्थान द्वारा किये गये प्रायोजित/आयोजित कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 26 अगस्त, 2018 को 'पायलिया' एवं दिनांक दिनांक 17 नवम्बर, 2018 को 'नूपुर निनाद' विशिष्ट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में देश-विदेश से आये शोधकर्ताओं एवं साहित्यकारों द्वारा भूरि-भूरि सराहना प्राप्त हुयी एवं कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर एवं महानुभावों तथा जनता का भरपूर प्रोत्साहन मिला।

6. यंग प्रोफेशनल ग्रूमिंग कोर्स (कार्यशाला)

इसका उद्देश्य देश के सुप्रसिद्ध कथक आचार्यो द्वारा बाल एवं युवा कलाकारों को नृत्य का उच्च तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना तथा उन्हें कथक के बहुआयामों से परिचित कराना है। कथक संस्थान द्वारा समय-समय पर देश के सुप्रसिद्ध एवं वरिष्ठ कथक आचार्यो को आमंत्रित करके प्रदेश के कथक क्षेत्र के बाल एवं युवा कलाकारों को नृत्य का उच्च तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रकार उनकी प्रतिभा को निखारने का अनूठा प्रयास निरन्तर संस्थान द्वारा किया जा रहा है। प्रशिक्षित बाल एवं युवा कलाकारों को प्रस्तुतियां तैयार करने का अवसर भी प्रदान किया जाता है ताकि युवा कलाकारों की प्रतिभा में परिपक्वता आ सके। इस अनूठे एवं सार्थक प्रयास से अनेकों युवा कलाकार लाभान्वित हो रहे हैं और अनुभवी कलाकारों के सानिध्य से लाभ प्राप्त कर स्वयं शिक्षण संस्थानों में अपने अनुभवों का प्रसार कर रहे हैं। संस्थान के इस योगदान से कथक का सच्चे अर्थो में प्रचार प्रसार जन जन तक पहुँच रहा है। इसी क्रम में वर्ष 2018-19 में दिनांक 06 अगस्त, 2018 से 13 अगस्त, 2018 तक कथक कार्यशाला संचालित की गयी। उक्त कार्यशाला में भगवान श्रीकृष्ण के अनेक रूपों तथा कथक एवं लोक संगीत के मिश्रण पर आधारित **'नाचत सूदन'** कथक नृत्य प्रस्तुति तैयार करायी गयी।

7. कथक प्रवाह

''कथक प्रवाह'' के अन्तर्गत कथक की विशेषताओं को संरक्षित रखने हेतु प्रदेश स्तरीय कथक संवर्धन किया जाता है। इससे कथक की छात्रायें एवं युवा कलाकार कथक के तकनीकी पक्ष एवं बारीकियों को समझ पाते हैं। जिससे उत्तर भारत के एकमात्र शास्त्रीय नृत्य ''कथक'' की लोकप्रियता बनी रहे। इसी उद्देश्य से निम्नवत् स्थानों पर कथक प्रवाह के आयोजन सम्पन्न कराये गये:-

क्र0	दिनांक	कार्यक्रम	स्थान
1	14.04.2018	नृत्य सौन्दर्य	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, लखनऊ।
2	12.10.2018	पायलिया	अब्दुल कलाम टेक्निकल विश्वविद्यालय, लखनऊ।
3	26.11.2018	आयाम	डॉ राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय, लखनऊ।

वर्ष 2018-19 में प्रस्तावित कार्यक्रम का विवरण

8. राष्ट्रीय कथक समारोह 'विरासत' (किसी विशिष्ट विषय को आधार बनाते हुए प्रतिवर्ष एक नवीन अवधारणा पर आधारित मौलिक प्रयास)

कथक मानवता का सुन्दर सन्देश पहुंचाने वाली नृत्य विधा है। नृत्य के माध्यम से समाज में जागरुकता लाने की दृष्टि से कथक संस्थान ने एक मौलिक प्रयास किया, जिसके अन्तर्गत एक नई विचारधारा, अवधारणा एवं नई सोच के साथ राष्ट्रीय कथक समारोह-'विरासत' की परिकल्पना की गई जिसे प्रतिवर्ष प्रदेशवासियों के समक्ष आयोजित

किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2018-19 में दिनांक 28 एवं 29 दिसम्बर, 2018 में राष्ट्रीय कथक समारोह 'विरासत' कराया जाना प्रस्तावित है।

9. संगीत संगम

राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा कार्यशाला के समापन पर 'संगीत संगम' नामक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसका उद्देश्य प्रशिक्षार्थियों की प्रतिभा को निखारना एवं उन्हें मंच के प्रति जागरुक बनाना हैं। चालू वित्तीय वर्ष 2018-2019 में माह जनवरी, 2019 में कराया जाना प्रस्तावित है।

10. कथक शिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं की वार्षिक प्रस्तुति 'रुनझुन'

कथक प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं का मंच के प्रति आत्मविश्वास जागृत करने तथा उन्हें प्रस्तुतिकरण के प्रति जागरुक बनाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 'रुनझुन' कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। चालू वित्तीय वर्ष 2018-2019 में माह जनवरी, 2019 में कराया जाना प्रस्तावित है।

11. मासिक कथक संध्या

दिनांक 21 दिसम्बर, 2018 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह

दिनांक 18 जनवरी, 2019 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह

दिनांक 15 फरवरी, 2019 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह

दिनांक 15 मार्च, 2019 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह

12. पं0 बिन्दादीन महाराज राष्ट्रीय कथक उत्सव 'रसरंग'

यह राष्ट्रीय कथक संस्थान का वार्षिक आयोजन है जिसमें प्रतिवर्ष प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा कथक में हो रहें नवीन प्रयोग एवं परम्परा का प्रस्तुतिकरण होता है। इस क्रम में माह 14 एवं 15 मार्च, 2019 में पं0 बिन्दादीन महाराज राष्ट्रीय कथक उत्सव 'रसरंग' कराया जाना प्रस्तावित है।

13. राष्ट्रीय कथक संगोष्ठी - व्याख्यान एवं डिमॉन्सट्रेशन

यह राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा वार्षिक आयोजन है, जिसके अन्तर्गत देश के ख्यातिवद्ध कलाकारों में से गुरूओं को आंमत्रित कर कथक के गूढ़ परम्परा पर विभिन्न व्याख्यानों का निर्वाह किया जाता है एवं इसके अतिरिक्त कथक के सूक्ष्म नृत्त पक्ष को शिक्षार्थियों को प्रेरणा एवं नये आयाम देनें की सफल प्रयास किया जाता है। इसी क्रम में माह 21 दिसम्बर, 2018 में कथक संगोष्ठी किया जाना प्रस्तावित है।

14. प्रादेशिक कथक आयोजन

राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा लखनऊ के अतिरिक्त प्रदेश के अन्य मण्डलों में भी कथक के प्रति अभिरुचि जागृत करने का प्रयास किया जाता है। इस क्रम में निम्नवत् प्रादेशिक कथक आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।

दिनांक 26 दिसम्बर, 2018 को बाराबंकी
दिनांक 23 जनवरी, 2019 को वाराणसी
दिनांक 19 फरवरी, 2019 को झॉसी
दिनांक 05 मार्च, 2019 को इलाहाबाद

15. कथक प्रवाह

''कथक प्रवाह'' के अन्तर्गत कथक की विशेषताओं को संरक्षित रखने हेतु प्रदेश स्तरीय कथक संवर्धन किया जाता है। इससे कथक की छात्रायें एवं युवा कलाकार कथक के तकनीकी पक्ष एवं बारीकियों को समझ पाते हैं। जिससे उत्तर भारत के एकमात्र शास्त्रीय नृत्य ''कथक'' की लोकप्रियता बनी रहे।

16. अन्तर्राज्यीय कथक संवर्धन 'परस्पर'

उत्तर प्रदेश की एकमात्र शास्त्रीय नृत्य विधा 'कथक' का अन्य राज्यों से परस्पर समन्वय कराते हुए उत्तर भारत के एकमात्र शास्त्रीय नृत्य का राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन संस्थान की गतिविधियों में शामिल है। गत वर्षों में दिल्ली, बिहार, पश्चिमी बंगाल, मध्य प्रदेश के कलाकारों से प्रदेश के कलाकारों का 'परस्पर' कथक नृत्य आयोजन के तहत सामन्जस्य कराया गया। इसके द्वारा प्रदेश के कथक कलाकार अन्य प्रदेशों के कलाकारो की नृत्य परम्पराओं की व्यापकता, शास्त्रीयता एवं मौलिक प्रयोगों का आदान-प्रदान कर सके और साथ ही उन्होंने अन्य प्रदेशों के कलाकारों की विशिष्ट कला तकनीकों को समझा, उन्हें अपनी कला सूक्ष्मता से परिचित कराया और अन्य स्थानों की कलाओं को ग्राह्य करने का प्रयास करते हुए आपसी तालमेल स्थापित कराया गया। उस क्रम में में अन्तर्राज्यीय कथक संवर्धन 'परस्पर' कराया जाना प्रस्तावित है।

17. अभिलेखीकरण

राष्ट्रीय कथक अनुष्ठान में सर्वेक्षण से प्राप्त विचारों, शोध परक गोष्ठी द्वारा प्राप्त ज्ञान को संकलित कर उसका अभिलेखीकरण किया जाएगा। इस के अन्तर्गत राष्ट्रीय स्तर पर सर्वेक्षण से प्राप्त अभिलेखों से सम्बन्धित लेख, चित्र, पाण्डुलिपि इत्यादि के सुरक्षित संकलन तथा प्राप्त सूचनाओं के सूचीकरण कर विवरणों के दर्ज करने का कार्य कराया जाएगा। सूचना के अभिलेखीकरण तथा सूचीकरण का कार्य सम्पादित किया जाएगा, तथा आधुनिक तकनीकी द्वारा प्राप्त अभिलेखों को संरक्षित रखने का कार्य किया जाएगा।

18. प्रकाशन

कथक कलाकारों के जीवन वृत्त एवं कथक से सम्बन्धित विषयों का कथक संस्थान द्वारा प्रकाशन किया जाना प्रस्तावित है।

वर्ष 2019-20 से प्रस्तावित गतिविधियों का विवरण

क्र0	कार्यक्रम का नाम
1.	मासिक कथक संध्या
2.	प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एवं कार्यशाला
3.	प्रादेशिक कथक आयोजन (कार्यशाला, व्याख्यान इत्यादि प्रस्तुतिकरण 12 जिलो/मण्डलों में आयोजन)
4.	राष्ट्रीय कथक समारोह 'विरासत' (किसी विशिष्ट विषय को आधार बनाते हुये प्रतिवर्ष एक नवीन अवधारणा पर आधारित मौलिक प्रयास) एवं कथक आचार्यों का व्याख्यान
5.	अन्तर्राज्यीय एवं राज्यीय कथक संवर्धन 'परस्पर' (किन्ही दो राज्यों में)
6.	कथक बाल उत्सव
7.	राष्ट्रीय कथक संगोष्ठी
8.	कथक यात्रा (कार्यशालाए, व्याख्यान, संगोष्ठी एवं अन्य आयोजन)
9.	यंग प्रोफेशनल ग्रूमिंग कोर्स
10.	प्रस्तुति निर्माण
11.	संगीत प्रवाह
12.	प्रकाशन (संस्थान की स्मारिका "अनुष्ठान" एवं अन्य)
13.	पं0 बिन्दादीन महाराज स्मृति उत्सव 'रसरंग'
14.	संरक्षण/अनुरक्षण/सर्वेक्षण
15.	अभिलेखिकरण
16.	राष्ट्रीय कथक अनुष्ठान
17.	कथक एवं संगीत प्रतियोगिता
18.	कथक संग्रहालय/सभागार/प्रेक्षागृह/खुला मंच की स्थापना एवं उक्त स्थानों मे कथक गतिविधियॉ कराया जाना

19	कथक एवं अन्य विधाओं के आचार्यों एवं संगीत संरक्षकों का सम्मान समारोह
20.	'छात्रवृत्ति' (प्रतिभाशाली एवं निर्धन छात्र-छात्राओं हेतु)
21.	कार्यशाला (मासिक एवं वार्षिक) प्रदेश कें किन्ही दो जिलों मे।
22.	शोध कार्य हेतु लखनऊ विश्वविद्यालय के मानकों के अनुसार पैनल का गठन एवं क्रियान्वयन।

कला एवं कलाकारों का सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण एवं वृद्ध कलाकारों को सहायता योजना

प्रदेश की लोक परम्पराओं को संरक्षित रखने के उद्देश्य से उनका वीडियो अभिलेखीकरण, योग्य छात्रों को कला एवं संस्कृति की व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये आर्थिक सहायता दिये जाने की तथा वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों को आर्थिक सहायता योजना प्रचलन में है।

तहसील स्तर के कस्बों में प्रेक्षागृहों/खुले मंचो का निर्माण

महानगरों एवं नगरों में किसी न किसी प्रकार सांस्कृतिक गतिविधियॉं संचालित रहती हैं तथा मनोरंजन के कुछ न कुछ साधन उपलब्ध रहते हैं। प्रदेश के तहसील स्तर के कस्बों में प्रेक्षागृह/खुले मंचों का निर्माण कराया जा रहा है।

फिल्मों का विकास (डाक्यूमेंट्री आडियो विजुअल)

प्रदेश के विपुल सांस्कृतिक धरोहर को जनमानस के लिये संरक्षित व प्रचारित-प्रसारित करने के लिये कला के विविध रूपों एवं प्रदेश के सुविख्यात कलाकारों को डाक्यूमेंट्री फिल्म का निर्माण की योजना गत वित्तीय वर्ष की भांति इस वर्ष भी करायी जानी है।

लोक कलाकारों को वाद्ययंत्रों के क्रय हेतु आर्थिक सहायता

प्रदेश के लोक कलाकारों को उनके कला प्रदर्शन में गुणात्मक सुधार के लिये वाद्ययंत्रों के क्रय के लिये उन्हें आर्थिक सहायता दिये जाने की योजना क्रियान्वित की जा रही है।

कल्चरल क्लब की स्थापना

प्रदेश की लोक कलाओं के संरक्षण एवं उन्नयन तथा लोक संस्कृति की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिये लोक कलाकारों के उन्नयन के लिये प्रशिक्षण हेतु स्कूलों/विद्यालय आदि में कल्चरल क्लब की स्थापना की जायेगी।

मा0 अटल बिहारी बाजपेयी की स्मृति संकुल की स्थापना

मा0 अटल बिहारी बाजपेयी की स्मृति में सांस्कृतिक समारोह आदि के आयोजन हेतु लखनऊ मुख्यालय में स्मृति संकुल का निर्माण कराया जा रहा है।

सार्वजनिक रामलीला स्थलों में चाहरदिवारी का निर्माण

रामलीला की पौराणिकता, अध्यात्मिकता एवं विरासत को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने के दृष्टिगत प्रदेश के रामलीला मैदानों की चाहरदीवारी का निर्माण कराये जाने की योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह का जीर्णोद्धार

लखनऊ के कैसरबाग हैरिटेज जोन में स्थित राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह के भवन की सांस्कृतिक एवं गरिमामय विरासत को संरक्षित एवं संवर्द्धित रखने के दृष्टिगत उक्त प्रेक्षागृह का जीर्णोद्धार कराया जा रहा है।

गुरू गोरक्षनाथ शोध पीठ संस्थान, गोरखपुर की स्थापना

पं0 दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में गुरू गोरक्षनाथ शोध पीठ संस्थान की स्थापना का कार्य कराय जा रहा है।

पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी के स्मृति भवन की स्थापना

पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी की जन्मस्थली गढ़कोला उन्नाव में विशाल स्मृति भवन, पुस्तकालय एवं अन्य संरचना का निर्माण कार्य कराया जा रहा है।

भाग – 2
पुरातत्व निदेशालय

भूमिका

उत्तर दिशा में नगाधिराज हिमालय, दक्षिण में विन्ध्य पर्वत श्रेणियों से घिरा, पश्चिम में यमुना और अरावली से लगा और पूरब में सदानीरा-गंगा-सोन संगम और बिहार के भोजपुर जिले तक विस्तृत उत्तर प्रदेश में प्रस्तर युग से ही अनवरत रूप से पुष्पित-पल्लवित मानवीय सभ्यता ने लाखों वर्ष में यहां की संस्कृति को एक विशेष स्वरूप प्रदान किया है।

प्राचीन देवभूमि, आर्यावर्त्त और मध्य देश, मोरिय, कोलिय, मल्ल और शाक्य आदि गणतंत्र, कोशल, काशी,कुरू, पंचाल, सूरसेन और वत्स महाजनपद इसी पा भूमि पर स्थित रहे हैं। गंगा-यमुना के स्रोत बद्री-केदार ज्योतिर्मठ, अयोध्या, मथुरा और तीन लोक में न्यारा भोले बाबा का धाम काशी, गंगा-यमुना के बीच बसे प्रयागराज, कौशाम्बी, कालिंजर और देवगढ़, जौनपुर, आगरा और सीकरी, लखनऊ और फैजाबाद न केवल इस प्रदेश के वरन् सारे देश की अस्मिता के ऐसे अंग हैं जिनके बिना देश की पहचान नहीं बनती । वह प्रदेश है जहां की माटी पर पल कर राम, कृष्ण जैसे अवतारी पुरूषों ने ऐसी लीलाएं दिखलायीं और शाक्य सिंह, गौतम बुद्व ने शान्ति का ऐसा उद्घोष किया कि समस्त भारतीय उप महाद्वीप ही नहीं हिन्दूकुश के उस पार वक्ष (आक्सस) नदी के आस-पास, ब्रह्म देश (बर्मा) के पूरब वियतनाम और जावा-सुमात्रा-बाली, उत्तर में चीन, कोरिया, जापान और तिब्बत और दक्षिण समुद्र में लंका तक पूजे जाने लगे। कबीर, सूर, तुलसी, रसखान और नरोत्तम दास की यह पावन भूमि सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक महत्व के अवशेषों की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है।

प्रदेश की पुरातात्त्विक सामग्री और स्थलों/स्मारकों के संरक्षण, यथावश्यक पुरास्थलों के उत्खनन, पुरातत्व विषयक प्रकाशन तथा पुरातत्त्व और पुरास्थलों में लोकरूचि जगाने के उद्देश्य से 1951 में लखनऊ में पुरातत्व विभाग की स्थापना की गयी। सन् 1979-80 में लखनऊ के बाहर कुमाऊं और गढ़वाल क्षेत्रों के लिए पहली क्षेत्रीय इकाई गठित हुई। नवें दशक में पौड़ी गढ़वाल और झांसी तथा तत्पश्चात् आगरा, गोरखपुर, वाराणसी और इलाहाबाद में भी क्षेत्रीय पुरात्त्व इकाईयां स्थापित की गयीं। राज्य में पुरातत्व सम्बन्धी गतिविधियों को और अधिक गति प्रदान करने हेतु 27 अगस्त, 1996 को निर्गत संस्कृति अनुभाग की अधिसूचना संख्या 2558/चार-96-6(2)/96, द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व संगठन का नाम 'उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व विभाग' तथा निदेशक, उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व संगठन को स्वतंत्र विभागाध्यक्ष घोषित करते हुए सचिव, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश शासन के अधीन रखा गया है।

विभाग द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस सत्र में प्रदेश के जालौन, चित्रकूट, उन्नाव एवं जौनपुर जिले में पुरातात्विक सर्वेक्षण कराया जा रहा है। प्रदेश के इतिहास के अल्पज्ञात पक्षों की जानकारी के लिए विभाग द्वारा मनवाडीह (सीतपुर), जाजमऊ (कानपुर), हुलासखेड़ा एवं दादूपुर (लखनऊ) , शनिचरा(सुल्तनपुर), मूसानगर (कानपुर), राजा नल का टीला, नई डीह एवं भगवास (सोनभद्र), मलहर (चन्दौली),लहुरादेवा (संत कबीर नगर), पुरवा उदयी (औरैया) एवं सोनिक (उन्नाव) में पुरातात्विक उत्खनन कराये गये हैं। प्रदेश के राज्य संरक्षित स्मारकों के परिरक्षण /अनुरक्षण के कार्य कराने के अतिरिक्त शोध कार्य को बढावा देने के लिए एक वार्षिक शोध पत्रिका प्रकाशित कराने तथा जनचेतना जागृत करने हेतु शैक्षिक कार्यक्रमों के आयोजन भी कराये जा रहे हैं।

उ0प्र0 राज्य पुरातत्व निदेशालय, लखनऊ

सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में पुरातात्त्विक गतिविधियों का संचालन उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व निदेशालय द्वारा किया जाता है। पुरातत्व निदेशालय के अन्तर्गत गठित क्षेत्रीय इकाईयों के कार्यों पर नियंत्रण, प्रदेश के विभिन्न भागों में बिखरी पुरासम्पदा की खोज हेतु सर्वेक्षण, महत्वपूर्ण पुरास्थलों का उत्खनन, राज्य संरक्षित स्मारकों/स्थलों का अनुरक्षण व रख-रखाव, एवं पुरावशेषों के प्रति जन चेतना जागृत करना पुरातत्व निदेशालय के प्रमुख उद्देश्य हैं।

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल
1	निदेशक	01	वेतन बैण्ड-3 15600-3910	7600	लेवल-12
2	उपनिदेशक	01	वेतन बैण्ड-3 15600-3910	6600	लेवल-11
3	उत्खनन एवं अन्वेषण अधिकारी	02	वेतन बैण्ड-3 15600-3910	5400	लेवल-10
4	पुरातत्त्व अभियन्ता	01	वेतन बैण्ड-3 15600-3910	5400	लेवल-10
5	सहायक लेखाधिकारी	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4800	लेवल-8
6	सहायक पुरातत्त्व अधिकारी	06	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4600	लेवल-7
7	फोटो अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4600	लेवल-7
8	प्रशासनिक अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4600	लेवल-7
9	प्रकाशन सहायक	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
10	संरक्षण सहायक	03	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
11	लेखाकार	02	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
12	प्रधान सहायक	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
13	वैयक्तिक सहायक ग्रेड-2	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
14	अवर अभियंता	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
15	नक्शानवीस	02	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
16	सर्वेयर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
17	रसायनविद	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
18	पुस्तकालय सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
19	सहायक लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
20	आशुलिपिक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
21	वरिष्ठ सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
22	कनिष्ठ सर्वेयर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2400	लेवल-4
23	कनिष्ठ सहायक	04	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2000	लेवल-3
24	ड्राईवर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1900	लेवल-2
25	मार्क्समैन कम पाट्री मेंण्डर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1

26	फोटोलैब सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
27	साइक्लो स्टाईल मशीन आपरेटर कम दफ्तरी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-2
28	रसायन शाला सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
29	नलकूप चालक	02	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
30	वर्क्स फोरमैन	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
31	अर्दली	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
32	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
33	स्वीपर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
34	कार्यालय चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
35	माली चौकीदार	22	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
36	स्मारक परिचर	40	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
37	उद्यान परिचर	07	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
38	डाक रनर कम फर्राश	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800	लेवल-1
योग		**118**			

सर्वेक्षण/निरीक्षण :-

1. जनपद-कानपुर की तहसील डेरापुर अन्तर्गत ग्राम लक्षमणपुर पिकरन स्थित प्राचीन शिव मंदिर का निरीक्षण।
2. जनपद-कानपुर नगर स्थित राज्य संरक्षित स्मारक बाल्मीकि आश्रम बिठूर का निरीक्षण।
3. जनपद-अयोध्या नगर (फैजाबाद) के चौक बाजार स्थित दो दरों (द्वार) एवं तीन दरों का स्थलीय निरीक्षण।
4. जनपद सीतापुर के अलावलपुर ग्राम में स्थित प्राचीन शिव मंदिर का निरीक्षण।
5. जनपद कन्नौज अन्तर्गत अन्नपूर्णा मंदिर, अंधीमोड़ स्थित मकबरा, आल्हा-उदल का टीला का स्थलीय निरीक्षण कराया गया।

अनुरक्षण :-

1. 13वें वित्त आयोग अन्तर्गत राज्य संरक्षित स्मारक रोशनुदौला कोठी, दर्शन विलास कोठी, गुलिस्ताने इरम पर चल रहे कार्यों का कमेटी के साथ निरीक्षण।

फोटोग्राफी अनुभाग :-

1. राज्य संरक्षित स्मारकों/स्थलों एवं निरीक्षणों से सम्बन्धित लगभग 500 अदद् छायाचित्र तैयार कराये गये।
2. 200 अदद पुराने निगेटिव की स्कैनिंग का कार्य कराया गया।

रसायनशाला :-

1. जनपद-कानपुर नगर स्थित संरक्षित स्थल-जाजमऊ के टीले के पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त ताम्र-निधि का रासायनिक उपचार किया गया।

प्रकाशन अनुभाग :-

1. विभागीय :ाोध पत्रिका-प्राग्धारा के अंक-26 का मुद्रण कार्य कराया जा रहा है।
2. छतर मंजिल पर आधारित रंगीन फोल्डर का मुद्रण कराया गया।

3. ग्राम स्तरीय सर्वेक्षण हेतु डी फार्म का मुद्रण कराया गया।
4. विभागीय फेसबुक को समय-समय पर अपडेट कराने का कार्य कराया गया।

शैक्षिक-गतिविधियाँ :-

1. विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर संरक्षित स्मारक गुलिस्ताने इरम में छायाचित्र प्रदर्शनी, ड्राइंग प्रतियोगिता एवं व्याख्यान का आयोजन कराया गया।
2. विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर संरक्षित स्मारक-कोठी गुलिस्ताने इरम में छायाचित्र प्रदर्शनी, एवं विविध कार्यक्रमों का आयोजन कराया गया।

ड्रांइग एवं सर्वेक्षण कार्य :-

1. जनपद महाराजगंज स्थित राजधानी टीला के पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त मृद्भाण्डों की ड्रांइग तैयार की गयी।
2. जनपद-लखनऊ स्थित सरंक्षित स्मारकों-दर्शन विलास कोठी के प्रथम तल एवं द्वितीय तल की ड्रांइग तैयार की गयी।
3. राज्य संरक्षित स्मारकों/स्थलों की ड्राइंगों का सूचीकरण कर आटोकैड पर कम्प्यूटर में संग्रहीत किया गया।
4. विभाग में क्षतिग्रस्त/जर्जर सर्वेक्षण ड्राइंग्स के रख-रखाव व सूचीकरण का कार्य कराया गया।
5. मथुरा जनपद स्थित कुसुम सरोवर का साइट प्लान पुनः तैयार कराया गया।

उत्खनन एवं सर्वेक्षण :-

1. जनपद रायबरेली के अन्तर्गत सई-नदी के दोनों किनारों पर ग्राम स्तरीय पुरातात्विक सर्वेक्षण का कार्य कराया जा रहा है।
2. जनपद बरेली अन्तर्गत तहसील फरीदपुर का ग्राम स्तरीय पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य कराया जा रहा है।

अन्य कार्य :-

1. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा प्रकाि-त आई0ए0आर0 हेतु मुख्यालय तथा इकाईयों द्वारा कराये गये सर्वेक्षण कार्य से सम्बन्धित रिपोर्ट तैयार कर प्रेशित की गयी।
2. उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा सर्वेक्षण/निरीक्षण से प्रकाश में आये स्मारकों/स्थलों को संरक्षण में लेने हेतु परामर्शदात्री समिति की बैठक करायी गयी।
3. भारत निर्वाचन आयोग द्वारा कराये जा रहे मतदाता पुनरीक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा डियूटी का कार्य किया जा रहा है।
4. उ0प्र0 राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा कला कुम्भ में छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है।

क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई, झॉसी

क्षेत्रीय पुरात्त्व इकाई ,झांसी के अन्तर्गत झांसी, ललितपुर , महोबा ,हमीरपुर ,जालौन ,बांदा, चित्रकूट आदि जिले रखे गये हैं । प्रस्तर उपकरणों, मन्दिरों , मूर्तियों, अभिलेंखों, बावली , कूप ,तड़ागों और पात्रावशेषों आदि के रूप में प्राचीन पुरासामग्री इस क्षेत्र में जगह-जगह बिखरी हुई हैं। यहां शैव, वैष्णव शाक्य और जैन धर्मों का विशेष प्रभाव दिखायी देता है । इन सबका व्यापक अन्वेषण कराकर इन्हे प्रकाशित करने, संरक्षित करने तथा विभाग के उद्देश्यों के अनुरूप पुरातत्त्व सम्बन्धी अन्य कार्यों के सम्पादन के लिये झांसी में क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई की स्थापना की गई है।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,झांसी के लिये निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल
1	क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400	लेवल-10
2	सहायक पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4600	लेवल-7
3	संरक्षण सहायक	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
4	फोटोग्राफर	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
5	नक्शा नवीस	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5

6	लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
7	कनिष्ठ सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2000	लेवल-3
8	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
9	चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
10	सफाई कर्मचारी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
योग		10			

सर्वेक्षण/निरीक्षण

1. जनपद महोबा स्थित श्रीनगर के किले का निरीक्षण।
2. जनपद ललितपुर अन्तर्गत बालाबेहट किला, स्थलीय संग्रहालय ललितपुर, महोबा एवं संरक्षित स्मारक रधुनाथ राव महल तथा लक्ष्मी मंदिर का स्थलीय निरीक्षण।

अनुरक्षण

1. स्थलीय संग्रहालय महोबा एवं ललितपुर के रख-रखाव का कार्य कराया गया।
2. संरक्षित स्मारक बालाबेहट किले के वार्शिक रख-रखाव का कार्य कराया गया।
3. बालाबेहट किले स्थित पुराने कुंए में विद्यमान मलबे को निकलवाने का कार्य कराया गया।

उत्खनन एवं सर्वेक्षण

1. जनपद हमीरपुर अन्तर्गत विकास खंड सरीला का ग्राम स्तरीय पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य कराया जा रहा है।

अन्य कार्य

1. विश्व धरोहर दिवस/सप्ताह के अन्तर्गत छायाचित्र प्रदर्शनी, ड्राइंग प्रतियोगिता एवं व्याख्यान का आयोजन कराया गया है।

क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई, आगरा

उत्तर प्रदेश में बृज मंडल का सांस्कृतिक महत्व सर्वज्ञात है। वृन्दावन, गोकुल, मथुरा के बंशी बजइया कृष्ण कन्हैया की लीला भूमि लाखों श्रद्धालुओं को हर वर्ष यहां खींच लाती है । आगरा स्थित फतेहपुर सीकरी, ताजमहल, बुलन्द दरवाजा जैसी मुगल इमारतों की एक झलक पाने को सारी दुनिया के सैलानी बेताब रहते हैं। कुसुम सरोवर, गोवर्धन आदि स्थलों पर जाट राजाओं द्वारा निर्मित छतरियों की छटा देखते ही बनती है। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में जगह-जगह प्राचीन पात्रावशेषों, मृण्मूर्तियां, सिक्के, पाषाण मूर्तियां और अभिलेख आदि मिलते रहते हैं । इनके व्यापक सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण, प्रकाशन और संरक्षण/परिरक्षण के लिये आगरा में क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई की स्थापना की गई है। इसके अन्तर्गत आगरा, अलीगढ़, एटा, इटावा, फिरोजाबाद और मैनपुरी जिलों के कार्य सौंपे गये हैं ।

क्षेत्रीय पुरात्त्व इकाई ,आगरा के लिये निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0	**पद का नाम**	**पदों की संख्या संख्या**	**सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान**	**सादृश्य ग्रेड वेतन**	**पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल**
1	क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400	लेवल-10
2	कनिष्ठ फोटोग्राफर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2400	लेवल-4
3	नक्शानवीस	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
4	लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
5	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
6	चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
7	सफाई कर्मचारी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
योग		07			

सर्वेक्षण/निरीक्षण

1. संरक्षित स्मारक रसखान की समाधि पर निर्मित चाहरदीवारी के धराशायी भाग का निरीक्षण।
2. जनपद मथुरा अन्तर्गत ग्राम कांपर गांव स्थित पुराने स्मारक तथा ग्राम कोटवन स्थित पुराने स्मारक का निरीक्षण।
3. जनपद आगरा अन्तर्गत मा0 मंत्री संस्कृति विभाग एवं परामर्शदात्री समिति के सदस्य की अपेक्षा के क्रम में आगरा जिला के अन्तर्गत फतेहपुर सीकरी में विद्यमान मूसा साहब की दरगाह, गजमोदनी का किला, सिकरारा का किला तथा फिरोजाबाद जनपद के चन्द्रवाड़ स्थित मामा-भांजा का किला, जिला मथुरा के गोवर्धन कस्बे के निकट विद्यमान प्राचीन टीला एवं छाता में विद्यमान शेरशाह सूरी के समय की सराय एवं ब्रज तीर्थ परिषद के मुख्य कार्यपालक अधिकारी की अपेक्षा के क्रम में गोवर्धन स्थित रणजीत सिंह की छतरी का निरीक्षण।

अनुरक्षण

1. संरक्षित स्मारक कुसुमवन सरोवर पर 13वें वित्त आयोग के अन्तर्गत चहारदीवारी के अवरूद्ध निर्माण के क्रम में राजस्व विभाग द्वारा प्रस्तावित पैमाइश कराने का कार्य।
2. मा0 मंत्री महोदय द्वारा संरक्षित स्मारक रसखान की समाधि के बारे जानकारी प्रदान करने हेतु तथा कुसुमवन सरोवर पर प्रस्तावित कार्यों के बारे में शिलालेख तैयार कराकर स्थापित कराने का कार्य किया गया।
3. राज्य संरक्षित स्मारक रसखान की समाधि मथुरा पर इंगित बोर्ड की स्थापना, राज्य संरक्षित स्मारक गोपीनाथ मंदिर, मथुरा पर वार्षिक अनुरक्षण एवं राज्य संरक्षित स्मारक अकबर का शिकारगाह पर वार्षिक अनुरक्षण का कार्य।

क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई, इलाहाबाद

इलाहाबाद मंडल में गंगा यमुना दोआब का ऐसा क्षेत्र सम्मिलित है जिसमें प्राचीन वत्स राज्य तथा अवध का बड़ा भू-भाग आता है। वत्स राज उदयन की राजधानी कौशाम्बी, जहां भगवान बुद्ध प्रवास काल में रहे, भीटा, झूंसी, भारद्वाज आश्रम, श्रृगंवेरपुर आदि बहुसंख्यक पुरातात्त्विक महत्व के स्थल इस क्षेत्र में विद्यमान हैं । प्रतापगढ़ में सरायनाहर राय आदि से मानव के आज से लगभग 10,000 वर्ष प्राचीन आवासीय स्थलों से नर कंकाल और प्रस्तर उपकरण प्रकाश में आये हैं । ऐसे अत्यन्त महत्वपूर्ण पुरास्थलों और अवशेषों की खोज, रख-रखाव अध्ययन, प्रकाशन आदि के उद्देश्य से इलाहाबाद में क्षेत्रीय पुरात्त्व इकाई की स्थापना की गयी है ।
क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई ,इलाहाबाद के लिये निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल
1	क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400	लेवल-10
2	अन्वेषण सहायक कम फोटोग्राफर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
3	नक्शानवीस	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2400	लेवल-4
4	लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
5	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
6	सफाई कर्मचारी कम चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
योग		06			

सर्वेक्षण/निरीक्षण

1. जनपद प्रतापगढ़ के रानीगंज अजगरा स्थित युधिष्ठिर संवाद स्थली के प्राप्त पुरावशेषों का निरीक्षण ।

2. जनपद-चित्रकूट अन्तर्गत ऐतिहासिक/पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्मारकों यथा मंदिर, किला, मकबरा आदि का निरीक्षण।

उत्खनन एवं सर्वेक्षण

1. जनपद फतेहपुर अन्तर्गत विकास खंड मलवा तहसील बिन्दकी का पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य कराया जा रहा है।

अन्य कार्य

1. जनपद प्रतापगढ़ में आयोजित अजगरा महोत्सव में छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन कराया गया।
2. विश्व धरोहर दिवस/सप्ताह के अवसर पर छायाचित्र प्रदर्शनी एवं व्याख्यान का आयोजन।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,वाराणसी

पूर्वी उत्तर प्रदेश में वाराणसी मंडल का अपना विशेष महत्व है । उत्तर भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक राजधानी के रूप में विख्यात वाराणसी नगर का ही पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक महत्व लगभग 3000 वर्ष प्राचीन है। इस नगर और जनपद में जगह-जगह प्राचीन मन्दिर, मूर्तियां और अन्य बहुत से मन्दिर विद्यमान हैं । वाराणसी मंडल के सोनभद्र, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर और बलिया जनपद भी समृद्व एवं प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से अपनी गौरवशाली परम्परा रखते हैं। मिर्जापुर और सोनभद्र जिलों में चित्रित शैलाश्रय व चुनार, विजयगढ, शक्तेशगढ में सुख्यात दुर्ग, अनेक मंदिर, अभिलेख आदि ज्ञात हैं। शैव, वैष्णव, जैन और बौद्ध धर्म के केन्द्र के रूप में काशी की महिमा सर्वज्ञात है। महाराज गाधि, महर्षि विश्वामित्र और जमदग्नि मुनि की भूमि जनपद गाजीपुर से सम्बद्ध की जाती है। शर्की राजाओं की राजधानी जौनपुर/मछलीशहर की प्राचीन वास्तुकला की एक नई बानगी देती है। सरयू और गंगा के बीच के भाग में सैदपुर, भीतरी, श्रंराडीह जैसे बड़े-बड़े टीले पाये गये हैं। जिनमें प्राचीन सांस्कृतिक सामग्री के विपुल भण्डार छिपे हुये हैं। विन्ध्य की श्रृखलाओं में पाषाण युगीन मानव के निवास के प्रमाण प्रस्तर उपकरणों के रूप में जगह-जगह मिलते हैं। अतएव इस क्षेत्र में पुरातत्त्व सम्बन्धी गर्तिविधियों में तेजी लाने के लिए वाराणसी में एक क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई की स्थापना की गयी है।

क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई ,वाराणसी के लिये निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल
1	क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400	लेवल-10
2	संरक्षण सहायक	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200	लेवल-6
3	कनिष्ठ फोटोग्राफर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2400	लेवल-4
4	नक्शानवीस	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
5	सहायक लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
6	कनिष्ठ सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2000	लेवल-3
7	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
8	चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
योग		08			

सर्वेक्षण/निरीक्षण :-

1. जनपद-सोनभद्र अन्तर्गत फासिल्स पार्क भैंसासुर घाट, राजघाट, स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी का पैतृक आवास स्मृति संग्रहालय तथा जनपद मिर्जापुर स्थित गजिया मोहल्ले में नींव की खुदाई के दौरान प्राप्त सिक्कों का निरीक्षण।

अनुरक्षण :-

1. जनपद वाराणसी अन्तर्गत गुरूधाम मंदिर परिसर की साफ सफाई एवं वानस्पतिक उन्मूलन, राज्य संरक्षित स्थल लरवक का स्थलीय निरीक्षण।

2. जनपद वाराणसी स्थित गुरूधाम मंदिर अन्तर्गत चरणपादुका का अनुरक्षण कार्य तथा कर्दमेश्वर महादेव मंदिर, कन्दवा की साफ-सफाई एवं वानस्पतिक उन्मूलन का कार्य कराया गया।
3. 13वें वित्त आयोग की धनराशि से कराये जा रहे कार्यों से चुनार किला का संयुक्त टीम के साथ भौतिक सत्यापन का कार्य।

उत्खनन/सर्वेक्षण :-

1. जनपद जौनपुर अन्तर्गत तहसील केराकत का ग्राम स्तरीय पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य कराया जा रहा है।

अन्य कार्य :-

1. विश्व धरोहर दिवस/सप्ताह के अवसर पर छायाचित्र प्रदर्शनी, चित्रकला प्रतियोगिता एवं व्याख्यानों का आयोजन किया गया।
2. काशी विमर्श व्याख्यान श्रृंखला के तहत ''काशी और ऐनीबेसेण्ट'' विशयक व्याख्यान का आयोजन।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,गोरखपुर

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,गोरखपुर के लिये निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल
1	क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400	लेवल-10
2	सहायक लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800	लेवल-5
3	कनिष्ठ सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2000	लेवल-3
4	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
5	चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800	लेवल-1
6	सफाई कर्मचारी	01	रु0 1000/- नियत वेतन		
योग		06			

सर्वेक्षण/निरीक्षण :-

1. जनपद-बस्ती अन्तर्गत ग्राम भुवनीपार में प्राचीन शिव मंदिर तथा विकासखंड-गौर अन्तर्गत ग्राम-महुआडावर स्थित प्राचीन पुरास्थल भुईलाडीह का स्थलीय निरीक्षण।
2. जनपद-कुशीनगर अन्तर्गत ग्राम तुर्कपट्टी में प्राचीन सूर्य मंदिर तथा ग्राम बदुरांव स्थित प्राचीन टीले का स्थलीय निरीक्षण।
3. जनपद-देवरिया अन्तर्गत कस्बा-रूद्रपुर में प्राचीन शिव मंदिर (दुग्देश्वर नाथ)/टीले तथा सलेमपुर तहसील अन्तर्गत ग्राम बरठालाला स्थित प्राचीन शिव मंदिर का स्थलीय निरीक्षण।
4. जनपद-बलिया अन्तर्गत तहसील सदर ग्राम-कोरंटाडीह स्थित ब्रिटिशकालीन कोषागार भवन का स्थलीय निरीक्षण।

अनुरक्षण :-

1. जनपद संतकबीर नगर अन्तर्गत संतकबीर दास की समाधि एवं मजार का अनुरक्षण कार्य कराया गया है।

उत्खनन/सर्वेक्षण :-

1. जनपद संतकबीर नगर अन्तर्गत विकास-खंड मेहदावल का ग्राम स्तरीय पुरातातिवक सर्वेक्षण कराया जा रहा है।

अन्य कार्य :-

1. जनपद संतकबीर नगर के मगहर स्थित संरक्षित स्मारक संतकबीर दास की समाधि एवं मजार से सम्बद्ध भूमि का सीमांकन कार्य करवाया गया एवं संत कबीर अकादमी के लिए भूमि का चयन एवं मा0 प्रधानमंत्री जी भारत सरकार द्वारा कबीर अकादमी शिलान्यास में अपेक्षित सहयोग प्रदान किया गया।

भाग – 3
संग्रहालय निदेशालय

संक्षिप्त परिचय

संग्रहालय सांस्कृतिक सम्पदा, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहरों को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का वह केन्द्र है, जहां प्राचीन कलाकृतियों को संग्रहीत कर राष्ट्र के अतीत की गौरवशाली संस्कृति का दर्शन शोधार्थियों, बुद्धिजीवियों तथा सामान्य जनमानस को कराया जाता है। संग्रहालय का कार्य कलाकृतियों एवं पुरावशेषों का संग्रह करना, संरक्षित करना, शोध करना तथा उन्हें प्रदर्शित करना है। संग्रहालय वर्तमान में अनौपचारिक शिक्षा का केन्द्र भी है जो समय-समय पर प्रदर्शनियां, व्याख्यान तथा संगोष्ठी आयोजित कर सामान्य जनमानस में कला के प्रति अभिरूचि जागृत कर शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी करते हैं।

31 अगस्त, 2002 के पूर्व, उ0 प्र0 के समस्त राजकीय संग्रहालय संस्कृति निदेशालय, उ0 प्र0 द्वारा संचालित होते थे। प्रदेश के समस्त संग्रहालयों के विकास एवं संवर्द्धन, स्वतंत्र नियंत्रण एवं प्रभावी पर्यवेक्षण, नये संग्रहालयों की स्थापना, उनके भवनों का निर्माण, आधुनिकीकरण एवं सुदृढ़ीकरण, कलाकृतियों एवं पुरावशेषों के क्रय, उनके प्रदर्शन तथा कला अभिरूचि के विकास, व्याख्यान, प्रशिक्षण आदि योजनाओं के उन्नयन हेतु 31 अगस्त, 2002 से उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय के रूप में स्वंतत्र निदेशालय की स्थापना की गई। राज्य संग्रहालय, बनारसी बाग, लखनऊ के परिसर की ओल्ड कोठी में ही इस निदेशालय को स्थापित किया गया। वर्तमान में यह निदेशालय राज्य संग्रहालय, लखनऊ के चतुर्थ पार्श्व में स्थापित है। निदेशक, उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय विभागाध्यक्ष के कार्यों एवं दायित्वों के साथ-साथ राज्य संग्रहालय, लखनऊ के निदेशक के कार्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हैं। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कुल सोलह राजकीय संग्रहालय उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय के अधीन हैं जिनमें चौदह संग्रहालय संचालित है तथा दो संग्रहालय निर्माणाधीन हैं।

क्र.स.	संग्रहालय के नाम तथा वर्ष	उद्देश्य
1	राज्य संग्रहालय लखनऊ (1863)	उ0 प्र0 राज्य का बहुउद्देशीय संग्रहालय है।
2	राजकीय संग्रहालय, मथुरा (1874)	मथुरा कला के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त संग्रहालय है।
3	राजकीय संग्रहालय, झांसी (1978)	बुन्देलखण्ड की मध्यकालीन कला एवं इतिहास को संरक्षित किए जाने के उद्देश्य से स्थापित है।
4	अन्तर्राष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय एवं आर्ट गैलरी, अयोध्या, फैजाबाद (1988)	विश्व प्रचलित रामकथाओं से सम्बन्धित कलाकृतियों का प्रदर्शन, संरक्षण एवं रख-रखाव के लिए स्थापित।
5	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर (1987),	जनपद एवं आस-पास से प्राप्त पुरासम्पदाओं का संरक्षण, संवर्द्धन, शोध एवं ज्ञानवर्धन हेतु स्थापित।
6	लोक कला संग्रहालय, लखनऊ (1989),	प्रदेश में प्रचलित समस्त लोक कलाओं के प्रदर्शन, संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित।
7	जनपदीय संग्रहालय, सुलतानपुर (1989),	जनपद एवं आस-पास से प्राप्त पुरासम्पदाओं का संरक्षण, संवर्द्धन, शोध एवं ज्ञानवर्धन हेतु स्थापित।
8	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर (1994),	जनपद एवं आस-पास से प्राप्त पुरासम्पदाओं का संरक्षण, संवर्द्धन, शोध एवं ज्ञानवर्धन हेतु स्थापित।
9	राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, कन्नौज (1975)	जनपद एवं आस-पास से प्राप्त पुरासम्पदाओं का संरक्षण, संवर्द्धन, शोध एवं ज्ञानवर्धन हेतु स्थापित।
10	राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ, (1996),	भारत के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन 1857 से सम्बन्धित प्राप्त तत्कालीन प्रचलित अस्त्र-शस्त्रों को संग्रहीत करना व विविध पहलुओं को संरक्षित करने के उद्देश्य से स्थापित।
11	अम्बेडकर संग्रहालय एवं पुस्तकालय, रामपुर, (2004)	भारत के संविधान निर्माता डा0 भीमराव अम्बेडकर से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्रियों के संकलन हेतु स्थापित।
12	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, पिपरहवा (सिद्धार्थनगर) (1997)	जनपद एवं आस-पास से प्राप्त पुरासम्पदाओं का संरक्षण, संवर्द्धन, शोध एवं ज्ञानवर्धन हेतु स्थापित।

13	राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, फर्रूखाबाद (निर्माणाधीन)	प्राचीन बौद्ध पुरास्थल काम्पिल्य, संकिशा से प्राप्त प्राचीन कलाकृतियों एवं पुरावशेषों के संकलन एवं सवंर्द्धन हेतु स्थापित।
14.	पं0 बिरजू महाराज पैतृक आवास कालका बिन्दादीन की ड्योढ़ी कथक संग्रहालय, लखनऊ (2016)	पं0 बिरजू महाराज के पैतृक आवास कालका बिन्दादीन ड्योढ़ी को कथक संग्रहालय के रूप में विकसित किया गया है। बिन्दादीन महाराज व घराने के अन्य गुरूओं से संबंधित वाद्य यंत्र एवं अन्य सामग्रियां उक्त संग्रहालय में संरक्षित एवं प्रदर्शित है।
15.	बाल संग्रहालय, कन्नौज (निर्माणाधीन)	बाल संग्रहालय की स्थापना से बच्चे तथा सामान्य जनमानस विज्ञान के नये-नये आविष्कार एवं तकनीकी से परिचित हो सकेंगे।
16.	लाल बहादुर शास्त्री स्मृति संग्रहालय, वाराणसी (2018)	भारत के दूसरे प्रधानमंत्री व गांधीवादी लाल बहादुर शास्त्री के जीवन की स्मृति का संग्रह स्थल।

संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 के सांस्कृतिक कलैण्डर के कार्यक्रमानुसार प्रदेश के समस्त राजकीय संग्रहालयों में समय-समय पर प्रदर्शनी, व्याख्यान, संगोष्ठी, कला अभिरूचि पाठ्यक्रम, सामान्य ज्ञान एवं कला प्रतियोगिता, मूक-बधिर बच्चों की क्ले मॉडलिंग कार्यशाला एवं फिल्म तथा संग्रहालय तकनीकी कार्यशाला आदि का आयोजन किया जाता है।

उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय (राज्य संग्रहालय परिसर) लखनऊ

प्रदेश के समस्त संग्रहालयों के विकास एवं संवर्द्धन, स्वतंत्र नियंत्रण एवं प्रभावी पर्यवेक्षण, नये संग्रहालयों की स्थापना, उनके भवनों का निर्माण, आधुनिकीकरण एवं सुदृढ़ीकरण, कलाकृतियों एवं पुरावशेषों के क्रय, उनके प्रदर्शन तथा कला अभिरुचि के विकास, व्याख्यान, प्रशिक्षण आदि योजनाओं के उन्नयन हेतु 31 अगस्त, 2002 को उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय की स्थापना की गई, जो राज्य संग्रहालय, बनारसी बाग, लखनऊ के परिसर में स्थापित है। निदेशक, उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय, विभागाध्यक्ष के कार्यों व दायित्वों के साथ-साथ राज्य संग्रहालय, लखनऊ के निदेशक के कार्यों एवं दायित्वों का निर्वहन भी करते हैं।

निदेशालय में निम्नलिखित पद सृजित है:-

क्र. सं.	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल	पदों की संख्या
1	2	3	4		5
1	निदेशक	15600-39100	7600	लेवल-12	1
2	वित्त एवं लेखाधिकारी	15600-39100	5400	लेवल-10	1
3	प्रशासनाधिकारी	9300-34800	4600	लेवल-7	1
4	वैयक्तिक सहायक ग्रेड-।	9300-34800	4600	लेवल-7	1
5	ज्येष्ठ सम्परीक्षक	9300-34800	4200	लेवल-6	1
6	लेखाकार	9300-34800	4200	लेवल-6	2
7	प्रधान सहायक	9300-34800	4200	लेवल-6	2
8	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2800	लेवल-5	2
9	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	लेवल-3	3
10	अर्दली	5200-20200	1800	लेवल-1	2
योगः					**16**

राज्य संग्रहालय, लखनऊ

राज्य संग्रहालय, लखनऊ उ0 प्र0 का प्राचीनतम तथा विशालतम् बहुउद्देशीय संग्रहालय है। इसकी स्थापना सन् 1863 ई0 में लखनऊ डिवीजन के तत्कालीन कमिश्नर कर्नल एबट द्वारा सींखचे वाली कोठी में की गयी थी। सन् 1883 में यह प्रान्तीय संग्रहालय के रूप में लाल बारादरी में व्यवस्थित हुई। सन् 1950 में इसका नाम प्रान्तीय संग्रहालय के स्थान पर राज्य संग्रहालय रखा गया तथा वर्ष 1963 में नवीन भवन बन जाने के बाद बनारसी बाग स्थित प्राणि उद्यान परिसर में आ गया। इस संग्रहालय के संकलन में लगभग दो लाख से अधिक पुरावशेष हैं, जिसमें पुरातत्व अनुभाग, चित्रकला अनुभाग, प्राणिशास्त्र अनुभाग, मुद्रा अनुभाग, सज्जा कला अनुभाग और धातु मूर्ति अनुभाग आदि प्रमुख हैं। इसके साथ ही राज्य संग्रहालय, लखनऊ में एक वृहद पुस्तकालय भी है, जहां भारतीय संस्कृति, कला, पुरातत्व, इतिहास तथा प्राच्य विद्या सम्बन्धित दुर्लभ पुस्तकें हैं, जो विशेष रूप से शोधार्थियों के लिये उपयोगी हैं।

शैक्षिक गतिविधियां - शैक्षिक गतिविधियों के अन्तर्गत माह अप्रैल-2018 से नवम्बर-2018 तक स्कूल, कॉलेजों एवं आगन्तुकों की संख्या निम्नवत् है-

1. स्कूल/ कॉलेजों की संख्या - 370
2. छात्र/छात्राओं की संख्या - 21437
3. अध्यापक/अध्यापिकाओं की संख्या - 1395

माह अप्रैल से नवम्बर-2018 में सशुल्क दर्शकों का विवरण निम्न प्रकार है-

1. वयस्कों से प्राप्त आय - रू0 138325
2. अल्पवयस्कों से प्राप्त आय - रू0 21552
3 विदेशी पर्यटकों से प्राप्त आय- रू0 66

कुल दर्शकों की संख्या **18280**

शैक्षिक गतिविधियां-

क्र0सं0	दिनांक	कार्यक्रम
1	14.04.2018	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की 127 वीं जयन्ती के अवसर पर बौद्ध कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
2	18.04.2018	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर स्कूल के बच्चों हेतु चित्रकला एवं प्रश्नोतरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 350 बच्चों ने भाग लिया।
3	18.05.2018	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर जैन कला विषय पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
4	29.08.2018 से 31.08.2018 तक	राज्य संग्रहालय में 'भारतीय कला एवं प्रतिमाशास्त्र' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संग्रहालयों के अधिकारी व कर्मचारी एवं विश्वविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया।
5	02.10.2018	गॉधी जयन्ती के अवसर पर गॉधी जी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
6	10.11.2018	मूक बधिर एवं मंद बुद्धि बच्चों हेतु क्ले मॉडलिंग की कार्यशाला का आयोजन किया गया।

माह का प्रदर्श-अप्रैल, 2018 से नवम्बर, 2018 तक अनुभागों से प्रदर्शित कलाकृतियों का विवरणः-

राम सीता विषय पर लघु चित्र, प्रस्तर की दशावतार विष्णु, कनिष्क की स्वर्ण मुद्रा पर अंकित भगवान बुद्ध की अनुकृति राधा कृष्ण (हाथी दॉत में) ऑक्टोपस (प्राणि शास्त्र), धातु की लक्ष्मी प्रतिमा, नृसिंह अवतार (लघु चित्र)

आरक्षित संकलन में माह अप्रैल से नवम्बर, 2018 तक किये गये मुख्य कार्य-

1- **पुरातत्व अनुभाग**- कानपुर विश्वविद्यालय से आये छात्र को बुंदेलखण्ड से प्राप्त पुरासंम्पदा के बारे में जानकारी दी गयी।

2- पुरातत्व अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन किया गया।
3- आरक्षित संकलन में प्रस्तर प्रतिमाओं एवं मृण मूर्तियों का सत्यापन किया गया।
4- नवीन मृण मूर्ति वीथिका हेतु लगभग 250 टेराकोटा को रसायनिक उपचार हेतु रसायन अनुभाग भेजा गया।
5- कुम्भ मेला हेतु चयनित कलाकृतियों के फोटोग्रफ, कैप्शन, विवरण अनुकृतियॉ आदि तैयार की गयी।
6- शोधकर्ताओं की मांग (अनुरोध) पर आधारित कलाकृतियों के छायाचित्र तैयार करवायें गये।

2- प्राणिशास्त्र अनुभाग-

1.- प्राणिशास्त्र अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन।
2- प्राणि**शा**स्त्र आरक्षित संकलन में संग्रहीत कलाकृतियों का रसायनिक उपचार किया गया। इनके जार के पुराने रसायन को बदल पर नया रसायन डाल कर सील किया गया।
3-प्राणि**शा**स्त्र आरक्षित संकलन में संग्रहीत आब्जेक्टस का रसायनिक उपचार किया गया।
4-अनुभाग में संग्रहीत पक्षियों का अभिलेखीकरण का कार्य किया गया।

3.छायाचित्र अनुभाग-

क- अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन।
ख- विभिन्न अनुभागों में संग्रहित कलाकृतियों की कम्प्यूटर के माध्यम से फोटो तैयार की तथा शैक्षिक कार्यक्रमों की फोटो खींची गयी।
ग- वार्षिक कलैण्डर हेतु छायाचित्र तैयार किये गये।
घ-डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती, विश्व संग्रहालय दिवस, संग्रहालयों के कार्यक्रमों, शोध छात्रों, प्रदर्शनी एवं कुम्भ से सम्बन्धित सभी अनुभागों के छायाचित्र तैयार किये गये।

4-रसायन अनुभाग-

क- रसायन अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन।
ख- रसायन अनुभाग द्वारा मृणमूर्ति, प्रस्तर प्रतिमा, सिक्कें, धातु प्रतिमायें एवं सज्जा कला से सम्बन्धित कलाकृतियों का रसायनिक उपचार किया गया तथा वायुयान एवं विदेशीकला वीथिका का संरक्षण कार्य किया गया।

5-चित्रकला अनुभाग-

1. कुम्भ मेले हेतु चयनित पेन्टिग के छायाचित्र व कैप्शन विवरण आदि का कार्य किया गया।
2. अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन किया गया।
3. विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये शोधकर्ताओं को उनके विषयानुसार छायाचित्रों का अवलोकन छायाचित्र तैयार करवाये गये।

6 मुद्रा अनुभाग- अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन किया गया।
1.उ0प्र0 से प्राप्त निखात निधियों को प्राप्त करने हेतु जिलाधिकारियों से पत्राचार किया गया।
2. मुद्रा अनुभाग की वीथिका खुलवाने एवं बन्द करवाने का कार्य किया गया।
3 कुम्भ मेले हेतु चयनित सिक्कों का विवरण कैप्शन व अनुकृति तैयार करने का कार्य किया गया।

7. सज्जा कला अनुभाग-

1. अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन किया गया।
2.अनुभाग से चार्ज सम्बन्धित कार्य किया गया।
3.माह के प्रदर्श में प्रदर्शित होने वाली कलाकृतियों का कैप्शन व विवरण तैयार किये गये।
4.कुम्भ मेले हेतु चयनित कलाकृतियों के विवरण व छायाचित्र तैयार किये गये।

8.अस्त्र शास्त्र /धातु अनुभाग -

क- अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन किया गया।
ख- लखनऊ व आस पास के जिलों से प्राप्त की गयी धातु प्रतिमाओं की परीक्षण रिपोर्ट प्रेषित की गयी।

9. प्रकाशन अनुभागः-

क- अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन किया गया।
ख- संग्रहालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के निमन्त्रण पत्र व फोल्डर छपवाने सम्बन्धी कार्य।
ग-संग्रहालय के बिक्री काउन्टर पर संग्रहालय का प्रकाशन उपलब्ध करायें गये।

10 माडलिंग अनुभागः-

क-150 अदद प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियॉं तैयार की गयी।
ख-150 कलर एवं डस्टिंग कर प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियां तैयार की गयी।
ग- अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन किया गया।

घ-कुम्भ हेतु चयनित कलाकृतियों की अनुकृतियां तैयार की गयी।

11.पुस्तकालय अनुभाग-

क- अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन किया गया।

ख- 100 शोधार्थियों को पुस्तकालय में पढ़ाने की सुविधा प्रदान की गयी।

ग- लगभग 2000 पुस्तकों का सत्यापन कार्य किया गया।

घ-कुम्भ हेतु चयनित कलाकृतियों की सूची तैयार की गयी।

स्वीकृत पदों का विवरण

संग्रहालय के संचालन हेतु संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 शासन द्वारा निम्नलिखित पद स्वीकृत किए गए हैंः-

क्र. सं.	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल	पदों की संख्या
1	2	3	4	5	6
1	मुद्राशास्त्र अधिकारी	15600-39100	5400	लेवल-10	01
2	सहायक निदेशक	9300-34800	4800	लेवल-8	06
3	पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड-।	9300-34800	4600	लेवल-7	01
4	रसायनविद् ग्रेड-।	9300-34800	4600	लेवल-7	01
5	फोटो अधिकारी	9300-34800	4600	लेवल-7	01
6	प्रशासनाधिकारी	9300-34800	4600	लेवल-7	01
7	प्रकाशन सहायक	9300-34800	4200	लेवल-6	01
8	मॉडलर	9300-34800	4200	लेवल-6	02
9.	प्रर्दशक व्याख्याता	9300-34800	4200	लेवल-6	02
10.	वैयक्तिक सहायक ग्रेड-2	9300-34800	4200	लेवल-6	01
11.	लेखाकार	9300-34800	4200	लेवल-6	01
12.	फोटोग्राफर	9300-34800	4200	लेवल-6	01
13.	रसायन सहायक	5200-20200	2800	लेवल-5	01
14.	ज्येष्ठ चर्मपूरक	5200-20200	2800	लेवल-5	01
15.	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2800	लेवल-5	01
16	सहायक लेखाकार	5200-20200	2800	लेवल-5	01
17.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	03
18.	अभिरक्षक	5200-20200	2400	लेवल-4	01
19.	मुद्राशास्त्र सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	01
20	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	लेवल-3	06
21.	स्वागतकर्ता	5200-20200	2000	लेवल-3	01
22.	संग्रहालय सहायक	5200-20200	1900	लेवल-2	01
23.	प्रयोगशाला सहायक	5200-20200	1900	लेवल-2	01
24.	वाहन चालक	5200-20200	1900	लेवल-2	01
25.	बुकबांइडर	5200-20200	1900	लेवल-2	01
26.	दफ्तरी	5200-20200	1900	लेवल-2	01
27.	जमादार	5200-20200	1900	लेवल-2	02
28.	कैबिनट कम पैडेस्टल मेकर	5200-20200	1800	लेवल-1	01
29.	वर्कशॉप मिस्त्री	5200-20200	1800	लेवल-1	01
30.	लिफ्टमैन कम इलेक्ट्रीशियन	5200-20200	1800	लेवल-1	01
31.	बढ़ई	5200-20200	1800	लेवल-1	01
32.	चिन्हकर्ता	5200-20200	1800	लेवल-1	01
33.	चपरासी	5200-20200	1800	लेवल-1	02
34.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	24
35.	चौकीदार	5200-20200	1800	लेवल-1	07

36.	माली	5200-20200	1800	लेवल-1	04
37.	साइकिल स्टैंड परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	01
38.	सफाई कर्मचारी	5200-20200	1800	लेवल-1	05
योग					**90**

राजकीय संग्रहालय, मथुरा

(1) भूमिका :-

उत्तर प्रदेश के पश्चिम में 27^0 29' उत्तरी अक्षांश तथा 77^0.41' पूर्वी देशान्तर में मथुरा नगर पश्चिम से पूर्व की ओर बहती यमुना नदी के पश्चिमी किनारे पर भारत की राजधानी दिल्ली से 145 कि.मी. दक्षिण पूर्व तथा आगरा से 58 कि0मी0 उत्तर-पश्चिम में स्थित है।

मथुरा यमुना नदी के दाहिने तट पर प्राचीन धार्मिक केन्द्र के रूप में 12 वन 24 उपवन तथा 5 पर्वतमालाओं का क्षेत्र रहा है। आदि काल से ही मथुरा श्री कृष्ण की लीलास्थली के रूप में वैष्णवों की उपासना स्थली रहा है। यहाँ पर बौद्ध, शैव व जैनियों ने भी अपने पूजा-स्थलों का निर्माण किया। मथुरा की गणना सप्त महापुरियों में की जाती है। यहाँ क्रमशः नन्द, मौर्य, शुंग, क्षत्रप और कुषाण वंशों का शासन रहा। विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित सहस्त्रों मूर्तियाँ मथुरा में बनी। यह कला लगभग 12 वीं शती ई0 तक जारी रही। कालान्तर में उपासना स्थल टीलों में परिवर्तित हो गये। आज मथुरा इन्हीं टीलों पर बसा है, जिनसे अनेक लाल चित्तीदार बलुए पत्थर की तराशी मूर्तियों की धरोहर प्राप्त हुई। ये मूर्तियां मथुरा से बाहर तक्षशिला, सारनाथ, श्रावस्ती, भरतपुर, बोधगया, साँची, कुशीनगर तथा कौशाम्बी तक बिखरी हैं। इस शैली के प्रभाव के प्रमाण दक्षिण पूर्व एशिया तथा चीन तक प्राप्त हुए हैं। ऐसी ही अनेक प्रतिमाएँ राजकीय संग्रहालय, मथुरा में संग्रहीत हैं।

(2) संरचना :-

संग्रहालय ज्ञान का वातायन, भविष्य का शिक्षक, अतीत का संरक्षक एवं राष्ट्रीय एक्य का उन्नायक है। संग्रहालय सांस्कृतिक सम्पदा, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहरों को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का वह केन्द्र है, जहाँ प्राचीन कलाकृतियों को संग्रहीत कर राष्ट्र के अतीत की गौरवशाली संस्कृति का दर्शन, शोधार्थियों, बुद्धिजीवियों तथा सामान्य जनमानस को कराया जाता है। संग्रहालय का कार्य कलाकृतियों एवं पुरावशेषों का संग्रह करना, संरक्षित करना, शोध करना तथा उन्हें प्रदर्शित करना है। संग्रहालय वर्तमान में अनौपचारिक शिक्षा का केन्द्र भी है, जो समय-समय पर प्रदर्शनियाँ, व्याख्यान तथा संगोष्ठी आयोजित कर सामान्य जनमानस में कला के प्रति अभिरूचि जागृत कर शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी करते हैं। भारतीय कला के क्षेत्र में मथुरा का ऐतिहासिक स्थान रहा है। राजकीय संग्रहालय, मथुरा की स्थापना भारतीय कला के मनीषी विद्वान पुरातत्ववेत्ता तत्कालीन जिलाधिकारी श्री एफ. एस. ग्राउज द्वारा वर्ष 1874 ई0 में कचहरी के समीप एक कलात्मक भवन में की गयी थी, जो वर्तमान में राजकीय जैन संग्रहालय, मथुरा के रूप में दर्शकों के लिए खुला है। राजकीय संग्रहालय प्रारम्भ में ''कर्जन म्यूजियम ऑफ आर्कियोलॉजी'' के नाम से विख्यात रहा। वर्ष 1933 ई0 में संग्रहालय वर्तमान भवन में स्थानान्तरित हुआ। वर्ष 1945 से इसे ''पुरातत्व संग्रहालय'' तथा वर्ष 1974 से ''राजकीय संग्रहालय, मथुरा'' के रूप में जाना जाता है। संग्रहालय के प्रथम भारतीय मानद संग्रहालयाध्यक्ष पं0 राधाकृष्ण हुए, जिनके प्रयास से ही अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कुषाण शासकों- विम, कनिष्क एवं क्षत्रप शासक चष्टन आदि की उत्कृष्ट/ऐतिहासिक मूर्तियाँ संग्रहालय को मिली।

डॉ0 दिशकेलकर, डा0 वी0एस0 अग्रवाल, प्रो0 कृष्णदत्त वाजपेयी एवं डॉ0 नीलकण्ठ पुरूषोत्तम जोशी, डॉ0 आर0सी0 शर्मा जैसे विद्वानों ने संग्रहालय की मूर्तियों का अध्ययन एवं प्रकाशन कर अन्तर्राष्ट्रीय कला जगत में मथुरा के इस कला संग्रह को प्रतिष्ठा दिलाई।

मूर्ति शिल्प में मथुरा कला शैली का स्थानीय केन्द्र होने तथा प्रारम्भ से ही संग्रहालय का स्वरूप मूलरूप से पुरातात्विक होने के कारण स्पष्टतः संग्रहालय के संकलन में अधिसंख्य कुषाण एवं गुप्तकालीन मथुरा शैली की प्रस्तर कलाकृतियाँ हैं, परन्तु अन्य वर्गों जैसे मृण्मूर्ति, सिक्के, लघुचित्र, धातुमूर्ति, काष्ठ एवं स्थानीय कला के अनेक दुर्लभ कलारत्न संग्रहीत हैं, जो संस्था के लिए गौरव स्वरूप हैं। मृण्मूर्तियों में शुंगकालीन मातृदेवी, कामदेव फलक, गुप्तकालीन नारी व विदूषक, कार्तिकेय, साँचे, सिक्कों में आहत मुद्रायें तथा नाग कुषाण गुप्त तथा मध्यकालीन मुद्रायें संग्रहीत हैं। प्रस्तर प्रतिमाओं में मौर्यकालीन यक्ष, कुषाण कालीन कटरा बुद्ध, कनिष्क, गुप्तकालीन बुद्ध (ए-5) आदि दर्शनीय हैं। गोविन्द नगर से प्राप्त प्रतिमायें तथा सोंख से प्राप्त सिक्के एवं कुषाण कालीन धातु मूर्तियों में कार्तिकेय, देव युगल प्रतिमा व नाग मूर्तियाँ, स्थानीय कला में मन्दिरों की पिछवईयाँ, आदि संग्रहालय की अत्यन्त मूल्यवान धरोहर हैं :-

संग्रहालय में निम्नानुसार जनसामान्य के अवलोकनार्थ वीथिकाएं प्रदर्शित हैं :-

(1) टेराकोटा एवं पाषाण मूर्तिकला वीथिका
(2) मौर्य युगीन वीथिका
(3) शुंग युगीन वीथिका
(4) कुषाण युगीन वीथिका
(5) नाग वीथिका
(6) गुप्त युगीन वीथिका
(7) बुद्ध वीथिका
(8) कृष्ण बलराम वीथिका
(9) मध्यकालीन वीथिका
(10) सूर्य वीथिका
(11) गंधार वीथिका

माह नवम्बर, 2018 तक सम्पन्न कार्यक्रमों/गतिविधियों का विवरण

क्र0 सं0	दिनांक	कार्यक्रम का विवरण
1	14-04-2018	बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जन्म दिवस तथा 'विश्व धरोहर दिवस' के उपलक्ष्य में **मथुरा एवं गांधार कला में बुद्ध** छायाचित्र प्रदर्शनी।
2	18-05-2018	राजकीय संग्रहालय, मथुरा एवं युगान्तर प्रकाशन, मथुरा के संयुक्त तत्वाधान में महत्वपूर्ण कलाकृतियों की छायाचित्र प्रदर्शनी तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों व उनके परिवार कात्याग, संघर्श विशय पर संगोष्ठी का आयोजन।
3	09-08-2018	बाल फिल्म प्रदर्शन का आयोजन किया गया।
4	01-09-2018	प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण के निर्माण में सिक्कों का योगदान विषयक व्याख्यान आयोजन किया गया।
5	12-10-2018	लघुचित्रों में श्रीकृष्ण लीला विषयक छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
6	20-11-2018	विश्व धरोहर सप्ताह के उपलक्ष्य में चित्रकला प्रतियागिता का आयोजन किया गया।

कला कृतियों का अधिग्रहण- चालू वित्तीय वर्ष 2018-19 में कोई मूर्ति अधिग्रहीत नहीं की गयी है।

वीथिकाओं का रख-रखाव एवं नवीनीकरणः-संग्रहालय में जनसामान्य के अवलोकनार्थ कुल 11 वीथिकाओं का नवीनीकरण किया जा रहा है।

पुस्तकालयः- संग्रहालय में एक विशाल पुस्तकालय है। पुस्तकालय, संग्रहालय अपने वाले शोधार्थियों/विद्यार्थी तथा जिज्ञासु जनों के अध्ययन हेतु खुला हुआ है। पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा अध्ययन कार्य हेतु आगन्तुकों को पूर्ण सहायोग प्रदान किया जाता है।

अनुभागीय गतिविधियॉं (छायाचित्र, रसायन, मॉडलिंग):- छायाचित्रशाला में कनिष्ठ फोटोग्राफर की नियुक्ति है। इनके द्वारा संग्रहालय में समय-समय पर आयोजित कार्यक्रमों, व्याख्यान, प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता आदि की फोटोग्राफी की जाती है। मॉडलिंग अनुभाग न होने के कारण काफी समय से बन्द है। रसायनविद् द्वारा संरक्षण कार्य किये जा रहें हैं।

पदों का विवरण

इस संग्रहालय में वर्तमान में निम्नलिखित पद स्वीकृत हैं:-

क्र.सं.	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल	पदों की संख्या
1	2	3	4	5	6
1	उपनिदेशक	15600-39100	6600	लेवल-11	01
2	सहायक निदेशक	9300-34800	4800	लेवल-8	01
3.	मॉडलर	9300-34800	4200	लेवल-6	01
4.	प्रदर्शक व्याख्याता	9300-34800	4200	लेवल-6	02
5	प्रधान सहायक	9300-34800	4200	लेवल-6	01
6.	पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड-।।	5200-20200	2800	लेवल-5	01
7.	रसायनविद् -।।	5200-20200	2800	लेवल-5	01
8.	आशुलिपिक	5200-20200	2800	लेवल-5	01
9	कनिष्ठ फोटोग्राफर	5200-20200	2400	लेवल-4	01
10.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	01
11.	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	लेवल-3	04
12.	बिक्री सहायक	5200-20200	1900	लेवल-2	01
13.	संग्रहालय सहायक	5200-20200	1900	लेवल-2	01
14.	वाहन चालक	5200-20200	1900	लेवल-2	01
15	कर्मशाला/रसायनशाला सहायक	5200-20200	1900	लेवल-2	01
16	जमादार	5200-20200	1900	लेवल-2	01
17	दफ्तरी	5200-20200	1900	लेवल-2	01
18.	वर्कशॉप मिस्त्री	5200-20200	1800	लेवल-1	01
19.	बुकबांइडर/ बुक लिफ्टर	5200-20200	1800	लेवल-1	01
20.	मार्क्समैन	5200-20200	1800	लेवल-6	01
21.	विद्युत मिस्त्री	5200-20200	1800	लेवल-1	01
22.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	04
23.	चपरासी	5200-20200	1800	लेवल-1	07
24.	माडलिंग परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	01
25.	फर्राश	5200-20200	1800	लेवल-1	01
26.	साइट कुली	5200-20200	1800	लेवल-1	01
27.	भिश्ती	5200-20200	1800	लेवल-6	01
28.	चौकीदार	5200-20200	1800	लेवल-1	04
29.	माली	5200-20200	1800	लेवल-1	03
30.	सफाई कर्मचारी	5200-20200	1800	लेवल-1	02
31.	गार्डनर/डे चौकीदार	5200-20200	1800	लेवल-1	01
कुल योग					**50**

राजकीय संग्रहालय, झाँसी

विन्ध्यांचल की गोद में बसे बुन्देलखण्ड का अतीत गौरवशाली रहा है। बुन्देलखण्ड पुरातात्विक दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न है। इस क्षेत्र से प्राप्त होने वाले पाषाण एवं ताम्र उपकरण इस बात का परिचायक है कि हजारों वर्ष पूर्व आदिमानव यहॉ विचरण करता था। देश के अतीत का दर्शन संग्रहालय के प्रदर्शो से होता है। ये प्रदर्श हमारे अतीत की समुन्नत विरासत का प्रतिनिधित्व करते है। बुन्देलखण्ड की यत्र-तत्र बिखरी कला सम्पदा के संग्रह, संरक्षण, अभिलेखीकरण के साथ ही इस क्षेत्र के गरिमामयी इतिहास एवं संस्कृति की जानकारी जन सामान्य को

उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यहॉ पर उ0प्र0 सरकार द्वारा सन् 1978 में राजकीय संग्रहालय की स्थापना की गयी। वर्तमान भवन का शिलान्यास तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी द्वारा 1982 में तथा उद्घाटन उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री मोती लाल बोरा द्वारा 29 जनवरी, 1996 को किया गया ।

संकलन

राजकीय संग्रहालय, झॉसी में लगभग 22000 कलाकृतियॉ संग्रहीत है जिनमें प्रस्तर प्रतिमायें, मृण्मूर्तियाँ, धातु मूर्तियाँ, शिलालेख, ताम्रपत्र, सिक्के, मुहरें तथा विभिन्न शैली के लघुचित्र, आभूषण तथा काष्ठ कला से सम्बन्धित वस्तुएं संग्रहीत है।

संग्रहालय की विभिन्न वीथिकाओं में लघु चित्र जिनमें राजस्थानी, पहाड़ी कोटा आदि शैली के चित्र प्रदर्शित किये गये। वैष्णव प्रतिमायें, गणेश की चौदहभुजी नृत्य प्रतिमा अत्यन्त महत्वपूर्ण और सौन्दर्य की दृश्टि से प्रभावशाली है, प्रदर्शित की गयी है।

प्रवेश शुल्क रू0 5/- वयस्क भारतीय
रू0 20/- विदेशी पर्यटक
रू0 20/- कैमरा शुल्क

छायाचित्र अनुभाग- पद रिक्त

पुस्तकालय- आलोच्य अवधि में 25 शोधार्थियों द्वारा अपने विषय का अध्ययन किया गया।

भ्रमण- आलोच्य अवधि में 35273 द-र्कों व 19 विदेशी पर्यटकों तथा 6161 स्कूली बच्चों व 645 अध्यापकों ने संग्रहालय का भ्रमण किया।

आय- संग्रहालय को कैमरा शुल्क प्रकाशन, मींटिंग हॉलशुल्क एवं संग्रहालय प्रवेश शुल्क की बिक्री आदि से माह 01 अप्रैल 2018 से 30 नवम्बर, 2018 तक रूपया नौ लाख तैतीस हजार पनचानवें मात्र की आय प्राप्त हुई।

राजकीय संग्रहालय झॉसी में 01 जनवरी से 30 नवम्बर, 2018 तक कराये गये ैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विवरण।

क्रम सं0	दिनांक	कार्यक्रम
1	09.01.2018	राजकीय संग्रहालय झॉसी एवं डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा स्मृति ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधन में पद्मभूषण डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा स्मृति दिवस का आयोजन किया गया।
2	17.01.2018	राई नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
3	8 फरवरी, 2018 से 10 फरवरी, 2018 तक	03 दिवसीय चित्रकला प्रदर्शनी राजकीय संग्रहालय झांसी एवं बुन्देलखण्ड आर्ट सोसायटी के संयुक्त तत्वाधन में लगायी गयी।
4	27 मार्च, 2018	झॉसी संग्रहालय एवं बुन्देली निमो ग्रुप के संयुक्त तत्वाधान में विश्व रंगमंच के अवसर पर सैया भये कोतवाल हास्य नाट्य की प्रस्तुति करायी गयी।
5	14 अप्रैल, 2018	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई झॉसी के संयुक्त तत्वाधन में मनाई गयी।
6	02 मई, से 12 मई, 2018	ज्वैलरी मेकिंग एक्टिग व क्ले माडलिंग आदि कार्यो का प्रशिक्षण दिया गया।
7	माह जून, 2018	संग्रहालय के प्रत्येक शुक्रवार को बच्चों के लिये फिल्म प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
8	20 जुलाई से 22 जुलाई, 2018	चित्र काला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
9		स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय गीत एवं नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
10	02 अक्टूबर, 2018	खादी वस्त्रों की प्रदर्शनी एवं चरखा से सूत काटने की विधि का प्रशिक्षण दिया गया।
11	10 नवम्बर, 2018 से 25 नवम्बर, 2018 तक	चित्रकला प्रतियोगिता बुन्देलखण्ड के इतिहास पर सेमिनार, ऐतिहासिक स्थलों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

संग्रहालय में वर्तमान में निम्नलिखित पद स्वीकृत हैं :-

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल	पदों की संख्या
1	2	3	4	**5**	6
1.	उप निदेशक	15600-39100	6600	लेवल-11	01
2.	सहायक निदेशक	9300-34800	4800	लेवल-8	01
3.	मॉडलर	9300-34800	4600	लेवल-7	01
4.	फोटोग्राफर	9300-34800	4200	लेवल-6	01
5.	आशुलिपिक	5200-20200	2400	लेवल-4	01
6.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	01
7.	सहायक लेखाकार	5200-20200	2800	लेवल-5	01
8.	संग्रहालय सहायक	5200-20200	1900	लेवल-2	01
9.	कनिष्ठ सहायक (स्टोर)	5200-20200	2000	लेवल-3	01
10.	ड्राईवर	5200-20200	1900	लेवल-2	01
11.	कैबिनेट कम पेडस्टल मेकर	5200-20200	1800	लेवल-1	01
12.	बिजली मिस्त्री	5200-20200	1800	लेवल-1	01
13.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	06
14.	चपरासी	5200-20200	1800	लेवल-1	01
15.	चौकीदार	5200-20200	1800	लेवल-1	02
16.	चौकीदार कम माली	5200-20200	1800	लेवल-1	01
17.	माली	5200-20200	1800	लेवल-1	01
18.	स्वीपर	5200-20200	1800	लेवल-1	01
			योग :		24 पद

अन्तर्राष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय एवं आर्ट गैलरी, नयाघाट, अयोध्या

अयोध्या के महत्व तथा रामकथा की व्यापकता को दृष्टिगत रखते हुए मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की जन्म स्थली तथा भारतीय जनमानस के श्रद्धा का केन्द्र अयोध्या में संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 सरकार द्वारा रामकथा संग्रहालय की स्थापना माह जनवरी,1988 में की गयी तब से निरन्तर अपने उद्देश्यों के प्रति रामकथा संग्रहालय अग्रसर है।

संग्रहालय का उद्देश्य जहॉ एक तरफ रामकथा विषयक सचित्र, पाण्डुलिपियों, मूर्तियों, रामलीला व अन्य प्रदर्श कलाओं से सम्बन्धित सामग्री, अयोध्या परिक्षेत्र के पुरावशेषों, दुलर्भ सांस्कृतिक सम्पदा व प्रदर्श कलाओं, अनुकृतियों, छायाचित्रों का संकलन व परिरक्षण करना है वही दूसरी तरफ संकलित सामग्री का वीथिकाओं में प्रदर्शन, छायाचित्रण व अभिलेखीकरण तथा शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत व्याख्यानों, गोष्ठियों, प्रतियोगिताओं व कार्यशालाओं तथा अस्थायी प्रदर्शनियों का आयोजन करना भी है।

संग्रहालय में अभी तक 1020 कलाकृतियों का संकलन हो चुका है तथा 313 कलाकृतियों को संग्रहालय वीथिका में प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय देखने के लिए दर्शकों के लिए निःशुल्क व्यवस्था है। प्रतिमाह लगभग 2000 से अधिक दर्शक संग्रहालय का भ्रमण करते हैं। स्थानीय मेलों, विभिन्न त्योहारों, रामनवमी, चौदह कोसी परिक्रमा आदि के अवसरों पर दर्शकों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है।

शोधार्थियों की सुविधा के लिए संग्रहालय में एक पुस्तकालय भी है जिसमें अभी तक 857 पुस्तकों को पंजीकृत किया जा चुका है जो संग्रहालय में दिनांक 01 जनवरी, 2015 से नवनिर्मित भवन में संचालित है। तेरहवें वित्त आयोग की योजना की स्वीकृत धनराशि से संग्रहालय वीथिका के गठन का कार्य चल रहा है। माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार गुमनामी बाबा उर्फ भगवान जी से सम्बन्धित 425 सामग्री जिला कोषागार फैजाबाद से दिनांक 7 अप्रैल,2016 को संग्रहालय में हस्तान्तरित की गयी है। उक्त सामग्री के संरक्षण व प्रदर्शन हेतु वीथिकाओं के गठन का कार्य पूर्ण हो चुका है।

शैक्षिक गतिविधियां (माह अप्रैल से नवम्बर, 2017 तक)-

क्रम स0	माह	कार्यक्रम विवरण
1	18 मई ,2018	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर व्याख्यान का आयोजन।
2	12-16 जून, 2018	विद्यालयों में ग्रीष्म अवकाश के अवसर पर पॉच दिवसीय चित्रकला प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन संग्रहालय में किया गया।
3	29 जुलाई, 2018	शैक्षणिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिव्यांगों विद्यार्थियों द्वारा कला अभिरूचि का आयोजन संग्रहालय में किया गया।
4	30 अगस्त, 2018	रामायण के प्रसंगों पर आधारित चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन जूनियर वर्ग कक्षा-8 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए किया गया तथा तदोपरान्त प्रमाण-पत्र व पुरस्कार वितरण किया गया।
5	29 सितम्बर, 2018	सीनियर वर्ग की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन
6	30 अक्टूबर, 2018	मूक वधिर बच्चों द्वारा निर्मित चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
7	4-6 नवम्बर, 2018	दीपावली के अवसर पर संग्रहालय परिसर में राम बाजार का कार्यक्रम हुआ।
8	07 दिसम्बर, 2018	व्याख्यान का आयोजन किया गया।
9	जनवरी, 2019	संग्रहालय स्थापना दिवस का व्याख्यान का आयोजन ।
10	फरवरी, 2019	चित्र का प्रदर्शनी का आयोजन।
11	मार्च, 2019	रामकथा पर चित्रित प्रदर्शनी बच्चों द्वारा लगाई जायेगी।

संग्रहालय मे संचालन हेतु निम्नलिखित पद सृजित है :-

क्रमांक	पदनाम	वेतनमान	ग्रेड वेतन	**पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल**	पदों की संख्या
01	उपनिदेशक	5600-39,100	6600	लेवल-11	01
02	वीथिका सहायक	9300-34,800	2400	लेवल-4	01
03	सहायक लेखाकार	9300-34,800	2800	लेवल-5	01
04	वाहन चालक	5200-20,200	1900	लेवल-2	01
05	वीथिका परिचर	5200-20,200	1800	लेवल-1	01
06	चपरासी/अर्दली	5200-20,200	1800	लेवल-1	01
07	चौकीदार/माली	5200-20,200	1800	लेवल-1	02
कुल योग					**08**

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर

पूर्वी उत्तर प्रदेश का क्षेत्र ऐतिहासिक व पुरातात्विक दृष्टि से न केवल भारत, बल्कि विश्व में विख्यात है। शाक्यों का कपिलवस्तु, कोलियों का रामग्राम, मोरियों का पिप्पलीवन एवं मल्लों की राजधानी कुशीनगर तथा पावा भी इसी क्षेत्र में स्थित है, जिनकी शासन पद्धति जनतंत्रात्मक थी। ऐसे में हम कह सकते हैं कि जनतंत्र की प्रथम प्रयोगशाला होने का गौरव भी इस क्षेत्र को प्राप्त है। इतना ही नहीं, यहॉ के गणराज्य निःसंदेह यूनानी गणराज्यों से भी प्राचीन थे। पूर्वी उत्तर प्रदेश बौद्ध धर्म के उद्भव और विकास का हृदय स्थल रहा है। भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित स्थान लुम्बिनी, देवदह, कोलियों का रामग्राम, कोपिया एवं तथागत की महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर इसके महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर महावीर की परिनिर्वाण स्थली पावा भी इसी क्षेत्र में विद्यमान है। आमी नदी के तट पर स्थित संत शिरोमणि कबीर की निर्वाणस्थली मगहर और नाथ पंथ के गुरू गोरक्षनाथ की तपोभूमि होने का गौरव भी इस क्षेत्र को प्राप्त है।

2- संग्रहालय का उद्देश्य एवं गतिविधियां -

पूर्वी क्षेत्र में यत्र-तत्र बिखरी कला सम्पदा के संग्रह, संरक्षण, अभिलेखीकरण, प्रदर्शन एवं शोध के साथ ही इस क्षेत्र के गरिमामय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व की जानकारी जन सामान्य को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग, उ0प्र0 शासन द्वारा सन् 1987 में राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर की स्थापना की गई। वर्तमान में रामगढ़ताल परियोजनान्तर्गत निर्मित संग्रहालय भवन गोरखपुर रेलवे एवं बस स्टेशन से लगभग 6 किमी0 दक्षिण एवं सर्किट हाउस से लगभग 1 किमी0 दक्षिण-पूर्व में स्थित है।

भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति और पुरातत्व की जानकारी जन-सामान्य को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत विविध प्रतियोगिताओं एवं प्रदर्शनी के अतिरिक्त प्रतिष्ठित विद्वानों के व्याख्यान भी आयोजित किये जाते हैं। संग्रहालय द्वारा संग्रहीत कलाकृतियां जहॉ एक ओर हमारे समृद्ध कला एवं संस्कृति का आभास कराती हैं, वहीं दूसरी ओर वर्तमान पीढ़ी को उनके गौरवमयी विरासत से परिचित भी कराती हैं।

संग्रहालय द्वारा समय-समय पर स्थलीय सर्वेक्षण, दान, उपहार, दीर्घकालीन ऋण एवं क्रय द्वारा संग्रह में अभिवृद्धि की जाती रही है। संग्रहालय में प्रागैतिहासिक उपकरणों के साथ-साथ प्रस्तर, मूर्तियों मृण्मूर्तियों व धातु मूर्तियों, आभूषण, सिक्के, लघुचित्र, थंका, हाथीदॉत एवं हस्तलिखित ग्रन्थ, डाक टिकट आदि का संकलन है।

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर में संग्रहीत कलाकृतियों में से कतिपय चयनित कलाकृतियों को जनसामान्य के अवलोकनार्थ निम्नलिखित वीथिकाओं में प्रदर्शित किया गया है -

<u>प्रथम वीथिका</u>- राहुल सांकृत्यायन कला वीथिका में भगवान बुद्ध तथा बौद्ध धर्म से सम्बन्धित मथुरा व गांधार शैली में निर्मित कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है। धर्म और कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण पवित्र मांगलिक चिन्हों से युक्त मथुरा शैली की कुषाणकालीन अभिलिखित आयागपट्ट के अतिरिक्त जैन तीर्थंकर ऋषभनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर की प्रस्तर प्रतिमाएं भी इस वीथिका में प्रदर्शित की गयी हैं।

<u>द्वितीय वीथिका</u>-पुरातत्व वीथिका में पाशाणकालीन उपकरणों, प्रस्तर मूर्तियों एवं पूर्व मौर्य काल से गुप्त काल तक की मृण्मूर्तियों को कालक्रमानुसार प्रदर्शित किया गया है। वीथिका में प्रदर्शित मौर्यकाल से गुप्तकाल तक की मृण्मूर्तियों में शिशु का आहार करती डाकिनी (हारिति), मोढ़े पर बैठी पशु-सिर युक्त मातृका, शुकसारिका, विविध पशु-आकृतियां, मत्स्य व जलपात्र के अतिरिक्त सिक्कों एवं मृण्मूर्तियों के सांचे विशेष रूप से दर्शनीय हैं। हिन्दू धर्म से सम्बन्धित प्रस्तर मूर्तियों में अष्टभुजी गणेश, त्रिशूलधारी शिव, दशावतार विष्णु, सप्तमातृकापट्ट, नवग्रहपट्ट एवं कसौटी पत्थर पर बनी पाल शैली की उमा-महेश्वर की प्रतिमा दर्शनीय है।

<u>तृतीय वीथिका-</u> कला के विविध आयाम में कुषाण काल से आधुनिक काल तक की विविध माध्यमों (प्रस्तर, मृण्, धातु, हाथी दॉत, सीसा आदि) में बनी कलाकृतियां प्रदर्शित की गई हैं।

<u>चतुर्थ वीथिका-</u> चित्रकला वीथिका में तिब्बत एवं नेपाल में प्रचलित थंका तथा राजस्थानी एवं पहाड़ी शैली के विविध विषयों पर आधारित लघुचित्रकला के नमूने प्रदर्शित किये गये हैं।

<u>पॉचवीं वीथिका</u>-जैन वीथिका में जैन धर्म से सम्बन्धित कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। वीथिका में चौबीस तीर्थंकरों के जन्म स्थान, माता-पिता तथा उनके लांछन सहित प्रदर्शित कलाकृतियों का संक्षिप्त इतिहास जनसामान्य के आकर्षण का केन्द्र है।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर विविध विषयों पर आधारित अस्थाई प्रदर्शनी एवं शैक्षिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

4- पुस्तकालय -

संग्रहालय में एक संदर्भ पुस्तकालय भी है, जिसमें कला, इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व, मुद्राशास्त्र एवं प्रतिमाशास्त्र से सम्बन्धित पुस्तकों का संकलन है। भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति एवं पुरातत्व के विभिन्न विषयों पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले शोध छात्रों/विद्वतजन को संग्रहालय द्वारा आवश्यक

जानकारी तथा संदर्भ पुस्तकालय की सुविधा प्रदान की जाती है।

शैक्षिक गतिविधियॉं (माह अप्रैल से 30 नवम्बर, 2018 तक)-

क्रम सं0	दिनांक	कार्यक्रम
1	14 अप्रैल 2018	''भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का योगदान'' विषयक परिचर्चा तथा डॉ0 अम्बेडकर के जीवन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
2	18-30 अप्रैल 2018 (वि-व धरोहर दिवस)	प्राचीन स्मारकों पर आधारित (शिल्प एवं कला में खुजराहो) पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
3	04 मई 2018	संग्रहालय स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया।
4	18 मई, 2018	विश्व संग्रहालय दिवस पर छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
5	01-03 जून, 2018	टेक्सटाइल डिजाइन एवं फैशन पर चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
6	27 जुलाई, 2018	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
7	16-22 जुलाई, 2018	संग्रहालय परिसर में वृक्षारोपण कियागया।
8	10-11 अगस्त, 2018	मूड्स आफ रामगढ़ताल विषय पर चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
9	14 अगस्त, 2018	स्वतंत्रता आन्दोलन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन कि गया।
10	20 सितम्बर, 2018	चित्र कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
11	26 अक्टूबर, 2018	संग्रहालय सभागार में शैक्षिक फिल्म शो का आयोजन किया गया।
12	22 नवम्बर, 2018	संग्रहालय में बौद्ध कला पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन कि गया।
13	25 नवम्बर, 2018	क्ले माडलिंग वर्कशाप एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
14	19-25 नवम्बर, 2018	शैक्षिक भ्रमण पर आने वाले 02 विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को संग्रहा की कलाकृतियों के विशय में वीथिका व्याख्यान से विशेष जानकारी दी गय

6- प्रवेश टिकट -

संस्कृति विभाग, उ0प्र0 शासन द्वारा राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर हेतु प्रवेश टिकट की व्यवस्था निम्नवत निर्धारित की गई है -

1- 5 वर्ष तक के बच्चों के लिए - निःशुल्क।
2- 5 वर्ष से ऊपर आयु के भारतीय दर्शकों हेतु प्रवेश शुल्क रू0 3.00 मात्र प्रति दर्शक।
3- विदेशी पर्यटकों हेतु प्रवेश शुल्क - रू0- 10.00 मात्र प्रति दर्शक।
4- फोटो कैमरा शुल्क - रू0- 20.00 मात्र प्रति कैमरा।
5- शैक्षिक भ्रमण एवं शोधार्थियों हेतु - निः शुल्क।
6- सभागार/प्रदर्शनी हाल का किराया - रू0 2000.00प्रति दिन,प्रति हाल

संग्रहालय भ्रमण -

संग्रहालय में दिनांक 01 अप्रैल, 2018 से 38 नवम्बर, 2018 तक शैक्षिक भ्रमण सहित आने वाले भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों का विवरण निम्नवत है -

(1) शैक्षिक भ्रमण पर आने वाले विद्यालयों/महाविद्यालयों की कुल संख्या - 14
(2) शैक्षिक भ्रमण सहित कुल भारतीय दर्शकों की संख्या - 3075
(3) विदेशी दर्शकों की संख्या - 04

राजस्व प्राप्तियां- चालू वित्तीय वर्ष 2018-19 में दिनांक 01 अप्रैल, 2018 से 30 नवम्बर, 2018 तक कुल

रू0 15003.00 (रू0 पन्द्रह हजार तीन रूपये मात्र) की राजस्व प्राप्तियॉ हुई।

स्वीकृत पदों का विवरण -

पूर्वांचल के गरिमामय इतिहास, कला एवं संस्कृति के बहुमुखी विकास हेतु यह संग्रहालय सतत प्रयत्नशील है। संग्रहालय के समुचित संचालन हेतु संस्कृति विभाग, उ0प्र0 शासन द्वारा निम्नलिखित पद सृजित हैं -

क्र0सं0	पद का नाम	वेतनमान	ग्रेड वेतन	**पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल**	पदों की संख्या
1	2	3	4	5	6
1	उप निदेशक	15600-39100	6600	लेवल-11	1
2	लेखाकार	5200-20200	4200	लेवल-6	1
3	आशुलिपिक	5200-20200	2800	लेवल-5	1
4	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	1
5	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	लेवल-3	1
6	ड्राइवर	5200-20200	1900	लेवल-2	1
7	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	4
8	चपरासी	5200-20200	1800	लेवल-1	2
9	चौकीदार	5200-20200	1800	लेवल-1	2
10	सफाई कर्मचारी/फर्राश	5200-20200	1800	लेवल-1	1
				योग-	**15**

<u>लोक कला संग्रहालय,लखनऊ</u>

लोक कला परम्पराएं हमे विरासत एवं परम्पराओं से प्राप्त होती है, जिनका मूल अति प्राचीन है। जन्म से लेकर मृत्यु तक यह हमारे जीवन में रची-बसी है और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती है। किन्तु सामयिक परिवर्तन के कारण आधुनिकीकरण एवं औद्योगीकरण की ऑधी में हमारे प्रदेश की लोक कला परम्पराएं शनैः-शनैः विलुप्त होती जा रही है एवं इनका मूलस्वरूप परिवर्तित हो रहा है। इसलिए इन प्राचीन लोक कला परम्पराओं के मूल स्वरूप को अक्षुण्य बनाये रखने एवं इनके विशेष दस्तावेजों को संकलित कर भविष्य के लिए सुरक्षित रखने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग उ0प्र0 द्वारा फरवरी 1989 में लोक कला संग्रहालय की स्थापना कला परिसर कैसरबाग,लखनऊ में की गयी थी। वर्तमान में नवनिर्मित लोक कला संग्रहालय भवन, राज्य संग्रहालय परिसर,चिड़िया घर,बनारसी बाग,लखनऊ में स्थापित है।

लोक कलाओं के संकलन,संरक्षण तथा प्रदर्शन की दिशा में कार्यरत लोक कला संग्रहालय प्रदेश का एकमात्र संग्रहालय है।

<u>संकलन</u>:- सम्प्रति संग्रहालय में प्रदेश के विभिन्न अंचलों की उत्कृष्ट एवं दुर्लभ लोक कलाओं से सम्बन्धित लगभग 1900 कलाकृतियों का संग्रह है। इनमें लोकनृत्य,लोकवाद्य, लोककला आलेखन,आभूषण,पोशाक,टेराकोटा,पारम्परिक मुखौटे,काष्ठ,लौह,एवं प्रस्तर के खिलौने तथा इनसे सम्बन्धित कला नमूने संग्रहीत है। संग्रहालय में भूमि एवं भित्ति अलंकरण से सम्बन्धित लोक कला चित्रों की समय-समय पर प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। लोक कला संग्रहालय में चित्रों का विशाल संग्रह है जो संरक्षित संकलन के रूप में व्यवस्थित है। संग्रहालय में कला प्रदर्शनी का संग्रह प्रदर्श क्रय समिति के माध्यम से तथा स्थान-स्थान का भ्रमण और सर्वेक्षण कर किया जाता है।

<u>प्रदर्शनः</u>-(क) संग्रहालय में उपलब्ध कला प्रदर्शनी को प्रदेश के प्रमुख 5 क्षेत्रों

यथा-ब्रज,बुन्देलखण्ड,अवध,भोजपुर,रूहेलखण्ड में विभक्त किया गया है। इनके क्षेत्रवार प्रदर्शन हेतु अलग-अलग कक्षों का निर्माण कराकर उनमें कलाकृतियों को अत्यन्त आकर्षक ,सुरूचिपूर्ण एवं आधुनिक तकनीक से प्रदर्शित किया जा रहा है।

(ख) लोक नृत्यों के डायरोमा, विवाह मण्डप,जनेऊ संस्कार के डायरोमा, पोषाक, लोकवाद्य, मुखौटे, खिलौने तथा क्षेत्र विशेष की रहन-सहन की शैली को दर्शाते हुए भिन्न-भिन्न प्रकार की पारम्परिक नृत्य एवं लोक जीवन से सम्बन्धित आकर्षक डायरोमा तैयार करवाकर प्रदर्शन कराया जायेगा। संग्रहालय विकास कार्य अभी प्रगति की ओर अग्रसर हैं।

भूमि एवं भित्ति अलंकरण:- प्रदेश में भूमि एवं भित्ति अलंकरण की विविध परम्पराएं बहुत समद्व रूप में विद्यमान है। आलेखन शुभ कार्यो एवं पूजा अनुष्ठान के अवसर पर हाथ की अंगुलियों द्वारा मॉगलिक प्रतीक और सुख समृद्वि की भावना से बनाये जाते है। संग्रहालय में आलेखन और चित्रों का अद्वितीय संग्रह है। समय-समय पर जिनकी प्रदर्शनी भी लगायी जाती है।

टेराकोटा मिट्टी की मूर्तियॉः- टेराकोटा एक परम्परागत हस्तशिल्प है। साधारण तौर पर टेराकोटा के अर्न्तगत देवी-देवताओं की मूर्तियॉ ,घोड़ा, हाथी और खिलौने बनाये जाते है। संग्रहालय में टेराकोटा का विशाल संग्रह है। जिसकी एक अलग वीथिका बनवायी जा सकती है।

आभूषणः- प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र के पहनावे रहन-सहन में विविधता पायी जाती है। इसके अर्न्तगत अलग-अलग क्षेत्रों के विविध प्रकार के प्राचीन तथा दुर्लभ लोक कलात्मक आभूषण संग्रहालय में संग्रहीत कर प्रदर्शित किये गये है।

हस्तशिल्पः- अवध के ग्रामीण अंचलों में मूँज तथा बेंत के हस्तशिल्प अत्यन्त लोकप्रिय है। बॉस-मूँज के बेंत से बने डलिया,टोकरी,चटाई,फूलदान,पंखे,सूप आदि कलात्मक सामग्रियॉ आज भी दैनिक जीवन में देखने को मिलती है। जिनके उत्कृष्ट नमूने संग्रहालय में प्रदर्शित है।

डायरोमा:- लोकनृत्य एवं जीवन शैली तथा लोक प्रथाओं से सम्बन्धित बड़े-बड़े डायरोमा का निर्माण किया गया है।

पुस्तकालयः- लोक कला संग्रहालय में लोक कला संस्कृति से सम्बन्धित पुस्तकालय भी है। जिसमें लोकनृत्य,लोक संगीत,प्राचीन इतिहास, लोक कला एवं संस्कृति से सम्बन्धित 900 पुस्तकें उपलब्ध है। तत्सम्बन्धित और पुस्तकों को क्रय कर पुस्तकालय का विस्तार किया जा रहा है।

पर्यटक सुविधायें:- संग्रहालय में आने वाले पर्यटकों को यहॉ प्रदर्शित कलाकृतियों के साथ विभिन्न क्षेत्रों के जन-जीवन,रहन-सहन, स्थानीय, तीज त्यौहारों ,नृत्यों एवं अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। इच्छुक दर्शकों को फोल्डर उपलब्ध कराएं जाते है। विभिन्न तलों पर जाने के लिए तथा दिव्यांग दर्शकों के सुविधा के लिए लिफ्ट लगवाई गयी है।

अन्य कार्यक्रम:- संग्रहालय द्वारा तेरहवें वित्त आयोग के अर्न्तगत पांच वीथिकाओं ब्रज, बुन्देलखण्ड, अवध, भोजपुर, एवं रूहेलखण्ड के शोकेसों एवं प्रदर्शन व्यवस्था को और अधिक रूचिकर एवं जनसामान्य के लिए ज्ञानवर्धक बनाएं जाने पर कार्य किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अधिक प्रचार-प्रसार के लिए जन सामान्य की अधिक से अधिक भागीदारी बढ़ाये जाने हेतु समय-समय पर संग्रहालय द्वारा शैक्षिक कार्यक्रम तथा व्याख्यान,प्रदर्शनी,कार्यशाला,संगोष्ठी,टेराकोटा कैम्प,प्रतियोगिताएं कराकर इन कार्यक्रमों में निर्मित सामग्रियों को सेल काउन्टर के माध्यम से बिक्री कराये जाने का प्राविधान कराये जाने का विचार विमर्श किया जा रहा है। आडियो विजुअल के माध्यम से बच्चों को अधिक से अधिक विलुप्त होती लोक कलाओं के बारे में जानकारी प्रदान की जा सकें।

लोक कला संग्रहालय, लखनऊ में निम्नलिखित पद सृजित हैः-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतन/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल	पदों की सं0
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	लेवल-8	1

2.	वीथिका सहा0/वरिष्ठ लिपिक	5200-20200	2400	लेवल-4	2
3.	चौकीदार कम सफाई कर्मचारी	5200-20200	1800	लेवल-1	3
4.	चपरासी कम माली	5200-20200	1800	लेवल-1	1
5.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	1
				योगः	08

जनपदीय संग्रहालय सुलतानपुर

सुलतानपुर जनपद के अनेक महत्वपूर्ण पुरास्थलों जैसे-शनिचरा, कूंड, भांटी, सोमनाभार, कालू पाठक का पुरवा, अहिरन पलिया, सोहगौली, महमूदपुर आदि स्थलों पर पुरा सांस्कृतिक सम्पदा बिखरी दिखाई देती है, यही नहीं इस जनपद के आस-पास के जनपदों में भी धरती के गर्भ से बराबर अतीत की धरोहर निकलती रहती है। इसके विविध आयामों से संबंधित सामग्रियों और बिखरी पुरासांस्कृतिक सम्पदा को संकलित, सुरक्षित, प्रदर्शित, प्रलेखीकृत व प्रकाशन कर उन पर अनुसंधान करने कराने के उद्देश्य से वर्ष 1988-89 में इस संग्रहालय की स्थापना की गयी। आज यह संग्रहालय नगर पालिका के पीछे सुपर मार्केट सुलतानपुर के प्रथम तल पर प्रतिष्ठित है।

वीथिकायें:- वर्तमान में संग्रहालय में दो वीथिकाएं जन सामान्य के अवलोकनार्थ खुली हैं। एक वीथिका में प्रस्तर प्रतिमा एवं मृण्मूर्तियां प्रदर्शित है। दूसरी वीथिका स्व0रफी अहमद किदवई को समर्पित है। इस वीथिका में उनके जीवन में जुड़ी वस्तुओं को संजोया गया है। आलोच्य अवधि में बड़ी संख्या में लोगों ने संग्रहालय का भ्रमण किया।

संग्रह- 78 पाषाण प्रतिमा, 151 मृण्मूतियां, 1131 ताम्र सिक्के, 1118 रजत सिक्के, 18 स्वर्ण सिक्के, 03 चित्र/पांडुलिपियां, 06 ताम्र/पाषाण अभिलेख, 17 विशिष्ट सिक्के, 33 रजत/ताम्र पदक, 02 आभूषण, 46 कलात्मक वस्तुएं इस संग्रहालय में संग्रहीत हैं।

पुस्तकालय:- संग्रहालय के सन्दर्भ पुस्तकालय में कला संस्कृति एवं इतिहास की लगभग 746 (सात सौ छियालिस) पुस्तकें संग्रहीत हैं। इन सन्दर्भित ग्रंथों/पुस्तकों को शोधार्थियों एवं छात्रों को उपलब्ध कराया जाता है।

शैक्षिक गतिविधियॉ (माह अप्रैल से नवम्बर, 2018 तक)-

क्रम सं0	दिनांक	कार्यक्रम विवरण
1	18.05.2018	चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन।
2	22.06.2018	भगवान बुद्ध के जीवन दर्शन पर व्याख्यान।
3	27.07.2018	निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन।
4	24.08.2018	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन।
5	19.09.2018	रंगोली प्रतियोगिता का आयोजना।
6	27.10.2018	वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन।
7	28.11.2018	क्राफ्ट प्रतियोगिता का आयोजन।

इस संग्रहालय के संचालन हेतु निम्न पद सृजित किये गये हैं-

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल	पदों की संख्या
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34,800	4800	लेवल-8	01
2.	लेखाकार	9300-34,800	4200	लेवल-6	01
3.	वीथिका सहायक	5200-20,200	2400	लेवल-4	01
4.	वीथिका परिचर-कम-चौकीदार	5200-20,200	1800	लेवल-1	02
5.	सफाई कर्मचारी	5200-20,200	1800	लेवल-1	01

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर

भारत के बौद्ध स्थलों में कुशीनगर (कुसीनारा) का प्रमुख स्थान है। बौद्ध धर्म प्रवर्तक भगवान बुद्ध ने लगभग 80 वर्ष की अवस्था में अपना अनवरत भ्रमणपूर्ण जीवन व्यतीत करने के पश्चात् यहीं पर शालवन में महापरिनिर्वाण प्राप्त (शरीर त्याग) किया था। असंख्य भारतीय एवं विदेशी पर्यटक एवं बौद्ध धर्मानुयायी प्रतिवर्ष भगवान बुद्ध को श्रद्धांजलि अर्पित करने कुशीनगर आते हैं। कुशीनगर की धार्मिक महत्ता एवं समृद्ध ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक धरोहर ने कई देशों एवं विभागों को इस क्षेत्र में अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक संगठन स्थापित करने की प्रेरणा दी। परिणामस्वरूप यह स्थल सम्पूर्ण विश्व में श्रद्धा एवं आकर्षण का केन्द्र बन गया। कालान्तर में कुशीनगर की पुरातात्विक सम्पदा सहित भारतीय संस्कृति को संरक्षित करने के उद्देश्य से संग्रहालय के निर्माण की आवश्यकता प्रतीत हुई। एतदर्थ इस क्षेत्र में यत्र-तत्र बिखरी कला सम्पदा के संग्रह, संरक्षण, अभिलेखीकरण, प्रदर्शन एवं शोध के साथ ही क्षेत्र के गरिमामय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व की जानकारी जन सामान्य को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग, उ0प्र0 शासन द्वारा सन् 1993-94 में राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर की स्थापना की गई।

संग्रहालय द्वारा संग्रहीत कलाकृतियां जहॉ एक ओर हमारी समृद्ध कला एवं संस्कृति का आभास कराती हैं, वहीं दूसरी ओर वर्तमान पीढ़ी को उनकी गौरवमयी विरासत से परिचित भी कराती हैं।

संग्रहालय का उद्देश्य एवं गतिविधियां - संग्रहालय का प्रमुख उद्देश्य पूर्वी क्षेत्र एवं देश के अन्य भागों से प्राप्त पुरासम्पदा का संकलन, अभिलेखीकरण, संरक्षण, प्रदर्शन, प्रकाशन तथा देशी-विदेशी पर्यटकों को आकृष्ट कर उन्हें भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं की जानकारी उपलब्ध कराना है। भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति और पुरातत्व की जानकारी जन-सामान्य को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा समय-समय पर विविध शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

सर्वेक्षण/संकलन - संग्रहालय द्वारा समय-समय पर स्थलीय सर्वेक्षण, दान, उपहार, दीर्घकालीन ऋण एवं उ0प्र0 राज्य प्रदर्श क्रय समिति द्वारा क्रय की गई कलाकृतियों के माध्यम से संग्रह में अभिवृद्धि की जाती रही है। संग्रहालय में प्रस्तर, मृण्मूर्तियां, धातु मूर्तियां, सिक्के, थंका एवं डाक टिकट आदि का संकलन है। वर्तमान में संग्रहालय में क्रमांक 01/1993 से 482/2018 तक कुल 1337 कलाकृतियों/पुरावशेषों का संकलन है।

प्रदर्शन व्यवस्था - राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर में संग्रहीत कलाकृतियों में प्रस्तर मूर्तियां, मृण्मूर्तियां, वास्तुकला के अवशेष, मिट्टी की मुहरें, धातु प्रतिमाएं, तिब्बती थंका एवं सिक्के विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। चयनित कलाकृतियों को विभिन्न वीथिकाओं में प्रदर्शित किया गया है। वर्तमान में संग्रहालय में कुल 04 (चार) वीथिकाएं जनसामान्य के अवलोकनार्थ खुली हुई हैं, जिनका विवरण निम्नवत है -

<u>प्रथम वीथिका (कला वीथिका)</u> में बौद्ध, जैन एवं हिन्दू धर्म से सम्बन्धित कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है। वीथिका में प्रदर्-ित कलाकृतियों में मथुरा एवं गांधार शैली की प्रस्तर मूर्तियों के अतिरिक्त बौद्ध पूजा स्तूप, बौद्ध मन्दिर का अलंकृत द्वार, कुशीनगर क्षेत्र से प्राप्त अलंकृत ईंटें (कई ईंटों को जोड़कर बनने वाली मानवाकृति), धातु कलाकृतियां एवं तिब्बती थंका आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। वीथिका में प्रदर्शित गच (स्टको) की बनी ध्यानमुद्रा में आसनस्थ बुद्ध प्रतिमा, गुप्तकाल तक चली आने वाली गांधारयुगीन परम्परा का उत्तम उदाहरण है।

<u>द्वितीय वीथिका (अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध वीथिका)</u> में आस्ट्रेलिया में बने बौद्ध स्तूप से-चेन-चोर-खोर-लिंग माडल का प्रदर्शन बड़े ही रोचक ढंग से किया गया है। इस वीथिका में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित विभिन्न देशों की पूजा-पद्धति, बौद्ध भिक्षुओं के रहन-सहन आदि की झांकी प्रस्तुत की गई है।

<u>तृतीय वीथिका (विविध मुद्राओं में बुद्ध)</u> में भगवान बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में प्राप्त मथुरा एवं गांधार शैली की प्रस्तर मूर्तियों का प्रदर्शन किया गया है। भगवान बुद्ध की अभय मुद्रा, ध्यान मुद्रा, भू-स्पर्श मुद्रा एवं धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में प्रदर्शित कलाकृतियां निश्चित रूप से दर्शकों को आह्लादित करती है।

<u>चतुर्थ वीथिका (पुरातत्व वीथिका)</u> में प्रदर्शित मृण्मूर्तियां, मृण्पात्र, मुहरें एवं मनके तथा हड्डी की चूड़ियां आदि दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र हैं।

उक्त के अतिरिक्त संग्रहालय परिसर में इण्डो-जापान चिल्ड्रेन पार्क एवं इण्डो-जापान सांस्कृतिक केन्द्र भी दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र है।

<u>राहुल सांकृत्यान पुस्तकालय</u>- संग्रहालय में एक संदर्भ पुस्तकालय भी है, जिसमें कला, इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व, मुद्राशास्त्र एवं प्रतिमाशास्त्र आदि विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें हैं। 29 अगस्त, 2013 को पुस्तकालय का नामकरण

राहुल सांकृत्यायन के नाम पर किया गया तथा जनसामान्य के लिए खोला गया। पुस्तकालय के संग्रह में सतत् वृद्धि की जा रही है। भविष्य में पुस्तकालय को बौद्ध शोध केन्द्र के रूप में विकसित किये जाने की भी योजना है।

संग्रहालय सभागार (अज्ञेय स्मृति सभागार) - संग्रहालय का अपना एक सभागार भी है। जिसमें विविध शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। दिनांक 03 दिसम्बर, 2013 को जिला प्रशासन कुशीनगर द्वारा संग्रहालय सभागार का नामकरण प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि हीरानन्द सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के नाम पर किया गया। शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु संग्रहालय का अज्ञेय स्मृति सभागार शासन द्वारा निर्धारित किराए पर अन्य संस्थाओं को भी उपलब्ध कराया जाता है।

प्रवेश टिकट व्यवस्था-

1- 12 वर्ष तक के बच्चों के लिए -	नि:शुल्क।
2- 12 वर्ष से अधिक आयु के भारतीय नागरिकों हेतु प्रवेश शुल्क -	रू0 3.00 प्रति दर्शक।
3- विदेशी पर्यटकों हेतु प्रवेश शुल्क -	रू0 10.00 प्रति दर्शक।
4- फोटो कैमरा शुल्क -	रू0 20.00 प्रति कैमरा।
5- शैक्षिक भ्रमण/शोधार्थियों हेतु प्रवेश शुल्क -	नि:शुल्क।

शैक्षिक गतिविधियां (अप्रैल, 2018 से नवम्बर, 2019 तक)

क्र0सं0	दिनांक	कार्यक्रम
1.	14, अप्रैल, 2018	भारत रत्न बाबा सहाब डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर के जीवन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी लगभग 500 दर्शकों द्वारा अवलोकन किया गया।
2.	14 अप्रैल, 2018	संग्रहालय स्थापना दिवस पर छायाचित्र प्रदर्शनी (भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित बुद्ध चरित) का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 1000 दर्शकों द्वारा अवलोकन किया गया
3.	29 अप्रैल 2018	भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे 15 मई, 2018 तक प्रदर्शनी का लगभग 2235 दर्शकों द्वारा अवलोकन किया गया।
4.	10 से 31 जुलाई, 2018	सिक्को पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 4300 दर्शकों द्वारा अवलोकन किया गया।
5.	20 जुलाई, 2018	भू- जल सप्ताह के अवसर पर संग्रहालय परिसर में विविध प्रकार के पौधों का रोपड़ किया गया।
6.	14 अगस्त, 2018	स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें 1750 दर्शकों द्वारा अवलोकन किया गया।
7.	18. नवम्बर, 2018	स्मारकों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी को आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 5800 लोगों द्वारा अवलोकन किया गया।

4- दर्शकों/पर्यटकों की संख्या- 01 अप्रैल, 2017 से 30 नवम्बर, 2018 तक निम्नलिखित विवरणानुसार दर्शकों द्वारा संग्रहालय का भ्रमण किया गया -

(1) शैक्षिक भ्रमण पर आने वाले विद्यालय/महाविद्यालयों की कुल संख्या-	355
(2) शैक्षिक भ्रमण पर आने वाले छात्रों की संख्या-	21320
(2) शैक्षिक भ्रमण सहित कुल भारतीय दर्शकों/पर्यटकों की संख्या-	50792
(3) विदेशी पर्यटकों की संख्या-	196

5- राजस्व प्राप्तियाँ:-दिनॉक 01 अप्रैल, 2018 से 30 नवम्बर, 2018 तक प्रवेश टिकट, कैमरा शुल्क तथा सभागार किराया से रू0 100136.00 (रू0 एक लाख एक सौ छत्तीस मात्र) की राजस्व प्राप्तियॉ हुई।

स्वीकृत पदों का विवरण- संग्रहालय के संचालन हेतु संस्कृति विभाग, उ0प्र0 शासन द्वारा निम्नलिखित पद सृजित है -

क्र0सं0	पदनाम	वेतनबैण्ड/वेतनमान	**सादृश्य ग्रेड वेतन**	**पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल**	पदों की संख्या
1	2	3	4	**5**	6
1-	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	लेवल-8	01
2-	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	01
3-	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	लेवल-3	01
4-	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	01
5-	चौकीदार	5200-20200	1800	लेवल-1	01
				कुल पदों का योग	**05**

राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, कन्नौज

उ0 प्र0 में गंगा नदी के किनारे बसा कन्नौज नगर अपने इत्र व्यवसाय एवं ऐतिहासिकता के कारण देश-विदेश में प्रसिद्ध है। ईसा की छठी शती के उत्तरार्ध से लेकर बारहवीं शती के अंत तक इस नगर को उत्तर-भारत का 'प्रथम नगर' होने का गौरव प्राप्त रहा है। लगभग छः सौ वर्ष तक इस नगर के इतिहास में प्राचीन भारत की राजनीति, धर्म, दर्शन, साहित्य और कला ने बहुमुखी विकास किया। हर्ष ने थानेश्वर से आकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। इस काल में कन्नौज की विशेष उन्नति हुई, चीनी यात्री ह्वेन सांग जिसने उस समय भारतवर्ष कि यात्रा की थी, ने कन्नौज के वैभव तथा हर्ष के दान वीरता का विशद वर्णन किया है।

कन्नौज संग्रहालय समिति द्वारा 25 फरवरी, 1975 को कन्नौज में संग्रहालय की स्थापना की गयी। कन्नौज संग्रहालय में प्रागैतिहासिक अस्थि उपकरण, महाभारतकालीन स्लेटी भूरे चित्रित पात्र, उत्तरी कृष्णमार्जित मृद्भाण्ड, गुप्त, कुषाण, प्रतिहारकालीन प्रतिमाएं जिनमें भैरवरूप में विषपान, सप्त मातृकाएं, तपस्विनी पार्वती, कार्तिकेय, नृत्य गणेश, चामुण्डा, तीर्थंकर प्रतिमाएं आदि संग्रहीत हैं, इनके अतिरिक्त पक्की मिट्टी (टैराकोटा) के बने पुरावशेष जिनमें देव प्रतिमाएं, पशु-पक्षी प्रतिमाएं, पाटल मुद्रा आदि शमिल हैं। संग्रहालय में विभिन्न काल के सिक्के व हस्तलिखित पाण्डुलिपियां भी संग्रहित हैं।

वर्ष 1995-96 में संस्कृति विभाग द्वारा संग्रहालय को अधिग्रहण करने का निर्णय शासन द्वारा लिया गया। 29 फरवरी, 1996 को पुरातत्व संग्रहालय को शासकीय संग्रहालय घोषित करते हुये राजकीय पुरातत्व संग्रहालय का स्वरूप प्रदान किया गया। 17 जनवरी सन् 2014 को संग्रहालय को पुराने भवन से नवीन भवन में स्थानान्तरित कर दिया गया। संग्रहालय के आधुनिकीकरण एवं उच्चीकरण का कार्य फरवरी 2016 में प्रारम्भ हुआ जिसमें द्वितीय तल में नवीन गैलरियों का निर्माण एवं मरम्मत, फर्श व रैम्प पर टाइल्स, वाटर हार्वेसटिंग, कन्नौज के इतिहास से सम्बन्धित 18 डायरोमा का निर्माण, इत्र गैलरी, फॉल्स सीलिंग, ए0सी0, लेजर शो कक्ष इत्यादि कार्य प्रगति पर है।

संग्रहालय का उद्देश्य एवं गतिविधियां :- संग्रहालय का प्रमुख उद्देश्य कन्नौज से प्राप्त पुरासम्पदा का संकलन, अभिलेखीकरण, संरक्षण, प्रदर्शन, प्रकाशन तथा देशी-विदेशी पर्यटकों को आकृष्ट कर उन्हें भारतीय एवं कन्नौजी संस्कृति के विविध पहलुओं की जानकारी उपलब्ध कराना है। भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति और पुरातत्व की जानकारी जन-सामान्य को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाता है।

राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, कन्नौज में संग्रहीत कलाकृतियों में प्रस्तर प्रतिमा, मृण्मूर्तियां, हस्तलिखित पाण्डुलिपियॉ, मिट्टी की मुहरें, सिक्के, मृद्भाण्ड विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। संरक्षित संकलन में से कतिपय चयनित कलाकृतियों को संग्रहालय के प्रथम तल पर निर्मित दो वीथिकाओं में प्रदर्शित किया गया है :-

संग्रहालय में जन सामान्य के अवलोकनार्थ कुल 07 वीथिकाओं एवं एक लेजर शों हेतु हॉल का निर्माण किया गया है जिनमें निम्न वीथिकायें हैं:-

1. पाषाण वीथिका।
2. टेराकोटा एवं मृद्भाण्ड वीथिका।
3. पाषाण एवं टेराकोटा वीथिका।
4. लाइट एण्ड साउण्ड सहित हर्ष के जीवन पर आधारित मुख्य घटनाओं को दर्शाते डायोरमा।
5. हर्ष का दान एवं गंगा आरती लाइट एण्ड साउण्ड के माध्यम से निर्मित डायोरमा।
6. इत्र वीथिका।
7. 9 वीं से 12 वी0 भा0 ई0 पर आधारित लाइट एण्ड साउण्ड के माध्यम से निर्मित डायरोमा।

संग्रहालय में निम्नलिखित पद सृजित हैं:-

शैक्षिक गतिविधियां

क्र0सं0	दिनांक	कार्यक्रम
1.	02 अक्टूबर, 2018	गांधी जयंती पर स्कूली छात्र-छात्राओं की चित्रकला प्रतियोगिता।
2.	22-23 नवम्बर, 2018	विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर छायाचित्र प्रदर्शनी एवं कन्नौज के गौरवशाली इतिहास पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
3.	02 दिसम्बर, 2018	रोमा पर एक छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

इस संग्रहालय के संचालन हेतु निम्न पद सृजित किये गये हैं-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल	पदों की संख्या
1.	2.	3.	4.	**5**	6.
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	लेवल-8	1
2.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	1
3.	वीथिका परिचर कम चौकीदार	5200-20200	1800	लेवल-1	1
4.	सफाई कर्मचारी कम चौकीदार	5200-20200	1800	लेवल-1	1
योग					4

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, पिपरहवा, सिद्धार्थनगर

पूर्वी उत्तर-प्रदेश का क्षेत्र ऐतिहासिक व पुरातात्विक दृष्टि से न केवल भारत में बल्कि विश्व में विख्यात है। बौद्ध धर्म के इतिहास में पिपरहवा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन भारत का महत्वपूर्ण गणराज्य कपिलवस्तु हिमालय पर्वत के तराई क्षेत्र में स्थित था। यह वह गणराज्य है जहा सिद्धार्थ जैसे होनहार, तेजस्वी राजकुमार ने राजा शुद्धोधन के पुत्र के रूप में जन्म लिया एवं कालान्तर में करूणा एवं प्रेम से ओत-प्रोत होकर सम्पूर्ण विश्व को सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख स्थलों में से एक इस स्थल की पहचान प्राचीन कपिलवस्तु के रूप में की जाती है। प्राचीन काल में कपिलवस्तु शाक्यों की राजधानी थी तथा भगवान बुद्ध के पिता शुद्धोधन शाक्य गणराज्य के प्रमुख थे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दस प्रमुख गणराज्यों में इसकी गणना की जाती थी। इस स्थल पर भगवान बुद्ध का बाल्यकाल व्यतीत हुआ था तथा राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में 29 वर्ष की अवस्था में सत्य की खोज के लिये उन्होने यहां से प्रस्थान किया। बौद्ध साहित्य में इस बात का उल्लेख है कि बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् उनके अस्थि अवशेषों को आठ भागों में विभक्त किया गया था, जिसका एक भाग शाक्यों को भी प्राप्त हुआ। यहां का मुख्य स्तूप मूल रूप से शाक्यों द्वारा भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेषों के रूप में प्राप्त भाग पर निर्मित किया गया था। यहां पर सर्वप्रथम पुरातात्विक कार्य प्रारम्भ कराने का श्रेय डब्ल्यू0सी0 पेपे को है। उत्खनन के परिणामस्वरूप यहां स्थित स्तूप से एक धातु मंजूषा प्राप्त हुई थी, जिस पर ब्राह्मी में लेख

है- सुकिति-भतिनं स भगिनिकनम स-पुत-दलनं, इयं सलिल निधने बुधस भगवते सकियान। अर्थात् इस स्तूप का निर्माण उनके शाक्य भाईयों द्वारा अपनी बहनों, पुत्रों एवं पत्नियों के साथ मिलकर किया गया था। यहां से प्राप्त मृण्मुद्राओं (सीलिंग) पर ''देव पुत्र बिहारे कपिलवस्तु भिक्खु संघस'' तथा ''महा कपिलवस्तु भिक्खु संघस'' अंकित है। इससे यह प्रमाणित होता है कि यह स्थल प्राचीन कपिलवस्तु का बौद्ध प्रतिष्ठान था।

भगवान बुद्ध की स्मृतियों से जुड़ा होने के कारण यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का है। इस क्षेत्र में यत्र-तत्र बिखरी कला सम्पदा एवं देश के अन्य भागों से प्राप्त कलाकृतियों का संकलन, संरक्षण, अभिलेखीकरण, शोध एवं प्रदर्शन कर जनसमान्य को इसके गरिमामय इतिहास की जानकारी प्राप्त कराने के उद्देश्य से बौद्ध हेरिटेज सेन्टर, पिपरहवा, सिद्धार्थनगर के अर्न्तगत बौद्ध संग्रहालय एवं प्रशासनिक भवन कला वीथिका सहित अनेक परियोजनाओं का शिलान्यास वर्ष 1997 में मा0 मुख्यमंत्री जी, उ0प्र0 के कर कमलों द्वारा किया गया था। शासन द्वारा दिये गये निर्देशों के क्रम में संग्रहालय/प्रशासनिक भवन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, भारत सरकार को दिनांक 03 अक्टूबर, 2009 को हस्तान्तरित कर दिया गया है।

2- <u>संग्रहालय का उद्देश्य एवं गतिविधियां:-</u>

संग्रहालय का प्रमुख उद्देश्य पूर्वी क्षेत्र एवं देश के अन्य भागों से प्राप्त पुरासम्पदा का संकलन, अभिलेखीकरण, संरक्षण, प्रदर्शन, प्रकाशन तथा देश-विदेश के पर्यटकों को आकृष्ट कर उन्हें भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं की जानकारी उपलब्ध कराना है। भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति और पुरातत्व की जानकारी जन-सामान्य को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमों के अर्न्गत विविध प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का आयोजना भी किया जाता है।

3-प्रदर्शन व्यवस्था

वर्तमान में कला वीथिका भवन (दो हाल युक्त भवन) संस्कृति विभाग, उ0प्र0 के नियंत्रणाधीन है, जिसमें प्रदर्शन व्यवस्था निम्नवत् हैः-

1- **<u>भूतल स्थित कला वीथिका</u>**-इस वीथिका में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित कलाकृतियों की कुल 29 अनुकृतियॉ प्रदर्शित हैं।

2- **<u>प्रथम तल स्थित कला वीथिका-</u>** इस वीथिका में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित प्रसिद्ध स्थलों एवं कलाकृतियों के कुल 65 छायाचित्र प्रदर्शित हैं।

<u>शैक्षिक गतिविधियाँ (अप्रैल, 2018 से नवम्बर, 2018 तक)</u>

क्र0सं0	दिनांक	कार्यक्रम
1.	18 मई, 2018	संग्रहालय भ्रमण का आयोजन किया गया।
2	14 से 30 अगस्त, 2018	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
3	20-30 नवम्बर, 2018	विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर सिक्कों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
4	05-11 दिसम्बर, 2018 तक	कपिलवस्तु महोत्सव के अवसर पर भारतीय कला में बुद्ध विषय पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।

<u>संग्रहालय में निम्नलिखित पदों का सृजन किया गया हैः-</u>

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतनबैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल	पदों की संख्या
1	2	3	4	5	6
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	लेवल-8	1
2.	सहायक लेखाकार	5200-20200	2800	लेवल-5	1
3.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	1
4.	संग्रहालय परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	2
				योग	05

राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ

वर्ष 1995 में उ0प्र0 शासन द्वारा संग्रहालय निर्माण का निर्णय लिया गया, तत्क्रम में वर्ष 1997 में टास्कफोर्स द्वारा की गई संस्तुतियों के अनुरूप उ0प्र0 शासन के अधीन उ0प्र0 संग्रहालय निदेशालय द्वारा संचालित राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ की स्थापना हुई। जिसका औपचारिक लोकार्पण 10 मई, 2007 को हुआ।

क्षेत्रीय/विषयगत महत्व

जनपद मेरठ 28^0 47' तथा 29^0 18 उत्तरी अक्षांश एवं 77 7' तथा 78^0 7' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है । प्राचीन काल में मेरठ ऊपरी गंगा यमुना के दोआब क्षेत्र में कुरू प्रदेश के अन्तर्गत आता था । वर्तमान में जनपद मेरठ उत्तर प्रदेश के पश्चिमी छोर पर गंगा-हिण्डन नदियों के दोआब क्षेत्र में स्थित है। मेरठ देश की राजधानी दिल्ली से 65 किमी0 उत्तर-पूर्व तथा प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 461 किमी0 उत्तर पश्चिम में स्थित है। यहॉ रेल तथा बस द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है तथा यह उत्तर रेलवे के दिल्ली-मेरठ-सहारनपुर रेलवे मार्ग एवं उत्तर-पुर्वी रेलवे के लखनऊ -मुरादाबाद-मेरठ-सहारनपुर मुख्य रेलवे मार्गो के किनारे स्थित है।

मेरठ का शुद्ध नाम मयराष्ट्र है । इस विषय में दो जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं । पहली जनश्रुति के अनुसार मंदोदरी के पिता और रावण के श्वसुर मय नामक दानव ने इस नगरी को बसाया था । इसी कारण मेरठ को मयदन्त का खेड़ा कहा जाता है। मय का उल्लेख वाल्मिकी रामायण में आया है । दूसरी जनश्रुति के अनुसार महाभारत नामक महाकाव्य में वर्णित खाण्डवदाह के समय अर्जुन द्वारा अपनी रक्षा के प्रत्युपकार में दानवों के शिल्पी त्रिपुर रचयिता विश्वकर्मा मय ने कृतज्ञतावश श्रीकृष्ण के आदेश पर युधिष्ठर के लिए एक अद्वितीय सभागृह का निर्माण किया था । युधिष्ठर ने मय के शिल्प कौशल से प्रसन्न होकर दान में कुछ भूमि दी थी। कहा जाता है कि इसी भूमि पर मय ने मयराष्ट्र नामक नगर का निर्माण किया था।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मेरठ का विशिष्ट स्थान है, यहीं से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी फूटी। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी घटनाओं एवं संस्मरणों, जीवन गाथाओं को संरक्षित करना, भावी पीढ़ी को नवीन दिशा प्रदान करना तथा राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ का लक्ष्य है। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी घटनाएं कैसी थीं और किस तरह से लड़ी गयीं इसका उल्लेख लिखित रूप से तो किताबों एवं अभिलेखों में मिलता है लेकिन दृश्य रूपों में इसका अभाव है, खासकर 10 मई 1857 को मेरठ में घटित घटनाएं जो आम जनसामान्य की पहुँच से दूर रही हैं । इन तथ्यों को संग्रहालय में दिखाने का अनूठा प्रयास किया गया है।

वीथिकाएं

संग्रहालय में पाँच वीथिकाएं प्रदर्शित की गई हैं-

प्रथम वीथिका में पेटिंग, डायोरामा एवं रिलीफ के माध्यम से विशेष रूप से 10 मई, 1857 की घटनाओं का प्रदर्शन किया गया है जो देश के अमर शहीदों को समर्पित है। इसी तरह अन्य प्रमुख घटनाओं यथा- क्रान्ति के प्रस्फुटित होते ही 20वीं पैदल सेना के सैनिकों द्वारा कर्नल जॉन फिनिश जो क्रान्ति के दौरान मारे गये प्रथम अंग्रेज अधिकारी थे पर गोली चलाना, विक्टोरिया पार्क स्थित नई जेल तोड़कर कैद 85 सैनिकों को मुक्त कराना एवं लगभग दो हजार क्रान्तिकारियों का दिल्ली कूच करना इत्यादि घटनाओं का प्रदर्शन किया गया है ।

द्वितीय वीथिका में फाँसी का दृश्य, 14 से 20 सितम्बर 1857 को दिल्ली में विद्रोह, कानपुर में सतीचौरा घाट का विद्रोह, लखनऊ की रेजीडेन्सी एवं रानी लक्ष्मीबाई की अंग्रेजों से लड़ाई को रिलीफ एवं पेटिंग के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है । तत्क्रम में तात्या टोपे तथा कुवँर सिंह की क्रान्तिकारी गाथा का भी अवलोकन किया जा सकता है । देश विभाजन से पूर्व 1857 की क्रान्ति में पेशावर के आन्दोलन का योगदान इत्यादि को भी प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया है ।

संग्रहालय के दो अन्य वीथिकाओं में देश के अन्य भागों में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी प्रमुख घटनाओं को चित्रों एवं महत्वपूर्ण दुर्लभ अभिलेखों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है ।

तृतीय वीथिका- ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आगमन से लेकर दिल्ली के लाल किले के इतिहास को प्रदर्शित किया गया है तथा साथ ही साथ आई.एन.ए. के दुर्लभ छाया चित्र एवं देश के अमर स्वतंत्रता सेनानियों पर भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी भारतीय डाक टिकटों को भी आम जनसामान्य के अवलोकनार्थ प्रदर्शित किया गया है ।

चतुर्थ वीथिका- में भी स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी देश विभिन्न भागों में घटित घटनाओं एवं आन्दोलनों को प्रदर्शित किया गया है । जिसमें रानी झाँसी के जीवन एवं संघर्ष, मंगल पाण्डे, उधम सिंह, महात्मा गाँधी, राजाराम मोहन राय, सिस्टर निवेदिता इत्यादि प्रमुख क्रान्तिकारियों एवं देश के अग्रणी महापुरूषों के जीवन तथा चरित्र के विषय में बताया गया है । इसी वीथिका में आई.एन.ए. के सिपाही की वर्दियाँ, भारत सरकार द्वारा जारी स्मारक सिक्के, चरखा एवं स्वतंत्रता सेनानियों के ताम्र पत्रों को प्रदर्शित किया गया है ।

पंचम वीथिका- में पुरातात्विक पुरासामग्रियों का प्रदर्शन किया गया है । चूँकि पश्चिमी उ0 प्र0 पुरातात्विक सम्पदा से भी बहुत समृद्ध क्षेत्र रहा है । इस क्षेत्र की पुरातात्विक महत्ता को दृश्टिगत रखते हुए एक पुरातात्विक वीथिका का भी गठन किया है । जिसमें इस क्षेत्र के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों के सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त पुरासामग्रियों/कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है । जिसमें वर्ष 2007 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार के निर्देशन में उत्खनित स्थल सिनौली, बागपत से प्राप्त अवशेष, हस्तिनापुर से सर्वेक्षण में प्राप्त कलाकृतियाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र रहती हैं । इसी तरह से काकोर, कुरडीह, काठा, इसोपुरटील इत्यादि पुरास्थलों से प्राप्त कलाकृतियों भेंट स्वरूप प्राप्त प्राचीन सिक्के, मनके, प्रस्तर एवं मृण्मूर्तियां इत्यादि को भी वीथिका में प्रदर्शित किया गया हैं ।

संग्रहालय का सुदृढ़ीकरण एवं विकास : संग्रहालय के विकास एवं सुदृढ़ीकरण किये जाने की विशेष आवश्यकता है । इस संग्रहालय के विकास के लिए यह विशेष रूप से आवश्यकता होगी कि इसमें वीथिकाओं का निर्माण किया जाय और इसके प्रदर्शन को अत्याधुनिक प्रणाली से समृद्ध करते हुए इसका विस्तार किया जाय । संग्रहालय में विस्तार किया जाता है तो इसके संचालन हेतु भी संसाधनों की आवश्यकता होगी जैसे कर्मचारियों की नियुक्ति, सुरक्षा व्यवस्था हेतु सिक्योरिटी गार्ड, पुस्तकालय के लिये लाईब्रेरियन इस की पूर्ति हेतु **कोर मनी** का प्राविधान किया जाना आवश्यक होगा, जिससे इनके पारिश्रमिक इत्यादि का भुगतान उपलब्ध कोर मनी की धनराशि से किया जा सके ।

संग्रहालय में निम्नलिखित पदों का सृजन किया गया है :-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतनबैण्ड/ वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल	पदों की संख्या
1	2	3	4	**6**	5
1	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	लेवल-8	1
2	लेखाकार	9300-34800	4200	लेवल-6	1
3	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	1
4	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	2
योग :					5

शैक्षिक गतिविधियाँ (अप्रैल, 2018 से नवम्बर, 2018 तक)

क्र0सं0	दिनांक	कार्यक्रम
1.	18 अप्रैल, 2018	विश्व विरासत दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।
2	10 मई, 2018	संग्रहालय स्थापना दिवस एवं क्रांन्ति दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
3	18 मई, 2018	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी का आयोजन।
4	23 जुलाई, 2018	चन्द्रशेखर आजाद के जन्म दिवस के अवसर पर अस्थायी छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन।
5	15 अगस्त, 2018	स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारतीय भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के अवसर पर छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन।
6	25 सितम्बर, 2018	पण्डित दीन दयाल उपाध्याय के जन्म दिवस पर ख्याख्यानमाला का आयोजन।
7	27 सितम्बर, 2018	विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर अस्थायी छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन।
8	02 अक्टूबर, 2018	महात्मा गॉधी के जन्म दिवस के अवसर पर अस्थायी छायाचित्र प्रदर्शनी एवं व्याख्यानमाला का आयोजन।
9	14 नवम्बर, 2018	बाल दिवस के अवसर पर अस्थायी छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर संग्रहालय एवं पुस्तकालय, रामपुर

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर संग्रहालय एवं पुस्तकालय, रामपुर का निर्माण वर्ष 1997 में प्रारम्भ किया गया तथा 30 नवम्बर 1999 में इसका निर्माण कार्य पूर्ण हुआ । इसके उपरान्त 12 अगस्त, 2000 को उ0प्र0 शासन के संस्कृति विभाग ने इसे अपने अधिकार में ले लिया और 21 अगस्त 2004 को इसका औपचारिक लोकार्पण किया गया।

जनपद रामपुर 28^0 48' उत्तरी अक्षांश एवं 79^0 05' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जनपद रामपुर प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक महत्ता को बनाये हुए है। कथानकों के अनुसार रामपुर का नाम कटहेर के राजा रामसिंह (कटहेरिया राजपूत) के नाम पर लगभग 10वीं शती ई0 में पड़ा । इस जनपद की स्थापना सन् 1775 ई0 में फैजुल्लाह खान ने किया था । इसका प्ररम्भिक नाम फैजाबाद रखा गया । इसके बाद यह तथ्य सामने आया कि इस नाम से पहले ही अनेक शहरों का नाम रखा गया है तो इसके दूसरे नाम पर विचार किया जाने लगा और इसका नाम बदलकर मुस्तफाबाद इलियास रामपुर किया गया । कालान्तर में इसका नाम रामपुर पड़ गया ।

इस जनपद को 1 दिसम्बर 1949 को उ0 प्र0 राज्य में सम्मिलित करते हुए जिले का दर्जा दिया गया । इस क्षेत्र को मध्य-पूर्व रूहेलखण्ड के नाम से भी जाना जाता था । प्राचीन काल में इस क्षेत्र को पांचाल अथवा उत्तरी पांचाल के नाम से भी जाना जाता था । यह उत्तर में जनपद नैनीताल (उत्तराखण्ड), दक्षिण में जनपद बदायूँ, पश्चिम में जनपद मुरादाबाद तथा पूर्व में बरेली जनपद की सीमाओं से घिरा हुआ है । रामपुर देश की राजधानी दिल्ली से 196 किमी0 उत्तर-पचिश्म तथा प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 314 किमी0 दक्षिण-पश्चिम में स्थित है, यहाँ रेल तथा बस द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है तथा यह उत्तर-पूर्वी रेलवे के लखनऊ-रामपुर-मुरादाबाद-दिल्ली मुख्य रेलवे मार्गों के किनारे स्थित है। यहाँ से लगभग 100 किमी0 की दूरी पर प्राचीन नगर अहिच्छत्र भी अवस्थित है जिसका सम्बन्ध महाभारत काल से जोड़ा जाता है । इसी जनपद में ऐतिहासिक दस्तावेजों को सहेजे रजा लाइब्रेरी भी स्थित है ।

संग्रहालय में कुल दो वीथिकाएं हैं-

<u>प्रथम वीथिका-</u> में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जीवन चरित्र को छाया चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया है । जिसमें इनके जीवन काल की विभिन्न महत्वपूर्ण घटनाओं एवं सामाजिक उत्थान के लिये किये गये कार्यो को प्रमुखता के साथ दिखाया गया है ।

<u>द्वितीय वीथिका</u>- में इस क्षेत्र की पुरातात्विक महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए पुरातात्विक वीथिका का प्रदर्शन किया गया है । जिसमें उ0 प्र0 के अनेक संग्रहालयों में संग्रहीत प्रस्तर मूर्तियों की अनुकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। इन अनुकृतियों में विशेषकर बौद्ध धर्म से सम्बन्धित हैं यथा कटरा बुद्ध, गान्धार कला के अन्तर्गत जातक कथाओं से अंकित पैनल, तथा बोधिसत्व पद्मपाणि एवं बौद्ध देवी तारा की अनुकृतियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं।

संग्रहालय में एक संदर्भ ग्रन्थालय भी स्थापित है जिसमें डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जीवन पर आधारित अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं । इसके साथ ही साथ भारतीय इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति से सम्बन्धित पुस्तकें भी संग्रहालय के पुस्तकालय में छात्र/छात्राओं एवं शोधार्थियों के अध्ययन हेतु उपलब्ध हैं। जिससे सम्पर्क कर अनेंक विद्वत जन तथा शोधार्थी लाभान्वित होते हैं ।

संग्रहालय का सुदृढ़ीकरण एवं विकास : इस संग्रहालय के विकास के लिए यह विशेष रूप से आवश्यक है कि इसमें वीथिकाओं का निर्माण किया जाय और इसके प्रदर्शन को अत्याधुनिक प्रणाली से समृद्ध करते हुए इसका विस्तार किया जाय ।

<u>शैक्षिक गतिविधियाँ (अप्रैल, 2018 से नवम्बर, 2018 तक)</u>

क्र0सं0	दिनांक	कार्यक्रम
1.	14 अप्रैल, 2018	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जन्म दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।
2	21 अगस्त, 2018	संग्रहालय स्थापना दिवस के अवसर पर चित्र कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
3	31 अक्टूबर, 2018	सरदार बल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस/राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर व्याख्यान/अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।

संग्रहालय में निम्नलिखित पदों का सृजन किया गया है :-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतनबैण्ड/ वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	**पुनरीक्षित वेतन मैट्रिक्स में लेवल**	पदों की संख्या
1	2	3	4	**5**	6
1	सहायक लेखाकार	5200-20200	2800	लेवल-5	1
2	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	लेवल-4	1
3	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	लेवल-1	2
योग :					4

उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय, लखनऊ

सांस्कृतिक कैलेण्डर वित्तीय वर्ष 2019-20 में प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरण

क्र. सं.	संग्रहालय का नाम	दिनांक	कार्यक्रमों का विवरण
1	2	3	4
1.	राज्य संग्रहालय, लखनऊ	18 अप्रैल 2019	विश्व धरोहर दिवस पर छायाचित्र प्रदर्शनी।
		17 मई,2019	विश्व संग्रहालय दिवस 18 मई की पूर्व संध्या के अवसर पर छात्र/छात्राओं की प्रश्नोत्तरी/चित्रकला प्रतियोगिता।
		जुलाई, 2019	अनुभागीय प्रदर्शनी का आयोजन।
		अगस्त, 2019	मूक बधिर बच्चों की क्ले मांडलिंग कार्यशाला।
		सितम्बर, 2019 से अक्टूबर, 2019	पुरातत्व एवं कला अभिरूचि पाठ्यक्रम।
		18.नवम्बर,2019 से 25नवम्बर,2019 तक	विश्व धरोहर सप्ताह पर छात्रों का संग्रहालय भ्रमण।
		जनवरी, 2020	अधिकारियों/तकनीकी कर्मचारियों तथा विश्वविद्यालय के छात्रों हेतु कार्यशाला।
		फरवरी, 2020	डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल स्मृति व्याख्यानमाला।
2.	राजकीय संग्रहालय, मथुरा	18-04-2019	विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी
		18-05-2019	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी
		28-07-2019	बाल फिल्म प्रदर्शन
		28-08-2019	प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति पर व्याख्यान
		27-09-2019	छायाचित्र प्रदर्शनी
		27-10-2019	मूक-बधिर बच्चों की क्ले मॉडलिंग कार्यशाला एवं प्रतियोगिता
		22-11-2019	बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता
		07-12-2019	राजकीय संग्रहालय, मथुरा का 146 वॉ स्थापना दिवस समारोह
		25-01-2020	बाल फिल्म प्रदर्शन
		28-02-2020	बच्चों की निबन्ध प्रतियोगिता
3.	राजकीय संग्रहालय, झांसी	04.04.2019	हिन्दी रंगमंच दिवस के अवसर पर नाट्य प्रस्तुति
		03.05.2019	कला शिविर एवं प्रदर्शनी।
		15.06.2019	पेंटिंग कार्यशाला।
		09-072019	फिल्म प्रदर्शनी।
		14.08.2019	स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर फिल्म प्रदर्शनी।
		14.09.2019	हिन्दी दिवस पर केन्द्रित कार्यक्रम।
		08.10.2019	कला एवं शिल्प पर प्रदर्शनी।

		18.11.2019	विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत ऐतिहासिक स्थलों पर केन्द्रित प्रदर्शनी।
		28.12.2019	फिल्म समारोह।
		09.01.2020	पद्मभूषण वृन्दावन लाल वर्मा स्मृति समारोह।
		02.02.2020	क्ले कार्यशाला
		18.03.2020	फिल्म प्रदर्शन।
4.	अन्तर्राष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय, अयोध्या।	अप्रैल, 2019	व्याख्यान का आयोजन।
		मई, 2019	विश्व संग्रहालय दिवस पर व्याख्यान।
		जून, 2019	ग्रीष्मावकाश में विद्यार्थियों के लिए 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला।
		जुलाई, 2019	दिव्यांगों के लिए कला अभिरूचि कार्यक्रम।
		अगस्त, 2019	जूनियर वर्ग की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन।
		सितम्बर, 2019	सीनियर वर्ग की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन।
		अक्टूबर, 2019	मूक बधिर बच्चों द्वारा निर्मित चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन।
		नवम्बर, 2019	व्याख्यान का आयोजन।
		दिसम्बर, 2019	लेखन प्रतियोगिता का आयोजन।
		जनवरी, 2020	संग्रहालय स्थापना दिवस पर व्याख्यान।
		फरवरी, 2020	चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन।
		मार्च, 2020	रामकथा पर चित्रित प्रदर्शनी बच्चों द्वारा निर्मित।
5.	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर।	14.04.2019	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती के अवसर पर संगोष्ठी एवं उनके जीवन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		18 से 30.4.2019	विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर प्राचीन स्मारकों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		04.05.2019	संग्रहालय स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर विविध शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।
		18 से 31.5.2019	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर विश्व के प्रसिद्ध संग्रहालयों की छायाचित्र प्रदर्शनी।
		18.06.2019	रानी लक्ष्मी बाई के निर्वाण दिवस पर शैक्षिक फिल्म शो।
		27.07.2019	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता।
		14.08.2019	स्वतंत्रता आन्दोलन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		20.09.2019	चित्रकला प्रतियोगिता।
		26.10.2019	शैक्षिक फिल्म शो।
		19 से 25.11.2019	विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत क्ले माडलिंग वर्कशाप एवं प्रतियोगिता, वीथिका व्याख्यान तथा बौद्ध कला पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		15.12.2019	सरदार पटेल के निर्वाण दिवस के अवसर पर उनके जीवन व दर्शन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		19.01.2020	सिक्कों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		12.02.2020	मूक बधिर बच्चों के मध्य चित्रकला प्रतियोगिता।
		11.03.2020	शैक्षिक फिल्म शो।
		14 अप्रैल, 2019	भारत रत्न बाबा सहाब डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर के जन्म दिवस तथा संग्रहालय के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में छायाचित्र प्रदर्शनी।
		17 मई, 2019 से 31 मई, 2019 तक	बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		20 से 31 जुलाई,	सिक्को पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।

6.	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर।	2019	
		14 से 31 अगस्त, 2019	स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		01 से 31 अक्टूबर, 2019	गांधी जयन्ती की पूर्व संख्या पर गांधी जी के जीवन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		19 से 25 नवम्बर, 2019	विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर स्मारकों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		10 से 31 जनवरी, 2020	बौद्ध कला पर छायाचित्र प्रदर्शनी।
		14 फरवरी, 2020	चित्रकला प्रतियोगिता।
7.	लोक कला संग्रहालय, लखनऊ	अप्रैल, 2019	महिलाओं की लोक गायन प्रतियोगिता।
		मई व जून,2019	ग्रीष्म कालीन कार्यशालायें।
		जुलाई, 2019	कार्यशाला में निर्मित कलाकृतियों की प्रदर्शनी।
		अगस्त, 2019	मेंहदी प्रतियोगिता।
		सितम्बर, 2019	लोक कला विषयक व्याख्यान।
		अक्टूबर, 2019	लोक चित्रों की प्रदर्शनी।
		नवम्बर, 2019	मूक बधिर बच्चों की रंगोली प्रतियोगिता।
		दिसम्बर, 2019	लोक कला विशयक संगोष्ठी।
		जनवरी, 2020	बच्चों की पोस्टर प्रतियोगिता।
		फरवरी, 2020	अल्पना कार्यशाला।
		मार्च, 2020	लोक कला विषयक व्याख्यान।
8.	जनपदीय संग्रहालय, सुल्तानपुर	18 मई, 2019	निबन्धन प्रतियोगिता।
		14 जून, 2019	संगीत प्रतियोगिता।
		19 जुलाई, 2019	रंगोली प्रतियोगिता।
		09 अगस्त, 2019	क्राफ्ट प्रतियोगिता।
		14 सितम्बर, 2019	वाद-विवाद प्रतियोगिता।
		24 अक्टूबर, 2019	दीप (दिया) सजावट प्रतियोगिता।
		21 नवम्बर, 2019	चित्रकला प्रतियोगिता।
		19 दिसम्बर, 2019	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता।
		22 फरवरी, 2020	छायाचित्र प्रदर्शनी।
9.	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, पिपरहवां (सिद्धार्थनगर)	18 मई, 2019	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर संग्रहालय भ्रमण का आयोजन।
		14-31 अगस्त, 2019	स्वतंत्रता संग्राम पर स्वतंत्रता आन्दोलन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
		19 से 25 नवम्बर, 2019	विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर प्राचीन स्मारकों पर विषय आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन।
		05 से 11 दिसम्बर 2019	कपिवस्तु महोत्सव के अवसर पर भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन।
		18 फरवरी, 2020	चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन।
10	राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, कन्नौज	14.04.2019	विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर छायाचित्र प्रदर्शनी।
		18.05.2019	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर छाया चत्र प्रदर्शनी का आयोजन।
		14.08.2019	स्कूली छात्र-छात्राओं का संग्रहालय भ्रमण।
		02.10.2019	गांधी जयन्ती का आयोजन एवं प्रतियोगिता।
		14.11.2019	बाल दिवस पर स्कूली छात्र-छात्राओं का संग्रहालय भ्रमण एवं प्रतियोगिता।
		26.01.2020	अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।

11.	राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ	10.05.2019	क्रांन्ति दिवस एवं संग्रहालय स्थापना दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।
		14.08.2019	स्वतंत्रता दिवस के पूर्व संख्या पर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के अवसर पर प्रदर्शनी का आयोजन।
		02.10.2019	महात्मा गॉधी के जन्म दिवस के अवसर पर व्याख्यान का आयोजन।
		19–25 नवम्बर, 2019	विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर प्राचीन स्मारकों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन।
		25.01.2020	गणतन्त्र दिवस के पूर्व संख्या पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।
12.	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर संग्रहालय एवं पुस्तकालय, रामपुर	14.04.2019	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जन्म दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।
		18.05.2019	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।
		21.08.2019	संग्रहालय स्थापना दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।
		06.12.2019	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के निर्वाण दिवस के अवसर पर अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।
		05 .02.2020	अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।